पाठ-6 : हिंदी साहित्य का परिचय एवं वीरगाथा काल (द्वितीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0 हिंदी साहित्य का परिचय 6

1.1 हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन एवं नामकरण 6

1.2 वीरगाथा काल 7

1.2.1 भक्ति काल 8

- निर्गुण भक्ति धारा 8
- सगुण भक्ति धारा 9
- राम-भक्ति शाखा 9
- कृष्ण-भक्ति शाखा 10

1.2.2 रीति काल 10

1.2.3 आधुनिक काल 11

- भारतेंदु युग 12
- द्विवेदी युग 12
- छायावाद युग और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा 13
- छायावादोत्तर युग 14

(क) प्रगतिवाद 14

(ख) प्रयोगवाद 14

(ग) नई कविता 14

1.3 वीरगाथा काल 15

1.3.1 वीरगाथा काल के प्रमुख कवि 16

- चंदबरदाई 16
- दलपत विजय 17
- नरपति नाल्ह 17
- अमीर खुसरो 17
- विद्यापति 18

2A-2/CHD/ND/17

1.0 हिंदी साहित्य का परिचय

हिंदी साहित्य का इतिहास लगभग 1000 वर्ष पुराना है। जब से हिंदी में रचना आरंभ हुई तभी से हिंदी साहित्य के इतिहास का प्रारंभ माना जाता है। सामान्यत: इतिहास समाज के राजनैतिक आर्थिक विकास क्रम को दर्शाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'जब कि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृति का संचित प्रतिबिंब होता है तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही 'साहित्य का इतिहास' कहलाता है।

1.1 हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन एवं नामकरण

हिंदी साहित्य के विकास को निम्नलिखित चार चरणों में बाँटा जा सकता है :–

भाषा निरंतर प्रवाहमान है। (भाषा बहता नीर।) इसलिए हिंदी साहित्य के काल-विभाजन का कार्य अत्यंत कठिन है। विभाजन तो उसी का हो सकता है जिसके मध्य में कोई रेखा खींची जा सके। हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ आपस में इतनी घुली-मिली हैं कि उनके बीच कोई विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती फिर भी विद्वानों ने हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियों के आधार पर हिंदी साहित्य का काल-विभाजन किया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार "जिस कालखंड के भीतर किसी विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखाई पड़ी है वह एक अलग काल माना गया है और उसका नामकरण रचनाओं के स्वरूप के अनुसार किया गया है।"

हिंदी साहित्य के इतिहास को निम्नलिखित चार चरणों में बाँटा गया है :–

1.	वीरगाथा काल (इसे आदि काल के नाम से भी जाना जाता है)	विक्रम संवत्	1050-1375
		सन्	993-1318
2.	भक्ति काल	विक्रम संवत्	1375-1700
		सन्	1318-1643
3.	रीति काल	विक्रम संवत्	1700-1900
		सन्	1643-1843
4.	आधुनिक काल	विक्रम संवत	1900 से आज तक
		सन्	1843 से आज तक

उपर्युक्त काल-विभाजन में यह ध्यान रखने योग्य है कि यह विभाजन आदि और अंत की दो तिथियों की सीमा में बंधा नहीं है। इन तिथियों को केवल विभिन्न युगों का सूचक समझना चाहिए। प्रत्येक काल में इस काल की मुख्य प्रवृत्तियों के अतिरिक्त कुछ गौण प्रवृत्तियाँ भी सम्मिलित होती हैं और जिस काल में कुछ विशेष प्रकार की रचनाएँ अधिक होती हैं, उस काल का नामकरण उन रचनाओं के आधार पर किया गया है, जैसे–वीरगाथा काल, भक्ति काल, रीति काल आदि। कहीं-कहीं किसी युग का नामकरण प्रमुख साहित्यकारों के नाम पर भी किया गया है, जैसे–भारतेंदु युग, द्विवेदी युग आदि। हिंदी साहित्य के प्रमुख कालों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है।

1.2 वीरगाथा काल

इस काल में विभिन्न राजाओं के आश्रय में रहने वाले कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की वीरता के वर्णन के लिए उनकी प्रशंसा में कविताएँ लिखी हैं, इसलिए इस काल को वीरगाथा काल कहा गया। यह देश में राजनीतिक उथल-पुथल का काल था। चारों ओर अशांति का वातावरण था। सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् राज्यों में विघटन की स्थिति थी। छोटे-छोटे रजवाड़ों के अधिपति (तोमर, राठौर, चौहान, सोलंकी, चंदेल आदि) राजपूत आपस में लड़कर देश की शक्ति को क्षीण कर रहे थे। सामान्यत: विदेशी हमलों के समय ये एक-दूसरे की सहायता नहीं करते थे। कभी-कभी अपने ही देश के शत्रु राजाओं के विरुद्ध विदेशी आक्रांताओं से मिल भी जाते थे। इसी आपसी फूट का लाभ उठाकर मुसलमानों ने देश पर आक्रमण करके देश के उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया।

इस काल के राजाश्रय में पलने वाले कवि अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में कविता लिखते थे और युद्ध में राजाओं को जोश दिलाने के लिए उन्हें सुनाते थे। कुछ आश्रित कवि तो आवश्यकता पड़ने पर राजाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध में भाग भी लेते थे।

इस काल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–

(i) इस काल में अपभ्रंश से हिंदी के आरंभिक भाषा रूप का जन्म हुआ।

(ii) इस काल में काव्य के क्षेत्र में वीर रस की प्रधानता रही। इस काल के कवियों ने अपनी रचनाओं में अपने आश्रयदाता राजाओं की वीरता की बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा की।

(iii) इस काल में वर्णनात्मक काव्यों का ही अधिक सृजन हुआ।

(iv) इस काल की रचनाओं पर स्वदेश का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

(v) अधिकांश राजा राजस्थान के राजपूत थे, इसलिए काव्यों में राजस्थान के 'डिंगल' भाषा रूप का प्रयोग हुआ है।

इस काल का काव्य वीर रस प्रधान है। इसमें रासो की प्रधानता है। इनमें सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ चंदबरदाई का 'पृथ्वीराज रासो' है। यह दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान के जीवन से संबंधित है। चंदबरदाई पृथ्वीराज चौहान के राजकवि थे। इसमें कवि ने शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान के युद्ध का सजीव वर्णन किया था। इसमें वीर रस के साथ श्रृंगार रस का हृदयस्पर्शी वर्णन है। 'पृथ्वीराज रासो' को डिंगल साहित्य का प्रथम प्रबंधकाव्य और चंदबरदाई को प्रथम महाकवि माना जाता है।

इस काल के प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं :–

चंदबरदाई	-	पृथ्वीराज रासो
नरपति नाल्ह	-	बीसलदेव रासो
जगनिक	-	परमाल रासो
दलपत विजय	-	खुमान रासो
भट्ट केदार	-	जयचंद प्रकाश
विद्यापति	-	कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पदावली आदि

इसके अतिरिक्त इस काल में गोरखनाथ की बानियाँ, चौरासी सिद्धों के दोहे और गीत, अमीर खुसरो की पहेलियाँ और भाँति-भाँति के जैन चरित काव्य मिलते हैं।

1.2.1 भक्ति काल

वीरगाथा काल के समाप्त होने से पहले ही साहित्य के क्षेत्र में बदलाव आने लगा था। दिल्ली सहित देश के बड़े भाग पर मुसलमानों का आधिपत्य हो गया था। हिंदुओं के हृदय में भय और आतंक व्याप्त था। उनके पास अपने धर्म की रक्षा की शक्ति नहीं बची थी। उनका धर्म, संस्कृति, आत्मविश्वास सभी कुछ खतरे में था।

ऐसी ही निराशाजनक स्थिति में भक्ति का उदय हुआ। इसी समय दक्षिण में उत्पन्न भक्ति आंदोलन का प्रचार रामानंद ने उत्तर में किया।

इसका परिणाम यह हुआ कि एक ओर तो संत कवियों ने हिंदू और मुसलमानों में समान रूप से स्वीकार्य निर्गुण (निराकार) ईश्वर की भक्ति में काव्य लिखा तो दूसरी ओर राम और कृष्ण की भक्ति पर आधारित सगुण काव्य की रचना आरंभ हुई।

यहाँ भगवान के निर्गुण और सगुण रूप के अंतर को समझना आवश्यक है। निर्गुण भक्ति में भगवान का कोई रूप या आकार नहीं होता। निर्गुण भक्त निराकार भगवान से या तो प्रेम करता है या प्रेम की अपेक्षा ज्ञान प्राप्त करने पर अधिक बल देता है। इसी कारण भक्ति काल में निर्गुण भक्ति की प्रेममार्गी और ज्ञानमार्गी दो प्रकार की धाराएँ प्रवाहित होती दिखाई देती हैं।

दूसरी ओर सगुण भक्ति में भक्त भगवान को रूप और आकार वाला मानता है। वह इस साकार भगवान से प्रेम करता है। उसका यह प्रेम अत्यंत स्वाभाविक है। वह उसका प्रेम पाने के लिए उसकी पूजा करता है। इस सगुण भगवान के भी दो रूप हैं। ये दो रूप विष्णु के अवतार राम और कृष्ण हैं। इस प्रकार सगुण भक्ति की दो शाखाएँ हो गईं–एक राम भक्ति शाखा और दूसरी कृष्ण भक्ति शाखा।

निर्गुण भक्ति धारा

निर्गुण भक्ति के आरंभ होने का कारण यह था कि लोग कर्मकांड, अंधविश्वास और कुरीतियों में फँसे हुए थे। हिंदू और मुसलमान, धर्म के नाम पर आपस में लड़ते थे। ऐसे समय में कबीर, नानक आदि संतों ने उन्हें समझाया कि हिंदुओं का राम और मुसलमानों का रहीम उसी भगवान के नाम हैं। उन्होंने दोनों धर्मों के आडंबरों एवं कट्टरपंथ पर कठोर प्रहार किया और मनुष्य मात्र को मानवता का संदेश दिया। रामानंद के प्रभाव के कारण उन संतों का ब्रह्म और माया में विश्वास था। ईश्वर को पाने के लिए इन्होंने मन को शुद्ध करने और आचरण को सुधारने पर जोर दिया। इस धारा में जहाँ कबीर ने गुरु और ज्ञान को आवश्यक माना वहीं मलिक मुहम्मद जायसी ने प्रेम को प्रधानता दी। इस प्रकार निर्गुण भक्ति के ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी शाखाओं के रूप में दो भेद हुए। इन्हें क्रमशः संतकाव्य और सूफीकाव्य भी कहा जाता है।

इन दोनों शाखाओं के प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं :–

ज्ञानमार्गी		प्रेममार्गी	
कवि	कृतियाँ	कवि	कृतियाँ
कबीरदास	बीजक (साखी, सबद, रमैनी)	जायसी	पद्मावत
गुरुनानक	गुरु ग्रंथ साहिब, जपुजी, असा दी वार आदि	मंझन	मधुमालती
रैदास	रैदासबानी	मुल्लादाउद	चंदायन
मलूकदास	ज्ञानबोध	कुतुबन	मृगावती
दादूदयाल	फुटकर पद	नूरमोहम्मद	अनुराग बाँसुरी
		उस्मान	चित्रावली

इनमें कबीर के पदों की भाषा सधुक्कड़ी (खिचड़ी) भाषा थी जब कि जायसी ने अवधी में काव्य रचना की।

सगुण भक्ति धारा

भगवान के साकार रूप की उपासना करने वाले सगुण भक्त कवि मानते हैं कि भगवान पापियों का नाश करने के लिए जन्म या अवतार लेते हैं और भक्तों का कल्याण करते हैं। सगुण भक्तों के अनुसार जीवन ईश्वर का अंश है। ईश्वर सर्वज्ञ है किंतु जीव अल्पज्ञ है। भगवान हमेशा आनंद में निमग्न (डूबा) रहता है। वह दयालु है और भक्तों पर दया करने के लिए अवतार लेता है। निर्गुण भक्त संसार को अवास्तविक या मिथ्या (भ्रम) मानते हैं जब कि सगुण भक्तों का कहना है कि जिस संसार में भगवान जन्म लेते हैं, वह अवास्तविक या मिथ्या कैसे हो सकता है। यह संसार भगवान की लीला स्थली है।

सगुण भक्ति की दो धाराएँ हैं - 1. राम-भक्ति शाखा 2. कृष्ण-भक्ति शाखा

राम-भक्ति शाखा

राम-भक्ति धारा का प्रवर्तन रामानुजाचार्य के शिष्य रामानंद ने किया। इन्होंने राम के लोक-कल्याणकारी रूप की उपासना की। राम-कथा को आधार मानकर जो काव्य लिखा गया, उसे रामकाव्य कहा गया। इसके प्रमुख कवि और उनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं :–

गोस्वामी तुलसीदास - रामचरितमानस (अवधी), विनय पत्रिका (ब्रजभाषा)

स्वामी अग्रदास - ध्यान मंजरी, रामध्यान मंजरी

केशवदास - रामचंद्रिका (ब्रजभाषा)

नाभादास - भक्तमाल

हृदयराम - हनुमन्नाटक

प्राणचंद चौहान - रामायण महा नाटक

कृष्ण-भक्ति शाखा

कृष्ण-भक्ति धारा का प्रवर्तन वल्लभाचार्य ने किया था। इन्होंने कृष्णपूजा का जो रूप निर्धारित किया वह बहुत ही आकर्षक था। राम-भक्ति धारा और कृष्ण-भक्ति धारा में एक बड़ा अंतर यह था कि राम-भक्त स्वयं को राम का सेवक या दास समझते थे जब कि कृष्ण-भक्त स्वयं को कृष्ण का सखा मानते थे। कृष्ण-भक्त कवि, भक्त और भगवान के बीच प्रेमी-प्रेमिका का संबंध मानते थे। इसलिए उनके अनुसार भक्त को भगवान के समक्ष आत्म-समर्पण करना चाहिए तब भगवान स्वयं भक्त की चिंता करते हैं।

इस काव्यधारा के प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं :–

सूरदास	-	सूरसागर, सूरसारावली, साहित्यलहरी
नंददास	-	रास पंचाध्यायी, भ्रमरगीत, अनेकार्थमंजरी
कृष्णदास	-	भ्रमरगीत, प्रेमतत्व निरूपण
परमानंद	-	परमानंदसागर
कुंभनदास	-	फुटकर पद
चतुर्भुजदास	-	द्वादश यश, भक्ति प्रताप, हितज् को मंगल
छीतस्वामी	-	फुटकर पद
गोविंदस्वामी	-	फुटकर पद
मीराबाई	-	रागसोरठ पद संग्रह, नरसी जी का मायरा, रागगोविंद
रसखान	-	प्रेमवाटिका, सुजान रसखान।

अधिकांश कृष्ण काव्य ब्रजभाषा में लिखा गया है। इन्हें मुक्तक काव्य कहा जा सकता है। सूरदास, नंददास, कृष्णदास, परमानंददास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी अष्टछाप के कवि हैं।

1.2.2 रीति काल

संवत् 1700 के आसपास पुन: हिंदी साहित्य में एक मोड़ आता है। रीति काल के कवियों से पहले भक्ति काल का समृद्ध साहित्य था। भक्ति साहित्य में कलात्मक सौंदर्य के बजाय जन कल्याण की भावना अधिक थी। निराश और डरी हुई जनता के हृदय में उनकी रचनाओं ने आशा और विश्वास पैदा किया। भक्ति काल के राधा और कृष्ण रीति काल में नायिका और नायक में बदल गए। संस्कृत साहित्य के प्रभाव से इस युग के कवियों ने रीति, रस, नायिका भेद को अपने काव्य का विषय बनाया। भक्ति काल में अलंकार गौण थे, रीति काल में उनकी प्रधानता हो गई । काव्य मानसिक विलास का साधन बन गया। प्रभु के प्रति प्रेम और भक्ति की प्रवृत्ति श्रृंगारिकता में बदल गई। इस काल में रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य की रचना की गई। रीतिबद्ध का आशय काव्यशास्त्र का अनुसरण था जब कि रीतिमुक्त का आशय स्वच्छंद काव्य प्रवृत्ति है।

इस काल में कवियों ने अपने आश्रयदाताओं को रिझाने के लिए मुक्तकों की रचना की, इसलिए प्रबंध काव्य का लगभग अभाव रहा। राजाश्रय में दरबारी जीवन श्रृंगारमय हो गया था। सुरा-सुंदरी का

प्रभाव बढ़ गया था। नारी विलास का साधन समझी जाने लगी और काव्य का विषय नारी सौंदर्य तक सीमित रह गया था। रीति काल के कवियों की काव्यभाषा ब्रज थी। इस काल में अवधी का भी प्रयोग हुआ। इस काल के मुख्य कवि और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

बिहारी	-	बिहारी सतसई
चिंतामणि त्रिपाठी	-	कविकुल कल्पतरु, काव्य विवेक, छंदविचार, काव्य प्रकाश
मतिराम	-	मतिराम सतसई, रसराज, ललित ललाम, छंदसार
भूषण	-	शिवराज भूषण, शिवाबावनी, छत्रसाल दसक
देव	-	अष्टयाम, रसलिवास, प्रेमचंद्रिका, नखशिख, भावविलास
पद्माकर	-	गंगालहरी, जगत विनोद, पद्माभरण
रसलीन	-	रसप्रबोध, अंग दर्पण
घनानंद	-	सुजान सागर, बिरहलीला

1.2.3 आधुनिक काल

हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल का विशेष महत्व है। इसका आरंभ संवत् 1900 से माना जाता है। इस काल में हिंदी साहित्य की सभी विधाओं का विकास हुआ। इस काल के साहित्य पर देश की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा। देश पर अंग्रेजों का आधिपत्य स्थापित होने के कारण पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव बढ़ा। ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के कारण शिक्षा का प्रसार हुआ। उधर ईसाइयों के धर्म प्रचार के कारण राजा राममोहन राय और आर्य समाज के सुधार आंदोलनों का भी प्रभाव पड़ा। इससे राष्ट्रव्यापी पराधीनता की प्रतिक्रिया के कारण राष्ट्रभावना का उदय हुआ। रीति काल की राजभक्ति ने देश भक्ति का रूप धारण कर लिया। अंग्रेजी शासन में बुद्धिवाद की प्रधानता के कारण मनुष्य का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदल गया। काव्य रचना के क्षेत्र में ब्रजभाषा का स्थान खड़ी बोली ने ले लिया। इस काल में पद्य के साथ हिंदी गद्य में उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना आदि सभी विधाओं में साहित्य की रचना होने लगी। इसलिए इसे गद्य काल भी कहा जाता है।

यह काल दूसरे कालों की अपेक्षा बहुत व्यापक है इसलिए इस काल के साहित्य को हम निम्नलिखित चरणों में बाँट सकते हैं :–

(i) भारतेंदु युग

(ii) द्विवेदी युग

(iii) छायावाद युग और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा

(iv) छायावादोत्तर युग -

(क) प्रगतिवाद

(ख) प्रयोगवाद

(ग) नई कविता

उपर्युक्त चरणों में पहले दो चरणों के नाम क्रमश: भारतेंदु हरिश्चंद्र और महावीर प्रसाद द्विवेदी नामक दो साहित्यकारों के नाम पर हैं जब कि अन्य चरणों के नाम साहित्य की विशेष प्रवृत्ति के आधार पर हैं।

भारतेंदु युग

भारतेंदु युग के साहित्य में देशप्रेम, निज भाषा और संस्कृति प्रेम तथा राष्ट्रीयता की भावना का उदय हुआ। रीतिकाल के बाद आधुनिक काल के साहित्य में जो परिवर्तन हुआ उसका कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ थीं। भारत पर ब्रिटिश शासन पूर्ण रूप से स्थापित हो गया था। इसलिए भारतीय संस्कृति, धर्म, भाषा और उद्योगों को खतरा पैदा हो गया था। यही कारण है कि इस काल के साहित्य में देशप्रेम, संस्कृति, भाषा और धर्म की रक्षा की भावना दिखाई देती है।

इस काल की दूसरी विशेषता यह है कि पद्य के साथ गद्य की विभिन्न विधाओं में रचनाएँ की जाने लगीं। इस काल की कविता में नई और पुरानी विचारधाराओं का संगम दिखाई देता है। कवि और लेखक समय के प्रति सजग थे। वे अंग्रेजी शासन का विरोध नहीं कर सकते थे इसलिए उन्होंने कविता में स्वदेश प्रेम, स्वसंस्कृति और स्वभाषा का गुणगान किया। इस युग के साहित्य को तत्कालीन नवनिर्मित साहित्यिक गोष्ठियों और नई पत्र-पत्रिकाओं से बल मिला।

कवियों ने कविता के लिए ब्रजभाषा का प्रयोग जारी रखा। स्वयं भारतेंदु ने ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं। इस युग के प्रमुख रचनाकार और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

भारतेंदु हरिश्चंद्र	-	प्रेम माधुरी, प्रेमप्रलाप, भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, नीलदेवी, चंद्रावली, श्रृंगार रस के कवित्त, सवैये, गेय पद आदि।
प्रताप नारायण मिश्र	-	प्रताप लहरी, बुढ़ापा, गोरक्षा आदि।
अंबिकादत्त व्यास	-	दशरथ विलाप।

द्विवेदी युग

द्विवेदी युग को खड़ी बोली के विकास का युग भी कहा जाता है। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में विकसित करने का प्रयास किया। इस प्रयास में उन्हें सफलता भी मिली। इस युग में पद्य और गद्य दोनों में ही नवीन विषयों पर रचनाएँ की गईं। विशेषत: गद्य के क्षेत्र में उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना आदि में रचनाएँ होने लगीं। इसी समय आर्य समाज और राजा राममोहन राय के नैतिकता के आंदोलनों के प्रभाव से कविता में श्रृंगार रस की धारा मंद पड़ गई। इस युग के साहित्य में भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों की प्रधानता रही।

इस काल में द्विवेदी जी ने पत्र-पत्रिकाओं (विशेषत : 'सरस्वती') के माध्यम से हिंदी गद्य में व्याकरण की दृष्टि से सुधार किया। उन्होंने कवियों को ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली में कविता लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। भारतेंदु युग तक पद्य के लिए ब्रजभाषा का ही प्रयोग होता था लेकिन गद्य की रचना खड़ी बोली में शुरू हो गई थी। अब पद्य के लिए भी खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा। इस दिशा में द्विवेदी जी का प्रयास प्रशंसनीय है। द्विवेदी जी ने स्वयं भी कालिदास के 'कुमार संभव' और अन्य संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद किया।

इस युग के प्रमुख रचनाकार और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	-	प्रियप्रवास, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे
मैथिलीशरण गुप्त	-	साकेत, यशोधरा, भारत-भारती, जयद्रथ वध, पंचवटी
श्रीधर पाठक	-	श्रांत पथिक, ऊजड़ ग्राम
गयाप्रसाद शुक्ल 'स्नेही'	-	प्रेमपचीसी, कुसुमांजलि
जगन्नाथ दास 'रत्नाकार'	-	उद्धवशतक, गंगावतरण (ब्रजभाषा में)

छायावाद युग और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा

'द्विवेदी युग' की कविता में बौद्धिकता और उपदेशात्मकता थी। कवियों पर राष्ट्रवादी धारा का प्रभाव था। कवियों का ध्यान स्थूल संसार की ओर अधिक था। उनके तथ्यपरक वर्णन के कारण कला पक्ष छिपा रहा। छायावाद युग में कविता ने नया मोड़ लिया। प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर देश को वायदे के अनुसार आजादी नहीं मिली और महात्मा गांधी के सत्याग्रह के विफल हो जाने के कारण देश में निराशा व्याप्त हो गई। साहित्य पर भी इसका प्रभाव पड़ा। कवि अंतर्मुखी होकर कविता लिखने लगा। द्विवेदीकालीन काव्य की इतिवृत्तात्मकता का स्थान यहाँ अमूर्त विधान और चित्रात्मकता ने ले लिया। इस नई शैली में गीतात्मकता थी। कवियों ने वड्र्सवर्थ, कीट्स, शैली, बायरन आदि रोमांटिक कवियों से प्रेरणा ली। इसके अलावा बंगला के प्रभाव से छायावादी कविता में लालित्य और सुकुमारता आ गई। छायावादी कविता में प्रेम और सौंदर्य का अच्छा वर्णन मिलता है। इस युग के कवियों ने प्रकृति को नारी के रूप में चित्रित किया। इनकी कविताओं में रहस्य का पुट दिखाई देता है। वस्तुत: छायावादी कवियों को मूल प्रेरणा भारतीय आत्मदर्शन और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रतीकों से मिली। इन्होंने प्रकृति का मानवीकरण किया और उस पर चेतना को आरोपित किया। छायावादी कविता में भाषा का परिष्कार इसकी प्रमुख विशेषता है। द्विवेदी युग में जिस राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति आरंभ हुई उसे छायावाद युग में भी पर्याप्त महत्व प्राप्त हुआ।

इस युग के प्रमुख कवि और उनकी कृतियाँ नीचे दी जा रही हैं :–

जयशंकर प्रसाद	-	कामायनी, आँसू, लहर, झरना।
सुमित्रानंदन पंत	-	वीणा, पल्लव, गुंजन, उत्तरा, चिदंबरा, लोकायतन।
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	-	परिमल, अनामिका, अणिमा, आराधना, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, राम की शक्ति पूजा।
महादेवी वर्मा	-	यामा, नीहार, नीरजा, दीपशिखा।

छायावाद युग की राष्ट्रीय काव्यधारा के रचनाकारों में प्रमुख कवि हैं :–

माखनलाल चतुर्वेदी	-	'एक फूल की चाह' (कविता), हिमकिरीटनी, हिमतरंगिणी, युग चरण
सुभद्रा कुमारी चौहान	-	झाँसी की रानी, वीरों का वसंत।
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	-	'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ' (कविता)।
रामधारी सिंह 'दिनकर'	-	कुरुक्षेत्र, उर्वशी।

छायावादोत्तर युग

(क) प्रगतिवाद - पंत और निराला की कविताओं में सन् 1936 के आसपास एक नवीन शैली के दर्शन होते हैं। उसमें दलित शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति है। जीवन के प्रति यथार्थवादी दृष्टि प्रगतिशील कवियों का आदर्श था। आजादी के बाद देश का शासन भारतीय नेताओं के हाथ में आ गया। कवियों के विचारों पर पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति और साहित्य का प्रभाव पड़ा। मार्क्सवादी विचारधारा की लहर चल पड़ी और इसका प्रभाव कविता पर भी दिखाई देता है। मनुष्य का स्थान सबसे ऊपर माना गया। प्रगतिवादी काव्य शोषण का विरोध करता है। इस काल की कविता में क्रांति की भावना दिखाई देती है। प्रगतिवादी काव्यधारा के मुख्य कवि थे - केदारनाथ अग्रवाल, रामविलास शर्मा, नरेंद्र शर्मा, शिवमंगल सिंह सुमन, गजानन माधव 'मुक्तिबोध' नागार्जुन, प्रभाकर 'माचवे', रांगेय राघव आदि।

(ख) प्रयोगवाद - इस युग के कवियों ने जहाँ कविता में नए-नए प्रयोग किए वहीं नए-नए विषयों का भी चयन किया। प्रयोगवाद से पूर्व कविता में छंद का प्रयोग आवश्यक समझा जाता था। इस युग में कवियों ने छंद को छोड़कर गद्य जैसी अतुकांत कविताएँ लिखीं। कविता में बौद्धिकता को विशेष महत्व दिया गया। इन कवियों ने प्रयोगवादी कविता में जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया। नये प्रतिमानों और शब्दों का प्रयोग इस युग की विशेषता है। इसलिए इन्हें राहों का अन्वेषी कहा जाता है। प्रयोगवाद को आरंभ करने का श्रेय अज्ञेय को है। वे इसके प्रवर्तक माने जाते हैं। अज्ञेय ने सन् 1943 में 'तारसप्तक' का संपादन किया। 'तारसप्तक' में जिन कवियों की रचनाएँ हैं उन्हें प्रयोगवादी कवि कहा गया। ये कवि हैं - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव 'मुक्तिबोध', नेमिचंद्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, भवानीप्रसाद मिश्र, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर और रामविलास शर्मा।

(ग) नई कविता - प्रयोगवाद के बाद कविता में स्थिरता दिखाई देती है और उसके अपने मूल्य स्थापित होते हैं। कविता नया रूप धारण कर लेती है। इस कविता को 'नई कविता' कहा गया। इस कविता की रचना करने वाले कवि प्राय: प्रयोगवादी ही हैं। कुछ और नाम भी इसमें जुड़ गए हैं। प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	-	कितनी नावों में कितनी बार, भग्नदूत, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी
धर्मवीर 'भारती'	-	अंधायुग, कनुप्रिया, सात गीत वर्ष
गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	-	चाँद का मुँह टेढ़ा है
गिरिजाकुमार माथुर	-	धूप के धान, शिलापंख चमकीले, मंजीर, नाश और निर्माण
भवानी प्रसाद मिश्र	-	गीतफरोश, खुशबू के शिलालेख
नरेश मेहता	-	वनपाखी सुनो, संशय की एक रात, महाप्रस्थान
दुष्यंत कुमार	-	एक कंठ विषपायी, सूर्य का स्वागत

1.3 वीरगाथा काल

हिंदी साहित्य का आरंभ अपभ्रंश की अंतिम अवस्था से हुआ है। इसे अपभ्रंश और हिंदी भाषा का संधिकाल कह सकते हैं। समय के साथ-साथ धीरे-धीरे हिंदी भाषा अपभ्रंश के प्रभाव से मुक्त होती गई और 1575 वि० संवत् तक किसी-न-किसी रूप में हिंदी पर अपभ्रंश का प्रभाव बना रहा। इस काल के साहित्य को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। ये हैं –

1. अपभ्रंश काव्य 2. लोकभाषा काव्य

अपभ्रंश काव्य

हिंदी में अपभ्रंश काव्य का सबसे पुराना रूप सिद्ध साहित्य में मिलता है। सातवीं शताब्दी में सिद्ध योगियों ने बौद्ध धर्म के विरूद्ध धार्मिक विद्रोह का शंखनाद फूँक दिया था। यह परंपरा बारहवीं शताब्दी तक चलती रही। इन सिद्धों ने विरक्ति, त्याग, ज्ञान और संयम का विरोध करके सिद्धि, चमत्कार, मद्यपान और भोग-विलास को प्रधानता दी। उनकी उपदेशात्मक रचनाओं में पुरानी हिंदी का रूप दिखाई देता है। इस काल के प्रसिद्ध कवि थे सरहपा, जो वज्रयान शाखा के ब्राह्मण भिक्षु थे। इन सिद्ध संतों के विरोध में नाथपंथी योगियों का उदय हुआ। इसके प्रवर्तक बाबा गोरखनाथ माने जाते हैं। नाथ साहित्य की भाषा अपभ्रंश से प्रभावित थी।

अपभ्रंश साहित्य का दूसरा रूप जैन धर्माचार्यों की रचनाओं में पाया जाता है। 'हेमचंद्र का व्याकरण' इसका अच्छा उदाहरण है। इसमें पुरानी हिंदी की झलक मिलती है। जैसे–

भल्ला हुआ जु मारिया, बहिणि महारा कंतु।
लज्जेजं तु वयंसिअहु, जइ भग्गा घरू एंतु।।

जैन साहित्य के प्रमुख कवि स्वयंभूदेव और पुष्पदंत थे। स्वयंभूदेव की प्रसिद्ध रचना 'पउम चरिउ' (पद्मचरित) है। पुष्पदंत जैन साहित्य के उत्कृष्ट महाकवि थे। इनकी प्रमुख रचना 'णायकुमार-चरिउ' (नागकुमार चरित) है।

लोकभाषा काव्य

अपभ्रंश भाषा की रचनाओं के साथ राजाश्रय में रहने वाले कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में काव्यग्रंथ लिखे। इनमें वीर रस की प्रधानता थी। ये रचनाएँ सामान्यत: प्रबंधकाव्य के रूप में और कहीं-कहीं मुक्तकों यानी फुटकर गेय पदों के रूप में लिखी गईं। इन रचनाओं का नाम 'रासो' था। प्रमुख 'रासो' ग्रंथ और उनके ग्रंथकार निम्नलिखित हैं :–

खुमान रासो - दलपतविजय
बीसलदेव रासो - नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो - शारंगधर
परमाल रासो - जगनिक
पृथ्वीराज रासो - चंदबरदाई

इसके अतिरिक्त 'ढोला-मारू रा दूहा', 'जयचंद प्रकाश' और 'जयमयंक जसचंद्रिका' इस काल की अन्य उत्कृष्ट रचनाएँ हैं।

सातवीं शताब्दी के अंत तक भारत का केंद्रीभूत हिंदी क्षेत्र बिखराव की स्थिति में आ गया था। छोटे-छोटे राजे-रजवाड़े जरा-जरा सी बात पर आपस में लड़कर देश को कमजोर करने में लगे थे। मुसलमान आक्रांताओं ने इसका खुलकर लाभ उठाया। इन्होंने पश्चिमोत्तर से भारत पर हमले किए और बारहवीं शताब्दी तक उनका उत्तरी भारत के अधिकांश भाग पर अधिकार हो गया।

उस समय राजस्थान में राठौर, सोलंकी, परिहार, चंदेल, तोमर, गहलौत आदि वंशों के शासक थे। वे आपस में युद्ध में संलग्न रहते थे। साहित्य पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। इस काल में इन राजाओं के आश्रय में रहने वाले कवियों ने डिंगल भाषा में काव्य सृजन किया। यह काव्य मुख्य रूप से अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में लिखा गया था। ये राजा एक-दूसरे के साथ युद्ध में उलझे रहते थे। इस प्रकार की कविताओं में वीर रस की प्रधानता थी। ये कविताएँ चूंकि राजाओं की झूठी प्रशंसा में लिखी जाती थीं इसलिए इसे चारण काव्य भी कहा जाता है। इस काल के काव्य ग्रंथ प्राय: प्रबंध काव्य थे।

1.3.1 वीरगाथा काल के प्रमुख कवि

चंदबरदाई

वीरगाथा काल के कवियों में चंदबरदाई (संवत् 1225) प्रमुख थे। चंदबरदाई का 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का विशालकाय चरित-काव्य है। 'चंद' ने इसमें पृथ्वीराज चौहान की यशोगाथा का वर्णन किया है। यह ग्रंथ अपनी विशालता के लिए हिंदी साहित्य में जाना जाता है। इतने बड़े आकार का कारण यह है कि समय-समय पर इसमें विभिन्न कवियों द्वारा उनके निर्मित अंश मिलाए जाते रहे। संभवत: इसका मूलरूप काफी छोटा रहा होगा। 'चंद' लाहौर के निवासी थे। और पृथ्वीराज चौहान के मित्र तथा सेनापति थे। परंतु इनके जीवन का महत्वपूर्ण भाग दिल्ली में पृथ्वीराज के साहचर्य में बीता।

भाषा की दृष्टि से 'पृथ्वीराज रासो' का विशेष महत्व है। वीरता के भावों या वीर रस की जैसी सुंदर अभिव्यक्ति इस काव्य में हुई है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। इसमें आबू में यज्ञ कुंड से चार क्षत्रिय कुलों की उत्पत्ति से लेकर दिल्ली के अंतिम सम्राट पृथ्वीराज के कैद होने तक की कथा वर्णित है। इसमें संयोगिता और पृथ्वीराज के विवाह की कथा के साथ-साथ चंगेज खाँ और तैमूरलंग आदि के आक्रमणों का भी सुंदर वर्णन है। इस ग्रंथ में वीरगाथा काल की जैसी झलक मिलती है वैसी किसी दूसरे काव्य में नहीं पाई जाती है। छंदों का जैसा विस्तार और भाषा का जैसा सुगठित रूप इनमें मिलता है वैसा अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं देता। रसात्मकता की दृष्टि से इसकी गणना हिंदी साहित्य के कुछ इने-गिने काव्यों में की जा सकती है। रासो में अनेक कथानक रूढ़ियों और काव्य रूढ़ियों का प्रयोग किया गया है। नायिका का नखशिख वर्णन, सेना के प्रयाण, युद्ध, षट् ऋतुओं का वर्णन भी कवि ने मनोयोग से किया है। रासो में छप्पय की प्रधानता है। नीचे चंदबरदाई की कविता में वीर रस और श्रृंगार रस का एक-एक उदाहरण देखिए–

वीर रस

कालंजर जब परिय भरिय सेनापति साहित्य ।
पंच फौज एक ठूठ कन्ह करवारि सम्हारिय।।
घर पारे बहुमीर सथ्य जब सेना भग्गिय।
गर घत्ती कम्मान लियौ गोरीय उछगियु।।

श्रृंगार रस

मनहूँ काम कामिनी रचिय, रचिय रूप की रास।
पसु पंछी सब मोहनी सुर नर मुनिवर पास।।

दलपत विजय

इस काल के दूसरे कवि दलपत विजय हैं। इनकी रचना का नाम 'खुमान रासो' है। इसमें चित्तौड़ के राजा खुमान द्वितीय (संवत् 867 वि०) से लेकर महाराणा प्रताप तक के युद्धों का वर्णन है। इनमें से 'पृथ्वीराज रासो' के समान पर्याप्त प्रक्षिप्त (बाद में जोड़े गए) अंश हैं।

नरपति नाल्ह

'नाल्ह' के गीतात्मक काव्य का नाम 'बीसलदेव रासो' है। इनके काव्य में अपभ्रंश का पर्याप्त प्रयोग हुआ है। इसमें अपभ्रंश के व्याकरण के नियमों का पालन हुआ है। इसमें मालवा के राजा भोज परमार की पुत्री राजमती के बीसलदेव के साथ विवाह आदि का सुंदर वर्णन है। इसमें वीर रस की अपेक्षा श्रृंगार रस की प्रधानता है।

जगनिक

जगनिक का 'परमाल रासो' एक ओजपूर्ण काव्य है। इसका दूसरा नाम 'आल्हाखंड' है। इसमें महोबा के राजा परमार के दरबारी और वीर सेनापति आल्हा और ऊदल के युद्धों का वर्णन है। इसकी गाथा लोकप्रचलित है। उत्तर भारत विशेषत: राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के गाँव-गाँव में इनका खूब प्रचार रहा है। इसका उदाहरण देखिए -

इतना सुनिकै रायलंगरी, नैना अग्नि ज्वाल हुई जाए।
ऐसा देखो न काहू को, डोला ले दिल्ली को जाए।।
बातन-बातन बतबढ़ हुईगौ, औ बातन में बाढ़ि रारि।
दूनौ दल में हल्ला हुइगौ, छत्रिन खैंचि लई तरवारि।।
पैदल के संग पैदल भिरिगे, अरु असवारन के असवार।
पड़ौ जड़ाका दूनौ दल में, जँह मुँह तोर चले तरवारि।।

अन्य कवि

इस काल में रास परंपरा का 'संदेश रासक' ग्रंथ अद्दहमाण (अब्दुल रहमान) भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अमीर खुसरो

आचार्य शुक्ल के अनुसार खुसरो ने संवत् 1340 (1283 ई०) के लगभग रचना आरंभ की थी। जन-जीवन के साथ घुल-मिलकर काव्य-रचना करने वाले कवियों में खुसरो का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने जनता के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ और कहमुकरियाँ लिखी थीं। वीरगाथा काल (आदिकाल) में खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाने वाले वे पहले कवि हैं। खुसरो द्वारा रचित 20-21 ग्रंथ उपलब्ध हैं। जिनमें 'खालिकबारी', 'पहेलियाँ', 'दो सुखने', 'गजल' आदि प्रसिद्ध हैं। भाषा की दृष्टि से उनकी

पहेलियाँ साहित्य के इतिहास का सदा एक महत्वपूर्ण अंग रहेंगी।

खुसरो की भाषा का एक नमूना देखिए -

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।। (1)

गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारै केस।
चल खुसरो घर आपने, रैन भई चहुँ देश।। (2)

विद्यापति

अपभ्रंश की परंपरा समाप्ति के 50-60 वर्ष बाद विद्यापति ने बीच-बीच में देश भाषा में भी कुछ पद्य रचकर अपभ्रंश में छोटी-छोटी पुस्तकें लिखीं, उस समय तक अपभ्रंश का स्थान देश भाषा ले चुकी थी। 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका' और 'पदावली' इनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। 'कीर्तिलता' में तिरहुत के राजा कीर्तिसिंह की वीरता, उदारता आदि का वर्णन, देश भाषा के कुछ पद्यों तथा अपभ्रंश भाषा के दोहा, चौपाई, छंद, गाथा आदि में किया है। इस अपभ्रंश की विशेषता यह है कि यह पूरबी अपभ्रंश है। दूसरी विशेषता विद्यापति के अपभ्रंश की यह है कि वह प्राय: देशभाषा के अधिक निकट है।

विद्यापति जिस रचना के कारण मैथिलिकोकिल कहलाए, वह इनकी पदावली है। इन्होंने अपने समय की प्रचलित मैथिली भाषा का प्रयोग किया है। विद्यापति के पद अधिकतर श्रृंगार परक हैं जिनमें नायिका और नायक राधा-कृष्ण हैं। उन्होंने इन पदों की रचना श्रृंगार काव्य की दृष्टि से की है, भक्त के रूप में नहीं।

सरल बसंत समय भल पावलि दछिन पवन बह धीरे।
सपनहु रूप बचन इक भाखिय मुख से दूरि करु चीरे।।

पाठ-7 : भक्ति काल और रीति काल
(द्वितीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

भाग-क: भक्ति काल

1.0 भक्ति काल और रीति काल 20

1.1 भक्ति काल की पृष्ठभूमि 20

1.1.1 राजनीतिक परिस्थितियाँ 20

1.1.2 सामाजिक परिस्थितियाँ 20

1.1.3 धार्मिक परिस्थितियाँ 20

1.2 भक्तिकालीन काव्य धाराएँ 21

1.2.1 ज्ञानमार्गी शाखा 21

- कबीर 23

1.2.2 प्रेममार्गी शाखा 24

- मलिक मुहम्मद जायसी 25

1.2.3 रामभक्ति शाखा 26

- गोस्वामी तुलसीदास 27

1.2.4 कृष्णभक्ति शाखा 28

- सूरदास 29

भाग-ख: रीति काल

1.3 रीति काल 30

1.3.1 राजनीतिक परिस्थितियाँ 31

1.3.2 सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियाँ 31

1.4 रीति काव्य धाराएँ 31

1.4.1 रीतिबद्ध धारा 32

- केशवदास, पद्माकर 32

- बिहारीलाल 33

1.4.2 रीतिमुक्त धारा 33

- घनानंद 34

- आलम 35

भाग-क : भक्ति काल

1.0 भक्ति काल और रीति काल

पिछले अध्याय में हमने हिंदी साहित्य के प्रथम चरण अर्थात् वीरगाथा काल के बारे में पढ़ा था। प्रस्तुत पाठ में हम भक्ति काल और रीति काल के बारे में पढ़ेंगे।

1.1 भक्ति काल की पृष्ठभूमि

भक्ति काल का आरंभ संवत् 1375 (सन् 1318) से माना जाता है। वीरगाथा काल की समाप्ति के साथ देश की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन हुए जिसका प्रभाव देश के वातावरण और साहित्य पर पड़ा।

1.1.1 राजनीतिक परिस्थितियाँ

धीरे-धीरे मुसलमानों का शासन दिल्ली और उत्तर भारत पर स्थापित हो गया। हिंदुओं पर तरह-तरह के अत्याचार किए जाने लगे। असुरक्षा की भावना ने लोगों को भाग्यवादी बना दिया। राजकीय कार्यों में पक्षपात बढ़ गया। लोगों से बेगार कराई जाने लगी और स्त्रियों को भोग-विलास की वस्तु समझा जाने लगा। हिंदू राजाओं की परस्पर लड़ाइयों ने उनके बल को क्षीण कर दिया और वे भी मुस्लिम शासकों के अधीन हो गए।

1.1.2 सामाजिक परिस्थितियाँ

मुस्लिम शासकों और हिंदू सामंतों की विलासिता की प्रवृत्ति के कारण प्रजा पर आर्थिक भार बढ़ गया था। बहुसंख्यक हिंदू समाज का निर्धनता और निराशा के कारण बुरा हाल था। वर्णाश्रम व्यवस्था नष्ट होने लगी थी। हिंदू स्त्रियों ने आत्मरक्षा के लिए मुसलमानों की देखा-देखी परदा प्रथा को अपनाना शुरू कर दिया। तभी से हिंदू समाज में स्त्री जाति की सुरक्षा के लिए बाल-विवाह, बहु-विवाह जैसी कुरीतियाँ प्रचलित हो गईं।

1.1.3 धार्मिक परिस्थितियाँ

मुस्लिम शासक इस देश में अपने पैर जमाना चाहते थे। साथ ही वे अपने धर्म का प्रचार भी करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने उच्च वर्ग के लोगों को बल प्रयोग से और तथाकथित नीची कही जानेवाली जातियों के लोगों को प्रतिष्ठित पद का प्रलोभन देकर धर्मांतरण किया। हिंदू पहले ही सिद्ध योगियों और नाथपंथी संतों के प्रभाव से तंत्र-मंत्र और जादू-टोना आदि से प्रभावित थे। इससे हिंदू धर्म का निरंतर ह्रास हो रहा था।

शासक वर्ग देश के शासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए और इस्लाम के प्रचार के लिए जनता के निकट आना चाहता था। निराश हिंदू जनता ने इसका स्वागत किया। धीरे-धीरे दोनों धर्मों और संस्कृतियों में आपसी सहयोग की भावना पैदा होने लगी। दूसरी ओर ऐसे भी हिंदू थे जो इसे पसंद नहीं करते थे। उन्हें इस बात का विश्वास था कि विदेशी यवन शासकों के अत्याचारों से रक्षा के लिए ईश्वर अवतार लेगा और अत्याचारियों का नाश करेगा।

ऐसे समय में रामानुजाचार्य के शिष्य रामानंद ने और महाप्रभु वल्लभाचार्य ने वैष्णव धर्म का प्रचार करके भक्ति आंदोलन को जन्म दिया। रामानंद ने राम की और वल्लभाचार्य ने कृष्ण की उपासना के द्वारा अवतार की धारणा को जनता के सम्मुख रखा। इससे निराश जनता के हृदय में आशा का संचार हुआ। इसी समय हिंदुओं और मुसलमानों के बीच भेदभाव को मिटाने के लिए कुछ ऐसे संत कवि भी हुए जिन्होंने ईश्वर और खुदा, राम और रहीम के एकत्व को प्रतिपादित किया। उनका संबंध संतकाव्य धारा से था जिसके प्रवर्तक संत कबीर थे। कबीर भी रामानंद के शिष्य थे। परंतु, इन्होंने भक्ति के जिस रूप को चलाया वह वैष्णव भक्ति रूप से अलग था। इन्होंने निर्गुण, निराकार ब्रह्म की ऐसी भावना का प्रचार किया जिससे हिंदू और मुसलमान के बीच निकटता बढ़ी और परस्पर सद्भाव उत्पन्न हुआ।

इन प्रयत्नों से सूफी मत का धार्मिक प्रभाव भी बढ़ा। सूफी संतों ने भारतीय जीवन से संबंधित प्रेमाख्यान काव्यों की रचना की।

इस प्रकार इस काल में एक ओर तो सगुण भक्ति–राम-भक्ति धारा और कृष्ण-भक्ति धारा में प्रवाहित होने लगी तो दूसरी और निर्गुण भक्ति भी ज्ञानमार्गी शाखा, प्रेममार्गी शाखा के रूप में अस्तित्व में आई। वास्तव में इस देश में भक्ति का प्रवाह निरंतर चला आ रहा था किंतु जब आततायियों के अत्याचार से जनता त्रस्त और निराश होकर दिशाहीन हो गई तब भक्ति का स्रोत फूट पड़ा।

1.2 भक्तिकालीन काव्य धाराएँ

भक्तिकालीन काव्य धाराएँ

- निर्गुण भक्तिधारा
  - ज्ञानमार्गी शाखा
    - कबीर दास
  - प्रेममार्गी शाखा
    - जायसी
- सगुण भक्तिधारा
  - राम-भक्ति शाखा
    - तुलसीदास
  - कृष्ण-भक्ति शाखा
    - सूरदास

इस काल की भक्ति भावना ने दिशाहीन हिंदू जनता को नई दिशा प्रदान की और जीने की राह दिखाई। इस समय का भक्ति साहित्य भाषा, भाव, काव्य सौंदर्य आदि की दृष्टि से हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। इस काल में तुलसी, सूरदास, कबीर और जायसी जैसे उच्च कोटि के कवि हुए जिन पर कोई भी गर्व कर सकता है। इसलिए इस युग को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग भी कहा जाता है।

1.2.1 ज्ञानमार्गी शाखा

पहले हम निर्गुण भक्ति की ज्ञानमार्गी शाखा पर विचार करें। पहले यह बताया जा चुका है कि रामानंद की शिष्य परंपरा में एक ओर तुलसीदास हुए तो, दूसरी और कबीर। तुलसीदास ने ब्रह्म के सगुण रूप की उपासना की तो कबीर ने निर्गुण ब्रह्म की। कबीर की प्रेरणा से हिंदी साहित्य में ज्ञानमार्गी भक्त कवियों की एक अलग शाखा चल पड़ी। कबीर, नानक, दादू, मलूकदास, सुंदरदास आदि इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हुए। ये सभी संत थे। इन्होंने एक ईश्वर की स्थापना करके बाहरी आडंबरों

और आचार-विचार को धर्म मानने वाले हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को फटकारा। इसे उनके दोहों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

"कांकर-पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे क्या बहरा हुआ खुदाय।।"

संत कवि भिन्न-भिन्न जातियों के थे। इनके उपदेशों में जातिभेद को कोई महत्व नहीं दिया गया। इनका कथन था –

"जात पात पूछे ना कोई,
हरि को भजे सो हरि का होई।"

इसके आधार पर उन्होंने मानव मात्र में एकता स्थापित करने की कोशिश की। जहाँ तक अध्यात्म का संबंध है, इन संत कवियों ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना की। परंतु उपासना के लिए इन्हें भी निर्गुण ब्रह्म में गुणों को आरोपित करना पड़ा। उपासना के लिए निर्गुण ईश्वर की प्रतिष्ठा करके तथा परमार्थ सिद्धि के लिए धर्म ग्रंथों की निस्सारता बताकर इन संतों ने एक ऐसा आधार तैयार कर दिया जिस पर हिंदू और मुसलमान दोनों समान भाव से चल सकें। इन संत कवियों ने अपने लौकिक जीवन को अत्यंत सरल, निर्मल और स्वाभाविक बनाने का उद्देश्य दिया और सदाचार पर विशेष बल दिया। इससे एक ऐसे सीधे-सादे भक्तिमार्ग की नींव पड़ी जिसका आधार था एकेश्वर और लौकिक जीवन की सरलता। इसकी ओर सामान्य जन भी आकर्षित हुआ।

संत कवियों की कविता से जिस भक्ति का विकास हुआ वह लोक-व्यापी न हो सकी। इनका उपास्य निर्गुण ब्रह्म लोक-व्यवहार से अलग निराकार और ज्ञान के द्वारा प्राप्य था। इसीलिए यह सबके हृदय में स्थित तथा दया आदि गुणों से युक्त होकर भी सर्वसाधारण के आकर्षण का विषय न बन सका। कबीर आदि संतों की वाणी भी इसकी जटिलता दूर न कर सकी।

नीचे ज्ञानमार्गी शाखा की विशेषताओं को संक्षेप में दिया गया है :–

(i) इस शाखा का जन्म हिंदू-मुस्लिम एकता की भावना को स्थापित करने के लिए हुआ।

(ii) इस शाखा के कवियों ने इस्लाम के एकेश्वरवाद और हिंदुओं के अद्वैतवाद को महत्व दिया।

(iii) इन कवियों ने मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा, व्रत-उपवास, रोजा, नमाज आदि मिथ्या आडंबरों का विरोध किया।

(iv) ये कवि सांप्रदायिकता, वर्णाश्रम व्यवस्था और जात-पात के विरोधी थे। ये इंद्रिय निग्रह और साधना पर जोर देते थे।

(v) इस शाखा के कवियों पर सिद्धों, योगियों और नाथपंथ का प्रभाव था इसलिए इनके काव्य में हठयोग की प्रधानता रही। हठयोगी हृदय के भीतर ब्रह्म का साक्षात्कार करने पर बल देते हैं।

(vi) इस शाखा के कवि संत कहलाए। इनकी कविता उपदेश प्रधान रही।

(vii) इनके काव्य पर अहिंसा, भक्ति भावना की महत्ता आदि की छाप भी पाई जाती है।

(viii) प्रचार और उपदेश का साधन होने के कारण इनकी भाषा, सधुक्कड़ी भाषा कही जाती है।

कबीर

कबीरदास इस धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। अब तक के अनुसंधानों के अनुसार कबीर का जन्म संवत् 1456 में हुआ था। कहा जाता है कि कबीर को एक विधवा ब्राह्मणी ने जन्म दिया था। लोकलाज के डर से ब्राह्मणी ने कबीर को बनारस के लहरतारा तालाब में छोड़ दिया। जहाँ से जाति के जुलाहा नव दपंत्ति नीरू और नीमा प्रात:कालीन सैर के दौरान लालन-पालन के लिए फूल पर लेटे बाल कबीर को अपने घर ले आए और उसका लालन-पालन किया।

स्वामी रामानंद को कबीर अपना गुरु मानते थे। कबीर भक्त और समाज सुधारक थे। इनकी रचनाओं में निर्गुण ब्रह्मवाद, सूफियों के रहस्यवाद, योगियों की साधना और अहिंसा आदि के साथ ही सगुण ब्रह्म का भी उल्लेख है। कबीर के पदों का वर्ण्य विषय ज्ञान का उपदेश है। इनकी रचनाओं में योगाभ्यास, गुरुमहिमा, माया के सिद्धांत नाम-महिमा और सत्संगति आदि का वर्णन है। इनके वर्णन का सामान्य विषय निर्गुण ईश्वर या ब्रह्म का निरूपण था। ज्ञान का यह वर्णन सरल और व्यावहारिक ढंग से किया गया है। इसलिए यह ज्ञान जनमानस में सहज रूप से उतर गया। कबीर की मृत्यु मगहर में हुई।

कबीर पढ़े-लिखे नहीं थे। उन्होंने स्वयं कहा है - '**मसि कागद छुओ नहीं।**' परंतु कबीर बहुश्रुत थे। साधु-संतों के सत्संग से उन्हें वेदांत, उपनिषदों और पौराणिक कथाओं का ज्ञान था। उन्हें योग क्रियाओं की जानकारी थी पर कबीर ने इन्हें महत्व नहीं दिया। वे मूलत: संत थे। अपने पदों में उन्होंने मुख्य रूप से हिंदू और मुस्लिम का उल्लेख किया। सच्चे धर्म और परमात्मा की प्राप्ति में बाधक होने के कारण वेदों और शास्त्र तथा कर्मकांडों की निंदा की है।

कबीर मूलत: समाजसुधारक थे। उन्होंने समाज में फैले आडंबरों और भेदभाव की प्रवृत्ति का निर्भीकता से विरोध किया। उन्होंने मूर्ति पूजा और अंधविश्वासों का खंडन कर हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। हिंदुओं को फटकारते हुए वे कहते हैं :–

पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजूँ पहार।
ताते ये चाकी भली, पीस खाय संसार।।

वहीं मुसलमानों का भी वे मजाक उड़ाते हैं :-

कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

कबीर की भाषा का निर्णय करना सरल नहीं है क्योंकि उनकी भाषा कई भाषाओं का मिश्रित रूप लगती है। उन्होंने स्वयं ही कहा है कि 'मेरी बोली पूरबी है', परंतु खड़ी बोली, ब्रज, पंजाबी, राजस्थानी, अरबी, फारसी, आदि भाषाओं का पुट भी उनकी रचनाओं में दिखाई देता है। इसका कारण उनका देश के विभिन्न भागों में भ्रमण करना है। देश भ्रमण करते समय जो कुछ उनकी अटपटी वाणी से निर्गत हुआ, वही काव्य बन गया। उनकी भाषा में अक्खड़पन है। परंतु उनकी रचनाओं में जो खरेपन की मिठास है वह उन्हीं की विशेषता है।

कबीर मूलत: रहस्यवादी कवि हैं । यों तो सभी संत कवियों में थोड़ा-बहुत रहस्यवाद मिलता है परंतु उन पर कबीर का ही प्रभाव था। बंगला के कवि रवींद्र पर भी उनका प्रभाव पड़ा।

निर्गुण संत कवियों में कबीर का स्थान सर्वोपरि है। बाद में अन्य संत कवियों ने उनका ही

अनुसरण किया। उनकी रचनाओं का संग्रह 'बीजक' और 'कबीर ग्रंथावली' में मिलता है। कबीर की रचना के कुछ उदाहरण देखिए, जिसमें कबीर की समाज सुधार की भावना दिखाई देती है।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

* * *

कबीरा खड़ा बाजार में, माँगे सबकी खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से वैर।।

कबीर ने अपनी रचनाओं में सामान्य जन को संबोधित करते हुए 'भाई' या 'साधो' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है, जैसे "सुनो भई साधो"। कबीर की रचनाओं में यथार्थबोध के साथ ही व्यंग्य की तीव्रधार है। उनमें अक्खड़पन, निर्भीकता और दो टूक बात कहने की क्षमता है। कबीर ने अपनी अंत: साधना और अनुभूतियों को अपनी उलटबासियों में असामान्य प्रतीकों के द्वारा प्रकट किया है। कवि के रूप में कबीर जीवन के अत्यंत निकट हैं। सहजता उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता है।

इस काल के अन्य प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ हैं :–

नानक	- असा दी वार, रहिरास, सोहिला, जपुजी, गुरु ग्रंथ साहिब (संकलित)
रैदास	- रैदासबानी (संकलित)
मलूकदास	- ज्ञानबोध, रत्नखान
सहजोबाई	- फुटकर पद
दादूदयाल	- हरडे बानी, अंग वधू
सुंदरदास	- सुंदर विलास

1.2.2 प्रेममार्गी शाखा

भारत में मुसलमानों के आने के साथ ही हिंदू और मुस्लिम सभ्यताओं का परस्पर संपर्क हुआ। आरंभ में वे एक-दूसरे से अलग-अलग बने रहे, परंतु समय के साथ-साथ धीरे-धीरे वे आपस में मिलने-जुलने लगे। कबीर ने उन्हें समझाने और आपस में मिलकर रहने का उपदेश दिया। कबीर ने कहा कि हम सबको पैदा करने वाला ईश्वर या खुदा एक ही है। हम अज्ञान के कारण उसे अलग-अलग समझते हैं।

बाद में सूफी मत का उदय हुआ। सूफी संत हिंदुओं और मुसलमानों के आपसी मतभेद दूर करके उन्हें प्रेम के सूत्र में बाँधना चाहते थे। सूफी संतों का जीवन सरल, सीधा-सादा था और उनके उच्च आध्यात्मिक विचार थे। सूफीमत के कवियों ने लोक प्रचलित प्रेमाख्यानों के द्वारा अपने सिद्धांतों और विचारों को जनता के सामने रखा। ये प्रेमाख्यान कल्पित होते थे लेकिन उनमें ऐतिहासिक घटनाओं का भी समावेश होता था। इनका संबंध प्राय: हिंदू समाज से था। इनमें उन सूफी कवियों के हृदय की उदारता और समन्वय बुद्धि का पता लगता है। इन आख्यानों में ईश्वर के प्रति लौकिक प्रेम की झलक मिलती है। उनका मत था कि ईश्वर एक है। आत्मा और परमात्मा में कोई अंतर नहीं है।

इस शाखा की सभी रचनाएँ प्रबंधकाव्य हैं, मुक्तक नहीं। प्रेममार्गी कवियों ने प्राय: अवधी में

रचना की। काव्य के लिए इन्होंने दोहे और चौपाइयों का प्रयोग किया। प्रेमाख्यानों के सभी लेखक मुसलमान थे। किंतु उन पर भारतीय प्रभाव था। अपने भारतीय होने का परिचय देने के लिए इन कवियों ने नायिका के सतीत्व और उत्कृष्ट पति-प्रेम का वर्णन किया। प्रेममार्गी कवियों का वस्तु वर्णन बहुत आकर्षक नहीं है। इसका कारण यह था कि उनका ध्यान वस्तु वर्णन के बजाय अपने मत के प्रस्तुतीकरण पर रहता था। इन पर फारसी की मसनवी शैली का प्रभाव है।

इस संप्रदाय में ही हिंदी की रहस्यवादी कविता मिलती है। कबीर का रहस्यवाद जहाँ दार्शनिक रहस्यवाद था। वहीं सूफी मत का रहस्यवाद माधुर्य भावना का रहस्यवाद था। इस रहस्यवाद की अभिव्यक्ति प्रकृति की सहायता से हुई है।

आइए, अब हम संक्षेप में प्रेममार्गी सूफी शाखा की विशेषताओं को देखें :–

(i) यह प्रेममार्गी शाखा सूफी मत पर आधारित है। सूफी मत ईश्वर और जीव में प्रेम संबंध मानता है। इनमें आत्मा प्रेमी और परमात्मा प्रियतमा है।

(ii) इस शाखा के कवियों ने प्रेमाख्यानों द्वारा अपने सूफी प्रेममार्ग का प्रचार किया।

(iii) इस शाखा में भौतिक प्रेम द्वारा ईश्वरीय प्रेम का प्रतिपादन किया गया है। कवियों ने अपनी भावनाओं को प्रकट करने के लिए विभिन्न प्रतीकों का सहारा लिया।

(iv) इस शाखा के सभी कवि मुसलमान थे जो हिंदू धर्म की सामान्य बातों से परिचित थे।

(v) इस काल की सभी रचनाएँ प्रबंध काव्य हैं। उन पर फारसी की मसनवी शैली का प्रभाव था। इसलिए काव्य के आरंभ में ईश्वर वंदना, मुहम्मद वंदना तथा उस समय के बादशाह की स्तुति होती थी।

(vi) इनके प्रेमाख्यानों का कुछ भाग ऐतिहासिक होता था जिसमें कल्पना का सहारा लिया जाता था।

(vii) इस शाखा के कवियों का लक्ष्य प्रेममार्ग के द्वारा ईश्वर प्राप्ति था। उनके काव्य का उद्देश्य खंडन-मंडन नहीं था।

(viii) इस शाखा के कवियों ने माया को शैतान माना है।

(ix) इनकी सभी रचनाएँ अवधी भाषा में पाई जाती है जिनमें दोहा, चौपाई का प्रयोग किया गया है।

मलिक मुहम्मद जायसी

ये अमेठी के निकट जायस (उत्तर प्रदेश) के रहने वाले थे। इसी कारण इन्हें जायसी कहा जाता है। इनका जन्म संवत् 1550 में हुआ था। इनके द्वारा रचे हुए ग्रंथों में 'पद्मावत', 'अखरावट', 'कान्हावत' और 'आखिरी कलाम' प्रमुख हैं। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध 'पद्मावत' की कथावस्तु ऐतिहासिक है। इसमें चित्तौड़ के हिंदू राजा रत्नसेन की कथा है। इसलिए हिंदू जनता में इसके प्रति विशेष आकर्षण था और यह काफी लोकप्रिय भी हुई। इसमें इतिहास और कल्पना का अच्छा समन्वय है। 'अखरावट' में सूफी सिद्धांतों तथा ईश्वर और जगत के बारे में बताया गया है।

जायसी के गुरु सैयद मुइद्दीन थे। जायसी अपने समय के सिद्ध फकीरों में गिने जाते थे। जायसी को पंडितों और साधु संतों के सत्संग से वेद, पुराण, कुरान आदि धर्मग्रंथों का परिचय प्राप्त

हुआ जिससे वे जनता की धार्मिक भावना को संतुष्ट करने में विशेष रूप से सफल हुए। इन्होंने बहुत अधिक क्षेत्रों का भ्रमण किया जिसका परिचय 'पद्मावत' में वर्णित विभिन्न स्थलों की भौगोलिक स्थिति से मिलता है। 'पद्मावत' की कथा में प्रेम की पीर की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। इसमें पद्मावत की नायिका पद्मिनी परम सत्ता की प्रतीक है। रत्नसेन साधक का प्रतीक है तो राघव चेतन शैतान का। 'पद्मावत' की रचना में बोलचाल की अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है। यह मसनवी शैली में लिखा गया है। पद्मावत घटना प्रधान प्रबंध काव्य है। इसमें पात्रों का बहुत ही मनोवैज्ञानिक चित्रण है। नागमती का विरह वर्णन, उसका उन्माद, पशु-पक्षियों की उससे सहानुभूति, दांपत्य जीवन, प्राकृतिक दृश्यों का सजीव वर्णन स्वाभाविकता से सरल भाषा में किया गया है। गोरा-बादल के प्रसंग में वीर रस का सुंदर चित्रण है। इस काल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं :–

मंझन	-	मधुमालती
मुल्लादाउद	-	चंदायन
कुतुबन	-	मृगावती
उसमान	-	चित्रावली
नूर मोहम्मद	-	इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी

1.2.3 रामभक्ति शाखा

इससे पहले आप निर्गुण भक्ति की ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी शाखाओं के बारे में पढ़ चुके हैं। इनमें भगवान के निर्गुण स्वरूप की उपासना का वर्णन है। आइए, अब हम उन भक्त कवियों के बारे में जानें जिन्होंने भगवान के सगुण रूप की उपासना की है। सगुण कवि मानते थे कि भगवान पापियों का संहार करने के लिए संसार में अवतार लेते हैं और अपने भक्तों का कल्याण करते हैं। उनके मत में जीव ईश्वर का ही अंश है। ईश्वर और जीव में यही अंतर है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, आनंदमय और दयालु है जब कि जीव अल्पज्ञ है और उसकी शक्ति सीमित है। वह भगवान की दया पर निर्भर है।

निर्गुण भक्त कवियों ने संसार को मिथ्या यानी सारहीन कहा, परंतु सगुण भक्त कवियों का कहना था कि जिस संसार में भगवान जन्म लेते हैं वह संसार मिथ्या कैसे हो सकता है ? सगुण भक्त तो संसार को भी ईश्वर का ही रूप मानते हैं। यह संसार भगवान की लीला स्थली है।

इन सगुण भक्तों के आराध्यदेव की भिन्नता के कारण इस शाखा के दो भेद हो गए। एक वर्ग में राम के भक्त थे तो दूसरे में कृष्ण के उपासक। वैसे 'राम' और 'कृष्ण' दोनों ही भगवान विष्णु के अवतार हैं।

इनमें राम-भक्ति धारा का प्रवर्तन प्रसिद्ध दार्शनिक और आचार्य रामानुज के शिष्य रामानंद ने किया था। रामानंद ने संस्कृत के साथ जनभाषा में वैष्णव धर्म का प्रचार किया और भक्ति को ब्रह्म प्राप्ति का साधन बनाने पर जोर दिया। इस शाखा के कवि राम और सीता को अपना इष्टदेव मानते थे और सेवक-सेव्य (या दास्य) भाव से उनकी उपासना करते थे। इन्होंने राम के मर्यादा पुरुषोत्तम रूप का वर्णन किया है और रामराज्य की परिकल्पना द्वारा आदर्श लोक की कल्पना की है। इस शाखा के कवियों ने पुरुषोत्तम राम का प्रचार करते हुए लोक मंगल के लिए कविता का सहारा लिया।

इन कवियों ने वर्णाश्रम धर्म पर आधारित समाज व्यवस्था का समर्थन किया और वेद, शास्त्रों

और वैष्णव धर्म के आदर्शों की श्रेष्ठता प्रतिपादित की। इन्होंने ज्ञान और कर्म से भक्ति को श्रेष्ठ माना तथा भगवत कृपा को अधिक महत्व दिया।

रामानंद ने जिस रामभक्ति शाखा का विकास किया, आगे चलकर उसका बहुत अधिक विस्तार हुआ और वह खूब फली-फूली। कबीर, रैदास, मलूकदास आदि निर्गुण कवि भी रामानंद के ऋणी हैं। इसी शिष्य परंपरा में आगे चलकर रामभक्त गोस्वामी तुलसीदास हुए जिनका विश्व प्रसिद्ध 'रामचरितमानस' हिंदी साहित्य का सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ है और हमारी संस्कृति का पथ-प्रदर्शक है।

इस काल की भक्ति ने बिखरते हुए हिंदू समाज को संभालने का काम किया और उसे महान आदर्शों से युक्त किया। इस काल का साहित्य काव्यशास्त्र, काव्य सौंदर्य, भाषा आदि की दृष्टि से हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। इस काल में गोस्वामी तुलसीदास जैसे युग प्रवर्तक महाकवि हुए जिन्होंने हिंदू जाति के हृदय को छूने वाले भावों और सांस्कृतिक जीवन के अच्छे उदाहरण प्रस्तुत किए। इसलिए इस युग के साहित्य को हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है।

इस काल की रचनाओं में मुख्य रूप से अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है परंतु कुछ रचनाओं, जैसे– 'विनय पत्रिका', 'गीतावली' आदि में ब्रजभाषा का भी प्रयोग मिलता है।

आइए, अब रामभक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर डालें :-

(i) इस शाखा का प्रवर्तन रामानंद ने किया। उन्होंने भक्ति को ब्रह्म प्राप्ति का साधन माना।

(ii) इस शाखा के कवियों ने राम औरं सीता को अपना इष्टदेव माना और राम को विष्णु का अवतार मानकर सेवक-सेव्य भाव से उनकी उपासना की।

(iii) इस शाखा के कवियों ने किसी की प्रशंसा करने या धन कमाने के लिए कविता नहीं की बल्कि स्वांत: सुखाय कविता की।

(iv) इन कवियों ने लोक मर्यादा का प्रचार करते हुए लोक कल्याण के लिए काव्य लिखा।

(v) इस काल के कवियों में समन्वयवादी भावना कूट-कूटकर भरी हुई है।

(vi) इस काल के कवियों में नारी मात्र के प्रति अपार सम्मान की भावना है।

(vii) इनकी रचनाओं में जहाँ भाव पक्ष प्रबल है वहीं छंदों और अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।

(viii) इस काल की रचनाओं में मुख्य रूप से अवधी भाषा का और गौण रूप से ब्रजभाषा का प्रयोग मिलता है।

(ix) इस शाखा के प्रमुख कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं। इस शाखा के अन्य कवियों में नाभादास, केशवदास आदि भी उल्लेखनीय हैं।

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। इनका जन्म बाँदा जिला (उत्तर प्रदेश) के राजापुर गाँव में सन् 1540 में हुआ था। तुलसी का बचपन अभावों में बीता। जन्म होते ही इनके माता-पिता का देहांत हो गया था। पंद्रह वर्ष की आयु में इनका विवाह रत्नावली से हुआ था। कहा जाता है कि पत्नी के उपदेश से तुलसी विरक्त हो गए और भक्ति की ओर उन्मुख हो गए। इसके बाद वे

काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि अनेक तीर्थों में भ्रमण करते रहे।

राम के उदात्त चरित्र से मोहित होकर उन्होंने अयोध्या में ही 1574 ईस्वी में 'रामचरितमानस' की रचना प्रारंभ की। उन्होंने 'रामचरितमानस' में राम के जीवन को आधार बनाकर जीवन के विविध पक्षों का उद्घाटन किया। इस ग्रंथ में हृदय की विशालता, भाव-प्रसार की शक्ति और समन्वय की भावना कूट-कूटकर भरी है। वास्तव में तुलसी की रामकथा मानव-जीवन की संपूर्ण गाथा है। रामकथा मानवता के सर्वोच्च आदर्शों की स्थापना करती है। तुलसी के रामचरितमानस ने तत्कालीन निराश जनता में नए प्राण फूँकने का काम किया और लोगों में आत्मविश्वास जाग्रत किया। यथा–

जब-जब होहिं धरम कै हानी बाढ़ैहिं असुर अधम अभिमानी।

तब-तब धरि प्रभु विविध सरीरा हरैहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

तुलसीदास भगवान गौतम बुद्ध के बाद सबसे बड़े लोकनायक के रूप में जाने जाते हैं। उनके 'रामचरितमानस' को पढ़कर लाखों दुर्जन व्यक्तियों ने सज्जनता का मार्ग अपनाया।

उनके गीतिकाव्यों विनय पत्रिका, गीतावली और कृष्णगीतावली में भावनाओं की जो सरिता उमड़ती है, वैसा आवेग हिंदी साहित्य में दुर्लभ है। इस प्रकार तुलसीदास ऐसे महाकवि हैं जिनपर हिंदी साहित्य को गर्व है।

तुलसी जीवन के अंतिम दिनों में अनेक रोगों से ग्रस्त हो गए और 1623 ईसवी में उनका देहांत हो गया।

1.2.4 कृष्णभक्ति शाखा

आइए, सगुण भक्ति की रामभक्ति धारा के बारे में जानने के बाद अब हम उसकी दूसरी शाखा कृष्णभक्ति के बारे में जान लें।

कृष्णकाव्य के प्रारंभिक संकेत हमें चौथी शताब्दी में जयदेव और 15वीं शताब्दी में विद्यापति की रचनाओं से मिलते हैं। जयदेव के संस्कृत ग्रंथ 'गीत-गोविंद' और विद्यापति के पदों में राधाकृष्ण का रागात्मक चित्र प्रस्तुत किया गया है। विद्यापति की दृष्टि बाहरी दुनिया के आकर्षक रंगों पर गई, उनकी दृष्टि अंतर्जगत की ओर नहीं गई। उनकी कविता विलास की सामग्री बन गई, वह उपासना का साधन न हो सकी। इससे पूर्व बंगला में चंडीदास और चैतन्य महाप्रभु ने भी कृष्ण भक्ति के गीतों की रचना की। इसके बाद एक बार फिर कवियों का ध्यान कृष्णभक्ति की ओर गया।

रामकाव्य के समानांतर प्रवाहित होते हुए भी कृष्ण काव्यधारा को अधिक महत्व नहीं मिला। राम के ही समान कृष्ण भी विष्णु के अवतार थे। इन दोनों की भक्ति भावना में सैद्धांतिक अंतर है। रामभक्त कवि स्वयं को राम का सेवक या दास समझते थे जब कि कृष्णभक्त कवि कृष्ण को अपना सखा मानते थे। रामभक्त के लिए भक्त और भगवान के बीच मर्यादा और आदर का भाव था परंतु कृष्णभक्तों और भगवान के बीच प्रेमी और प्रेमिका का भाव था। ये दोनों ही अपने आपको भगवान के समक्ष पूर्णरूप से समर्पित करने में विश्वास रखते थे। श्रीमद्भागवत के व्यापक प्रचार से माधुर्य भक्ति का रास्ता खुला। आनंद का पूर्ण भाव कृष्ण में है। वे अपने भक्तों के लिए नित्य लीला करते हैं।

कृष्णभक्त मानते थे कि भक्त जीवन में जो कुछ भी करे वह भगवान को प्रसन्न करने के लिए करे अपने लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। भगवान स्वयं ही भक्त का ध्यान रखेंगे।

महान दार्शनिक वल्लभाचार्य और चैतन्य महाप्रभु ने कृष्णभक्ति का जो रूप रखा, वह अत्यंत आकर्षक था। उनके माधुर्य और वात्सल्य भाव की उपासना में कृष्ण के श्रृंगारिक रूप की ही प्रधानता रही जिसका प्रतिपादन इन्होंने बहुत कुशलता से किया। इसके साथ कृष्णभक्त कवियों पर वल्लभाचार्य के दार्शनिक चिंतन का भी विशेष प्रभाव पड़ा। वल्लभाचार्य के अनुसार यह सारी सृष्टि लीलामय है और वह परमब्रह्म की आत्मकृति है। जीव ब्रह्म का अंश है। वल्लभाचार्य के पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ ने वल्लभाचार्य की मृत्यु के बाद अपने शिष्यों में से आठ शिष्यों की एक मंडली बनाई। इन भक्त कवियों को 'अष्टछाप के कवि' कहते हैं। इन्होंने कृष्णभक्ति काव्य परंपरा को शक्तिशाली बनाया। ये कवि भगवान कृष्ण की लीलाओं के सुंदर पदों की रचना करते और उन्हें बारी-बारी से श्रीनाथ मंदिर में सुनाया करते थे। इन कृष्णभक्त कवियों में ज्ञान की अपेक्षा प्रेम और आत्मचिंतन की अपेक्षा आत्मसमर्पण की भावना अधिक पाई जाती है। **इन अष्टछाप के कवियों के नाम हैं - कुंभनदास, परमानंददास, सूरदास, कृष्णदास, गोविंदस्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास।** इन अष्टछाप के कवियों में पहले चार वल्लभाचार्य के शिष्य थे और बाद के चार उनके पुत्र विट्ठलनाथ के शिष्य थे।

आइए, अब कृष्णभक्ति शाखा की प्रमुख विशेषताओं पर एक दृष्टि डालें :–

(i) कृष्णभक्ति में भक्त स्वयं को सख्यभाव में देखता है।

(ii) इस भक्ति में भगवान की लीलाओं के वर्णन और कीर्तन पर अधिक बल दिया गया है। इसमें कवियों ने गेय मुक्तक पद लिखे हैं ।

(iii) कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि 'अष्टछाप' के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये वल्लभाचार्य और उनके पुत्र विट्ठलनाथ के शिष्य थे।

(iv) कृष्णभक्ति शाखा के कवियों की रचनाओं में अधिकांशत: कृष्ण के लोकरंजक रूप का वर्णन हुआ है।

(v) कृष्णभक्ति काव्यधारा के कवियों की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है। इनकी रचनाओं में श्रृंगार और वात्सल्य रसों की प्रधानता है और अलंकारों (शब्दालंकारों और अर्थालंकारों) का अच्छा प्रयोग हुआ है।

(vi) इस शाखा के कवियों ने ज्ञान एवं कर्म के स्थान पर भक्ति को महत्व दिया। इनकी ज्यादातर रचनाएँ पदों में हैं। इसलिए इनका काव्य गीतिकाव्य माना जाता है।

सूरदास

वल्लभाचार्य के शिष्यों में सबसे प्रमुख शिष्य कवि सूरदास थे। कहा जाता है कि इनका जन्म सन् 1478 में रूनकता में हुआ। यह गाँव आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क पर स्थित है। किशोरावस्था में ही विरक्त होकर वे मथुरा चले गए और बाद में वृंदावन के बीच गऊ घाट पर रहने लगे। कहा जाता है कि वे जन्मांध थे। किंतु यह कथन सत्य प्रतीत नहीं होता क्योंकि जिस तरह का हृदयग्राही और जीवंत प्रकृति-चित्रण, वात्सल्य और श्रृंगार का चित्रण उन्होंने किया है उससे लगता है कि वे जन्मांध नहीं थे।

गऊ घाट पर जब सूरदास रहने लगे, तभी उनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई। वहीं पर उन्होंने वल्लभाचार्य को गीत गाकर सुनाया जिससे प्रभावित होकर वल्लभाचार्य ने सूरदास को अपना शिष्य बना लिया। महाप्रभु वल्लभाचार्य के आदेश पर ही सूरदास ने श्रीमद्भागवत के आधार पर कृष्ण

लीला का नाना प्रकार से वर्णन किया है। उनके द्वारा रचित तीन ग्रंथ मिलते हैं - सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी। सूरसागर इनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। कहा जाता है कि इसमें सवा लाख पद हैं। सूरसागर में सूरदास ने कृष्ण की बाल लीलाओं का जैसा सुंदर वर्णन किया है वैसा हिंदी के किसी अन्य कवि ने नहीं किया। एक पद देखिए –

'मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी।।'

इस पद में माँ बालक को दूध न पीने पर उसे लालच देती है कि दूध पीने पर चोटी बढ़ने लगेगी। कई बार दूध पीने पर भी जब चोटी नहीं बढ़ती तो बाल कृष्ण कहते हैं कि मैया अब भी मेरी चोटी क्यों नहीं बढ़ती ?

इस प्रकार के पदों में कितना वात्सल्य, स्नेह है और उसका कितना सूक्ष्म निरीक्षण और स्वाभाविक वर्णन है। उनकी सूक्ष्म दृष्टि भी बहुत पैनी थी। वात्सल्य वर्णन में सूर के जोड़ का कोई अन्य कवि नहीं है।

सूर हिंदी साहित्य के सूर्य के समान हैं। उन्होंने केवल भाव और भाषा की दृष्टि से ही साहित्य की श्रीवृद्धि नहीं की बल्कि धार्मिक क्षेत्र में ब्रजभाषा में कृष्णकाव्य की एक विशिष्ट परंपरा को भी जन्म दिया। सूर से पहले ब्रजभाषा का रूप बहुत ही सीमित था। सूर ने संस्कृत मिश्रित साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया। सूर ने वात्सल्य के साथ श्रृंगार और शांत रसों को अपनाया। इन्होंने श्रृंगार के वियोग पक्ष पर अधिक ध्यान दिया और गोपियों के विरह वर्णन को अत्यधिक उच्च स्तर पर पहुँचा दिया। उसे पढ़ते हुए यही लगता है कि श्री कृष्ण उनके आराध्य हैं।

कृष्ण के युवा होने पर उनके तथा गोपियों के प्रेम का वर्णन भी बहुत सुंदर है। कृष्ण जब गोपियों को छोड़कर मथुरा जाते हैं उस समय कृष्ण के वियोग में गोपियों की विरह भावना का चित्रण हृदय को छू लेता है। ऐसे प्रसंगों में सूर ने निर्गुण भक्ति की अपेक्षा सगुण भक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध की है। गोपी विरह के पद **'भ्रमर गीत'** के नाम से जाने जाते हैं जो हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। यथा,

निरगुन कौन देस कौ बासी ?
मधुकर कहि समझाइ सौंह दै, बूझतिं साच न हाँसी।
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी।।

भाग-ख : रीति काल

1.3 रीति काल

आइए हम हिंदी साहित्य के तीसरे काल रीति काल या उत्तर मध्य काल के बारे में जानकारी प्राप्त करें। रीति काल का अध्ययन आरंभ करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि रीति शब्द से क्या अभिप्राय है ? रीति शब्द का सामान्य अर्थ है 'पद्धति' या 'तरीका'। यहाँ रीति से अभिप्राय है 'काव्य रचना की पद्धति'। इस काल में कवियों ने काव्य की पद्धति या नियमों के अनुसार काव्य रचना की। इस काव्य पद्धति का आधार संस्कृत ग्रंथों को बनाया गया। संस्कृत भाषा में काव्य सिद्धांतों के आधार पर अनेक लक्षण ग्रंथ लिखे गए हैं। **रीति काल को श्रृंगार काल नाम से भी जाना जाता है।**

यह सौंदर्य और कला की उपासना का युग था। राजा कला प्रेमी थे। उनके राजदरबार में कलाकारों और कवियों को आश्रय मिलता था। शासकों की रुचि विलास और अलंकरण की ओर थी, इसलिए कवियों को उनकी रुचि के अनुसार कविता करनी पड़ती थी। श्रृंगार की प्रवृत्ति पूरे वातावरण में व्याप्त हुई और दरबारी संस्कृति का विकास हुआ। रीति कालीन कविता तो 'राधा-कन्हाई सुमरन को बहानो' है।

अधिकांश कवि ब्रजभाषा में मुक्त छंदों और गेय पदों में कृष्ण की लीलाओं के वर्णन में संलग्न थे। उन्होंने कृष्ण और राधा के सौंदर्य वर्णन में अपनी सारी शक्ति लगा दी। रीति काल के दरबारी कवियों की रचनाओं में कृष्ण और गोपियों के प्रेम की लीलाएँ लिखने की प्रवृत्ति बढ़ चली। इसलिए, आश्रयदाता राजाओं-सामंतों से पुरस्कार पाने और जनता की वाहवाही लूटने के लिए उनकी कविता श्रृंगारमयी हो गई। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि अन्य उत्कृष्ट कोटि की काव्यात्मक रचनाएँ उनके सामने दब गईं।

1.3.1 राजनीतिक परिस्थितियाँ

अब तक देश पर मुगलों का शासन अच्छी तरह जम चुका था। मुगल सम्राट अकबर के बाद जहाँगीर और शाहजहाँ के काल में हिंदी प्रदेश में सुख और शांति का वातावरण था। लोग सुखी और संपन्न थे। ऐसे में दरबारी जीवन पूर्णरूप से श्रृंगारमय हो गया। यहाँ तक कि छोटे-छोटे सामंतों के यहाँ भी सुरा-सुंदरियों का बोलबाला था। उनके यहाँ राग-रंग और सुंदरियों के नृत्यों का आयोजन आम बात थी। ऐसे विलासपूर्ण वातावरण में हिंदी कविता भी श्रृंगार की ओर झुकती गई। कवि अपने आश्रयदाताओं को खुश करने के लिए चमत्कारपूर्ण कविताएँ रचने लगे और लोक जीवन से हटकर कविता दरबारों में सजावट का साधन बन गई।

1.3.2 सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियाँ

ऐसे राजनीतिक माहौल और विदेशी शासन के प्रभाव से धार्मिक-क्रियाकलाप मंद हो गए। धार्मिक भावनाओं को स्पष्ट अभिव्यक्ति न मिल पाने के कारण हिंदू जनमानस घुटन भरे वातावरण में जीने के लिए मजबूर हो गया। धार्मिक संप्रदाय अपनी सुरक्षा के लिए अपने आप में सिमट गए। समाज अनेक जातियों और उपजातियों में बँटने लगा। अंधविश्वासों, धार्मिक रूढ़ियों और आडंबरों ने समाज के जीवन को खोखला बना दिया। छोटे-छोटे सामंत भी मुगलों की तरह दरबार सजाने लगे और इसके लिए किसानों और श्रमिकों का शोषण करने लगे और विलासिता पूर्ण जीवन जीने लगे। फलस्वरूप उनकी रुचि आत्मप्रशंसा वाली कविता तक ही सीमित रह गई।

इस समय की कविता यद्यपि हमारे समाज की दृष्टि से बहुत हितकारी नहीं थी फिर भी उसका कुछ न कुछ महत्व अवश्य है। राजदरबारों के श्रृंगारमय वातावरण में पली इस काल की कविता कहीं-कहीं इतनी सरस और हृदय को छूने वाली है कि पाठक एक बार तो उसमें खो-सा जाता है।

1.4 रीति काव्य धाराएँ

रीति काल का काव्य हमें निम्नलिखित धाराओं में प्रवाहित होता दिखाई देता है :–

1. रीतिबद्ध काव्यधारा - प्रमुख कवि : केशवदास, चिंतामणि, मतिराम, भूषण, सेनापति, देव, पद्माकर, बिहारीलाल आदि।

2. रीतिमुक्त काव्यधारा - प्रमुख कवि : रसखान, घनानंद, आलम, बोधा, ठाकुर, द्विजदेव आदि।

अब हम क्रमशः उपर्युक्त धाराओं और उनसे संबंधित कवियों और काव्य की प्रवृत्तियों पर संक्षेप में विचार करेंगे।

1.4.1 रीतिबद्ध धारा

रीतिबद्ध धारा के कवियों ने काव्य रचना करते समय काव्यशास्त्र के सिद्धांतों का अनुसरण किया और इन्हें ध्यान में रखते हुए काव्य रचना की। रीतिबद्ध काव्य की मुख्य प्रवृत्तियों का उल्लेख निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है। इस काल में–

(i) लक्षण ग्रंथों की रचना हुई।

(ii) लौकिक श्रृंगार भावना की व्यंजना हुई।

(iii) कला पक्ष को विशेष महत्व मिला।

(iv) मुक्तक काव्यों की रचना हुई।

(v) प्रकृति का श्रृंगार रस के उद्दीपन के रूप में चित्रण किया गया।

रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख कवि आचार्य केशवदास (कविप्रिया, रसिकप्रिया), चिंतामणि त्रिपाठी (काव्य प्रकाश, श्रृंगार मंजरी), मतिराम (रसराज, छंदसारपिंगल), भूषण (शिवराज भूषण, शिवाबावनी), देव (भावविलास, रसविलास) और पद्माकर (पद्माभरण, जगतविनोद) हैं। इनमें से दो कवियों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है–

केशवदास (1555-1617)

केशवदास को भक्ति काल और रीति काल दोनों युगों को जोड़ने वाला कवि कहा जाता है। कुछ विद्वान इन्हें रीति परंपरा का प्रवर्तक मानते हैं। ये ओरछा नरेश के भाई इंद्रजीत सिंह के सभासद थे। आचार्यत्व और कवित्व दोनों ही दृष्टियों से इनका हिंदी साहित्य में गौरवपूर्ण स्थान है। इन्होंने ब्रजभाषा में मुक्तक पदों के साथ प्रबंध काव्य की रचना की भी शुरुआत की। 'रामचंद्रिका' इनका प्रबंध काव्य है। इसके संवाद प्रशंसनीय हैं। इसमें काव्य लक्षणों के उदाहरण मिलते हैं। केशवदास का काव्य संस्कृत-काव्यशास्त्र के आचार्यों का अनुसरण है। 'कविप्रिया', 'रसिकप्रिया' और 'नखशिख' ने हिंदी साहित्य की दिशा बदलने का संकेत दिया। 'कविप्रिया' और 'रसिकप्रिया' में इन्होंने कृष्ण को साधारण नायक के रूप में चित्रित किया है।

पद्माकर (1753-1833)

पद्माकर का जन्म बाँदा निवासी मोहन लाल भट्ट के यहाँ हुआ था। पद्माकर का समस्त परिवार ही काव्य लेखन में रुचि रखता था इसलिए इनके वंश का नाम 'कवीश्वरवंश' पड़ गया था। ये रीतिकाल के अंतिम श्रेष्ठ कवि हैं। अपनी काव्य कुशलता के कारण ये बाद के रीतिकालीन कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में श्रृंगार के सभी अंगों का वर्णन कुशलता से किया है। इनके ऋतु वर्णन में जीवंतता और चित्रात्मकता है। इनके काव्य में अनुप्रास की छटा देखते ही बनती है। इनके काव्य में रसमाधुर्य, सौंदर्य, प्रेम और विलास का सुंदर चित्रण भी मिलता है। इन्होंने सागर

नरेश अप्पा साहब की प्रशंसा में एक छंद पढ़कर सुनाया, जिस पर मुग्ध होकर अप्पा साहब रघुनाथ राव ने इन्हें एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के रूप में भेंट कीं। इनके प्रमुख ग्रंथ हैं - पद्माभरण, जगद्विनोद, हिम्मद बहादुर विरदावली और राम रसायन आदि।

बिहारीलाल (1600-1663)

बिहारीलाल हिंदी साहित्य के आकाश में चमकते हुए नक्षत्र की तरह प्रकट हुए और इन्होंने अपनी प्रतिभा की ज्योति चारों ओर विकीर्ण कर दी। बिहारी रीतिकालीन काव्यधारा के एक प्रतिभाशाली कवि थे। इन्होंने अपने पांडित्य और काव्य प्रतिभा का प्रदर्शन 'बिहारी सतसई' में किया।

कहते हैं कि बिहारी किसी आश्रयदाता की खोज में जयपुर के राजा जयसिंह के महल में पहुँचे। उस समय राजा राजकाज छोड़कर अपनी छोटी रानी के प्रेमपाश में बंधे थे। तब बिहारी ने राजा के पास एक दोहा लिखकर भिजवाया। दोहा था –

"नहिं पराग नहिं मधुर-मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सों बंध्यो, आगे कौन हवाल।।"

इस दोहे को पढ़कर राजा रनिवास से बाहर निकले। उन्होंने बिहारी की प्रतिभा को पहचाना और उन्हें अपने दरबार में रख लिया। राजा की आज्ञा से बिहारी ने 'सतसई' लिखी जिसके प्रत्येक दोहे के लिए राजा ने उन्हें एक-एक अशर्फी भेंट की।

उनकी '**बिहारी सतसई**' मुक्तक रचना है। बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया। छोटे-छोटे दोहों में बड़े से बड़े भावों को संपूर्ण घटना या क्रियाकलाप को समाहित कर देना उनकी विशेषता है। उनके दोहों में भावों की व्यंजना और ध्वन्यात्मकता सर्वत्र मिलती है। देखिए, नीचे दिए दोहे में कितने भावों और क्रियाकलापों को माला की तरह एक सूत्र में पिरो दिया गया है :–

"कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैनन हीं सौं बात ।।"

हिंदी में बिहारी को एक बेजोड़ कवि माना जाता है। इनका ब्रजभाषा पर असाधारण अधिकार था। इन्होंने श्रृंगार के अतिरिक्त भक्ति, वैराग्य और नीति संबंधी दोहे भी लिखे हैं जिनमें उनकी काव्य प्रतिभा का दूसरा पक्ष भी उजागर होता है। वास्तव में 'बिहारी सतसई' हिंदी साहित्य का अनुपम ग्रंथ है तथा बिहारी साहित्य के गौरव हैं। 'सतसई' में रस अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि सभी का बहुत ही सटीक प्रयोग हुआ है। बिहारी के दोहों में काव्य रूढ़ियों की सहायता से वस्तु व्यंजना के लिए चमत्कार दिखाई देता है। इनके दोहों में नायक-नायिका की चेष्टाओं का वर्णन बहुत सधे ढंग से हुआ है। जैसे–

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं भौंहनि हँसै, दैन कहैं नटि जाइ।

1.4.2 रीतिमुक्त धारा

यह काव्यधारा रीति परंपरा के साहित्यिक बंधनों और रूढ़ियों से मुक्त है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काव्यधारा को स्वच्छंद या रीतिमुक्त काव्यधारा कहा है। स्वच्छंतावादी साहित्य में नयापन रहता है और उसकी प्रेरणा आंतरिक अनुभूतियों से होती है। रीतिमुक्त कवियों के वर्णन का विषय और वर्णन

शैली दोनों ही काव्य की निर्धारित परंपरा से मुक्त हैं। इस काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं :–

(i) रीतिमुक्त धारा की कविता आंतरिक अनुभूतियों से पूर्ण है।

(ii) इस काव्यधारा का काव्य व्यक्तिनिष्ठ और आत्मपरक है।

(iii) इस धारा की कविता रूढ़ियों और बंधनों से मुक्त है।

(iv) यह काव्य भाव प्रधान अधिक है और कला प्रधान कम है।

(v) इस काव्यधारा की प्रमुख विशेषता स्वछंदता है।

(vi) इस काव्यधारा में प्रेम का वर्णन व्यथा प्रधान है और संयोग में भी पीड़ा की अनुभूति होती है।

(vii) रीतिमुक्त काव्य में कृष्णलीलाओं का प्राधान्य दिखाई देता है। इन कवियों ने कृष्ण के अलौकिक आलंबन के सहारे अपने उन्मुक्त प्रेम का भी वर्णन किया है।

(viii) काव्य में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग अत्यंत स्वाभाविक रूप से हुआ है।

(ix) इस काव्यधारा में भाषा का प्रयोग विषय और भावों के अनुसार है। इसमें ब्रजभाषा की प्रौढ़ता, माधुर्य और उसका सहज, सरल रूप मिलता है।

रीतिमुक्त काव्यधारा में घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा और द्विजदेव आदि का योगदान उल्लेखनीय है। इनमें से दो प्रमुख कवियों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :–

घनानंद (1689-1739)

घनानंद रीतिमुक्त धारा के प्रमुख कवि हैं। ये बचपन से ही विद्याप्रेमी थे। इन्हें फारसी और संगीत का अच्छा ज्ञान था। ये रासलीला देखने और उसमें भाग लेने के शौकीन थे। घनानंद मुहम्मदशाह रंगीले के मीरमुंशी थे। इनका रंगीले के दरबार की सुजान नामक वेश्या से प्रेम हो गया, परंतु उसके कठोर व्यवहार के कारण इनके हृदय पर गहरा आघात लगा जिसके कारण इन्हें संसार से वैराग्य हो गया और ये वृंदावन चले आए। यहाँ निंबार्क संप्रदाय के एक साधु से दीक्षा लेकर श्रीकृष्ण की उपासना में मग्न हो गए। इसमें कोई संदेह नहीं कि सुजान ही उनके काव्य की मूल प्रेरणा थी। इनके काव्य में प्रेम की तन्मयता और उन्मुक्त पद रचना मिलती है। इन्होंने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का चित्रण किया, परंतु संयोग के बजाय वियोग के चित्रण में इन्हें अधिक सफलता मिली। इसीलिए इन्हें प्रेम की मस्ती और वियोग श्रृंगार का कवि कहा जाता है। यहाँ तक कि इन्हें संयोग में भी वियोग की अनुभूति होती है, एक पद देखिए –

बीती औधि आवन की, लाल मन भावन की
डग भई बावन की, सावन की रतियाँ।

इन्होंने प्रेम की भावना का सहज चित्रण किया। इस प्रेम की भावना में एकनिष्ठता और तन्मयता है। उनका 'सुजान' के प्रति लिखा एक सवैया देखिए –

परकारज देह को धारे फिरौ, परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधिनीर सुधा के समान करौ, सब ही विधि सुंदरता सरसौ।
घन आनंद जीवन दायक हौ, कबौ मेटियो पीर हियो परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के, आँगन में अँसुवान को लै बरसौ।

इसमें कवि का कहना है कि तुमने दूसरों के उपकार के लिए शरीर धारण किया है तो परजन्य (बादल) के रूप में दिखाई दो। तुम दूसरों के जीवनदाता हो तो तुम मेरे हृदय को स्पर्श कर कब उसकी पीड़ा दूर करोगे और कब उस विश्वासघाती 'सुजान' के आँगन में मेरे आँसुओं की वर्षा करोगे ?

घनानंद की कविता अनेक अनूठी उक्तियों से भरी पड़ी है। इनका काव्य ब्रजभाषा में है जो सहज और सरल है। लोकोक्तियों और मुहावरों ने इनकी शैली में चमत्कार उत्पन्न कर दिया है। इन्होंने लगभग 40-42 पुस्तकें लिखी हैं। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ - 'सुजान सागर', 'घनानंद कवित्त', 'कृष्ण कौमुदी', 'विरह लीला' आदि हैं।

घनानंद की भाषा शुद्ध साहित्यिक ब्रजभाषा है। उसमें बोलचाल की ब्रजभाषा के शब्द भी मिलते हैं। घनानंद ने अपनी रचनाओं में कलापक्ष की अपेक्षा भावपक्ष पर अधिक ध्यान दिया है। रस की दृष्टि से इनकी रचनाएँ श्रृंगार रस प्रधान हैं। श्रृंगार में भी वियोग पक्ष के ये अमर कवि हैं।

आलम

ये अठारहवीं शती के कवि थे। ये औरंगजेब के पुत्र मुअज्जम के आश्रय में रहते थे। 'आलम' जाति के ब्राह्मण थे। परंतु एक शेख रंगरेजिन जो कवयित्री थीं, के प्रेम में पड़कर ये मुसलमान हो गए। आलम की रचना में प्रेम की असीम तन्मयता के चित्र हैं। उसमें श्रृंगार रस का मनोहारी चित्रण है जो पाठक को भाव विभोर कर देता है। इनका प्रेम लौकिक प्रेम है। भले ही इसमें राधा-कृष्ण के नामों का सहारा लिया गया है। इनके काव्य में भाव (हृदय) पक्ष की प्रधानता है जिसमें श्रृंगार संबंधी उक्तियाँ हैं। इनकी भाषा परिमार्जित और व्यवस्थित है। इनकी रचनाओं पर भी फारसी का प्रभाव है। इनकी रचनाओं का संग्रह 'आलम कलि' के नाम से प्रसिद्ध है।

उपर्युक्त रीतिबद्ध और रीतिमुक्त कवियों के अतिरिक्त भी अन्य अनेक ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने रस, अलंकार, छंद आदि काव्य के विभिन्न अंगों पर रचनाएँ लिखकर अपने कवित्व का परिचय दिया। इनमें प्रमुख हैं - भिखारी दास, ठाकुर, बोधा, वृंद, रसलीन, मतिराम, सेनापति, देव, जसवंत सिंह, दूलह, गुरुगोविंद सिंह, महाराज विश्वनाथ सिंह, गिरिधर कविराज आदि।

पाठ-8 : आधुनिक काल : भारतेंदु युग और द्विवेदी युग काव्यधारा (द्वितीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0 आधुनिक काल 37

1.1 भारतेंदु युग 37

1.1.1 प्रमुख कवि 37

–भारतेंदु हरिश्चंद्र 37

–बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' 38

–प्रतापनारायण मिश्र 38

–राधाकृष्ण दास 38

1.2 द्विवेदी युग 39

1.2.1 प्रमुख कवि 40

–श्रीधर पाठक 40

–महावीर प्रसाद द्विवेदी 40

–अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' 40

–मैथिलीशरण गुप्त 41

–रामनरेश त्रिपाठी 41

1.0 आधुनिक काल

1.1 भारतेंदु युग

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय इतिहास में नये युग का प्रारंभ होता है। इसे भारतेंदु युग या पुनर्जागरण काल भी कहा जाता है। भारतेंदु जी बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार थे। उन्होंने गद्य-पद्य में समान रूप से लिखा। भारतेंदु और उनके सहयोगियों ने रीतिकालीन काव्य परंपरा से हटकर आधुनिक हिंदी कविता को जिन प्रवृत्तियों की ओर मोड़ा, उनमें राष्ट्रीयता तथा देशभक्ति का स्वर सर्वप्रमुख और सर्वोच्च था। इन कवियों ने देश के उत्कर्ष के लिए जनमानस में राष्ट्रीय भावना जगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। अंग्रेजों की शोषण नीति, भारत की आर्थिक दुरावस्था तथा किसान मजदूरों की दीन-हीन दशा के यथार्थ चित्रण में तत्कालीन कवियों की देशभक्ति का स्वर मुखरित हुआ है।

इस काल के कवियों ने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों तथा पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण की कटु आलोचना कर भारतीय समाज में स्वस्थ और प्रगतिशील परंपराओं की पुनर्स्थापना पर बल दिया। स्त्रियों की अशिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा, छुआछूत और जाति-पातिगत भेदभाव की समस्या ने विशेष रूप से इन कवियों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया।

भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की कामना से इस युग के कवियों ने स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देने और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने पर भी बल दिया।

इस काल में पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार से हिंदी काव्य को जनमानस के निकट लाने में पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई। कविता को सामान्य पाठकों की दृष्टि से आकर्षक और उपयोगी बनाने के लिए कवियों को उसमें रोचकता का समावेश करना पड़ा। हास्य व्यंग्य इसी रोचकता का एक महत्वपूर्ण अंग बनकर काव्य में समाविष्ट हुआ। इस काल की रचनाओं में पश्चिमी सभ्यता, विदेशी शासन, सामाजिक अंधविश्वासों पर किए गए चुभते व्यंग्य बहुत अच्छे बन पड़े हैं।

काव्य रूप की दृष्टि से भारतेंदु युगीन कवियों ने प्रधानतः मुक्तक काव्य की रचना की है। इस काल में प्रगीत लोक संगीत की शैली भी काफी लोकप्रिय रही। प्रेमघन और प्रतापनारायण मिश्र की 'कजलियाँ' तथा प्रतापनारायण मिश्र और राधाचरण गोस्वामी की 'लावनियाँ' इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

इस काल के कवियों की प्रमुख भाषा ब्रज थी। भारतेंदु युग के कुछ कवियों ने खड़ी बोली में भी काव्य रचना की, किंतु यह इस युग की प्रतिनिधि काव्य भाषा नहीं बन सकी। भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमघन और प्रतापनारायण मिश्र की खड़ी बोली-कविताएँ संख्या में बहुत ही कम हैं।

1.1.1 प्रमुख कवि

इस काल के प्रमुख कवियों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, अंबिकादत्त व्यास और राधाकृष्ण दास प्रमुख हैं। प्रमुख कवियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :–

भारतेंदु हरिश्चंद्र

कविवर हरिश्चंद्र (1850-1885) इतिहास प्रसिद्ध सेठ अमीचंद की वंश परंपरा में उत्पन्न हुए थे। उनके पिता बाबू गोपालचंद गिरिधरदास भी अपने समय के प्रसिद्ध कवि थे। हरिश्चंद्र ने बाल्यावस्था से ही काव्य रचना प्रारंभ कर दी थी। उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर ही तत्कालीन साहित्यकारों ने

1880 ई. में उन्हें 'भारतेंदु' की उपाधि से सम्मानित किया था। कवि होने के साथ ही वे पत्रकार भी थे। 'कविवचन सुधा' और 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' उनके संपादन में प्रकाशित होने वाली प्रसिद्ध पत्रिकाएँ थीं। उनकी काव्य कृतियों की संख्या 70 है। इनमें प्रमुख हैं–प्रेम मालिका, प्रेम माधुरी, प्रेम सरोवर, प्रेम फुलवारी, वर्षा-विनोद, वेणु गीत, विनयप्रेम पचासा।

वैसे 'भारतेंदु ग्रंथावली' के प्रथम भाग में उनकी सभी छोटी-बड़ी रचनाएँ संकलित हैं। भारतेंदु की प्रमुख विशेषता यह है कि अपनी अनेक रचनाओं में जहाँ वे प्राचीन काव्य-प्रवृत्तियों के अनुवर्ती रहे, वहीं नवीन काव्यधारा के प्रवर्तन का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है। कविता के क्षेत्र में वे नवयुग के अग्रदूत थे। अपनी ओजस्विता, सरलता और भाव मर्मज्ञता में उनका काव्य प्राणवान है और उस युग के सभी कवि उनसे प्रभावित रहे। उनकी काव्य शैली का एक उदाहरण देखिए–

अंगरेजं राज सुखसाज महासुख भारी
पै धन विदेश चली जात इहै अति ख्वारी।

बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

प्रेमघन का जन्म उत्तर प्रदेश के एक संपन्न ब्राह्मण कुल में हुआ था। भारतेंदु की भाँति उन्होंने भी पद्य और गद्य दोनों में विपुल साहित्य रचना की। 'अब्र' नाम से उन्होंने उर्दू में कविताएँ भी लिखी हैं। 'जीर्ण जनपद', 'आनंद अरुणोदय', 'हार्दिक हर्षादर्श', 'मयंक महिमा', 'अलौकिक लीला', 'वर्षा बिंदु' आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं जो 'प्रेमघन सर्वस्व' के प्रथम भाग में संकलित हैं। इनकी काव्य रचना का मुख्य क्षेत्र जातीयता, समाज-दशा और देश प्रेम की अभिव्यक्ति है। उन्होंने मुख्यतः ब्रजभाषा में काव्य रचना की है। छंदोबद्ध रचनाओं के अतिरिक्त उन्होंने लोक संगीत की कजली और लावनी शैलियों में सरस कविताएँ लिखी हैं।

प्रतापनारायण मिश्र

'ब्राह्मण' पत्रिका के संपादक प्रतापनारायण मिश्र का जन्म उन्नाव जिले में हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा कानपुर में हुई। ज्योतिष का पैतृक व्यवसाय न अपनाकर वे साहित्य रचना की ओर प्रवृत्त हुए। कविता, निबंध और नाटक उनके मुख्य रचना क्षेत्र हैं। 'प्रेम पुष्पावली', 'मन ही लहर', 'लोकोक्ति शतक', 'तृप्यंताम' और 'श्रृंगार विलास' उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'प्रताप लहरी' उनकी प्रतिनिधि कविताओं का संग्रह है। भारतेंदु की भाँति उन्होंने भी विभिन्न विषयों को लेकर काव्य रचना की है, किंतु भक्ति और प्रेम की तुलना में समसामयिक देश-दशा और राजनीतिक चेतना का वर्णन उन्होंने अत्यधिक मनोयोग से किया है। इस संदर्भ में उनकी ये पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

पढ़ि कमाय कीन्हों कहा, हरे देशस कलेस
जैसे कंता घर रहे, तैसे रहे विदेश।

राधाकृष्ण दास

राधाकृष्ण दास बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कविता के अतिरिक्त उन्होंने नाटक, उपन्यास और आलोचना के क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय साहित्य रचना की है। उनकी कविताओं में भक्ति, श्रृंगार और समकालीन राजनीतिक चेतना को विशेष स्थान प्राप्त हुआ है। 'भारत बारहमासा' और 'देश दशा' समसामायिक भारत के विषय में उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। कुछ कविताओं में प्रसंगवश प्रकृति के सुंदर चित्र भी देखे जा सकते हैं। राधाकृष्ण-प्रेम के निरूपण में भक्तिकाल और रीतिकाल की वर्णन परंपराओं का उन पर समान प्रभाव है। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए :–

मोहन की यह मोहिनी मूरत
जीय सों भूलत नाहिं भुलाये।
छोरन. चाहत नेह को नातो
कोऊ विधि छूटत नाहिं छुराये।

इस काल के अन्य कवियों में श्री अंबिका दत्त व्यास (पावस पचासा, सुकवि सतसई), जगमोहन सिंह (प्रेम संपत्ति लता, श्यामा लता, श्यामा स्वप्न, श्यामा सरोजिनी, देवयानी आदि) उल्लेखनीय हैं।

1.2 द्विवेदी युग

द्विवेदी युग को जागरण सुधार काल भी कहा जाता है। इस काल-खंड के पथ-प्रदर्शक, साहित्यकार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर द्विवेदी युग का नामकरण हुआ। राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना से अनुप्राणित जितना साहित्य द्विवेदी युग में लिखा गया, उतना अन्य किसी काल खंड में नहीं। रीतिकालीन् श्रृंगारिकता की जो प्रवृत्ति भारतेंदुयुगीन काव्य में अवशिष्ट रह गई थी, भारतेंदु के पश्चात् उसका भी विरोध हुआ और उसके स्थान पर आदर्श एवं नैतिकता से समन्वित काव्य की रचना हुई। ब्रजभाषा तथा अभिव्यक्ति की पुरानी शैलियों का परित्याग कर खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। कवियों को इस नवीन काव्य चेतना से अनुप्राणित कर उन्हें एक निश्चित दिशा प्रदान करने में द्विवेदी जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंदी साहित्य में द्विवेदी जी का महत्व इसलिए भी है कि उन्होंने तत्कालीन साहित्य में प्रचलित रूढ़ियों का संगठित और जबर्दस्त विरोध किया।

सन् 1903 में द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' का संपादन कार्य प्रारंभ किया और उसके माध्यम से खड़ी बोली हिंदी भाषा को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने में विशेष योग दिया। द्विवेदी युग साहित्यिक अनुशासन का युग बनकर आया। इस काल में व्याकरण, छंद, विषय, काव्य रूप सबकी मर्यादा निर्धारित की गई जिससे साहित्य संसार में नव जागरण की लहर आ गई। भारतेंदु युग में देशभक्ति का जो स्वर सुनाई पड़ा था, द्विवेदी युग में उसका उत्तरोत्तर विकास होता गया। इस युग के प्रायः सभी कवियों ने देशभक्तिपूर्ण कविताओं की रचना की। मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' में भारत की श्रेष्ठता की घोषणा निम्नलिखित पंक्तियों में की है :–

भूलोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीलास्थल कहाँ ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।

द्विवेदी युग में आचार्य द्विवेदी जी के नेतृत्व में रीतिकालीन श्रृंगारिकता का स्पष्ट विरोध किया गया और कविता के भीतर आदर्श एवं नैतिकता की प्रतिष्ठा हुई। मात्र मनोरंजन की भावना से दूर हटकर कविता में उचित उपदेशात्मकता का समावेश करने पर बल दिया गया। कविता के माध्यम से मनुष्य के हृदय में स्वार्थ-त्याग, कर्तव्य पालन, आत्म-गौरव आदि उच्चादर्शों की स्थापना का प्रयास किया गया।

गद्य के साथ-साथ पद्य के क्षेत्र में भी खड़ी बोली की व्यापक प्रतिष्ठा द्विवेदी युगीन हिंदी कविता की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। द्विवेदी जी के प्रयत्नों से उनके समय में खड़ी बोली के परिनिष्ठित स्वरूप की स्थापना हुई और व्याकरणिक अशुद्धियों का परिहार हुआ। द्विवेदी जी ने स्वयं कविताओं में सरल भाषा का प्रयोग किया और दूसरों को भी इस दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की।

1.2.1 प्रमुख कवि

श्रीधर पाठक (1859-1929)

इनका जन्म आगरा जिले के जोंधरी गाँव में हुआ था। हिंदी के अतिरिक्त इन्होंने अंग्रेजी और संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में कविताओं की रचना की है। खड़ी बोली के तो ये प्रथम समर्थ कवि कहे जा सकते हैं। देश-प्रेम, समाज-सुधार तथा प्रकृति-चित्रण इनकी कविता के प्रमुख विषय हैं। परंतु इनको सर्वाधिक सफलता प्रकृति-चित्रण में प्राप्त हुई है।

पाठक जी कुशल अनुवादक भी थे। कालिदास कृत 'ऋतुसंहार' तथा गोल्डस्मिथ कृत 'हरमिट', 'डेजर्टेड विलेज' तथा 'द ट्रैवेलर' का काव्य अनुवाद इन्होंने क्रमशः 'एकांतवासी योगी', 'ऊजड़ ग्राम' और 'श्रांत पथिक' नाम से किया है। इनकी मौलिक कृतियों में 'वनाष्टक', 'कश्मीर सुषमा', 'देहरादून' और 'भारत गीत' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938)

इनका जन्म जिला रायबरेली के दौलतपुर नामक ग्राम में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा उन्नाव से प्राप्त करने के बाद ये मुंबई चले गए। मुंबई में इन्होंने संस्कृत, गुजराती, मराठी और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। आजीविका के लिए द्विवेदी जी ने रेलवे में नौकरी की किंतु उच्चाधिकारी से कुछ कहा-सुनी होने के कारण इन्होंने नौकरी छोड़ दी और पूर्णतया हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा में जुट गए।

सन् 1903 में ये सरस्वती के संपादक बने और 1920 तक कार्य करते रहे। सरस्वती के संपादक के रूप में इन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के उत्थान के लिए जो कार्य किया, वह चिरस्मरणीय रहेगा। इनके प्रोत्साहन और मार्गदर्शन के परिणामस्वरूप कवियों और लेखकों की एक पीढ़ी का निर्माण हुआ। खड़ी बोली को परिष्कार तथा स्थिरता प्रदान करने वालों में ये अग्रगण्य हैं। ये कवि, आलोचक, निबंधकार, अनुवादक तथा संपादक थे। इनके लिखे मौलिक और अनूदित गद्य-पद्य ग्रंथों की संख्या लगभग 80 है। मौलिक काव्य रचना की ओर इनकी विशेष प्रवृत्ति नहीं थी। इनकी अनूदित काव्य कृतियाँ अधिक सरस हैं। 'काव्य मंजूषा', 'सुमन', 'कान्यकुब्ज-अबला-विलाप' (मौलिक पद्य), 'गंगा लहरी', 'ऋतु तरंगिणी', 'कुमार संभवसार' (अनूदित) आदि द्विवेदी जी की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। इन्होंने अपनी कविता में तत्सम प्रधान तथा सरल दोनों प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947)

'हरिऔध' जी द्विवेदी युग के प्रख्यात कवि होने के साथ-साथ उपन्यासकार, आलोचक एवं इतिहासकार भी थे। पुरातन संस्कृति का पुनरुद्धार, देश के वर्तमान युवकों का उचित मार्ग-दर्शन तथा कविता में उपदेशात्मक वृत्ति को इन्होंने आरंभ से ही अपना ध्येय रखा। सर्वप्रथम ये निजामाबाद के मिडिल स्कूल में अध्यापक हुए, उसके पश्चात् कानूनगो। इन्होंने सन् 1923 में सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण किया और शेष जीवन साहित्य-सेवा में समर्पित कर दिया। कुछ समय तक इन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अवैतनिक प्राध्यापक के रूप में भी कार्य किया। इनके काव्यग्रंथों में 'प्रियप्रवास', 'पद्यप्रसून', 'चुभते चौपदे', 'चोखे चौपदे', 'बोलचाल', 'रसकलस' तथा 'वैदेही वनवास' प्रमुख हैं। 'प्रियप्रवास' खड़ी बोली में लिखा गया प्रथम महाकाव्य है। हरिऔध जी ने ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों में ही रचना की है। दोहा, कवित्त, सवैया आदि के साथ ही संस्कृत के वर्णवृत्तों में काव्य की रचना

की है और इनको सभी में समान रूप से सफलता मिली है। 'प्रियप्रवास' पर इन्हें हिंदी का सर्वोत्तम पुरस्कार - मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया। इनकी काव्य शैली बड़ी मार्मिक और भावपूर्ण है। यशोदा का विरह कैसा सहृदय संवेद्य है–

प्रिय पति, वह मेरा प्राणप्यारा कहाँ है ?
दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है ?
लख-मुख जिसका मैं आज लौ जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा नैन तारा कहाँ है ?

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964)

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव, जिला झाँसी में हुआ था। ये द्विवेदी काल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे। इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन सन् 1909 में हुआ, किंतु इनकी प्रसिद्धि का मूलाधार 'भारत-भारती' है। 'भारत-भारती' ने हिंदी भाषियों में जाति और देश के प्रति गौरव की भावना जाग्रत की। तभी से ये 'राष्ट्रकवि' के रूप में विख्यात हुए। गुप्त जी की देशभक्ति से परिपूर्ण निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए–

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुंदर है,
सूर्य चंद्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की,
हे ! मातृभूमि ! तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की।

मैथिलीशरण गुप्त प्रसिद्ध रामभक्त कवि थे। तुलसी के रामचरितमानस के पश्चात् हिंदी में रामकाव्य का दूसरा स्तंभ गुप्त जी का 'साकेत' है। इन्होंने दो महाकाव्यों और उन्नीस खंड काव्यों की रचना की है. जिनमें से प्रमुख हैं–'जयद्रथ वध', 'भारत-भारती', 'पंचवटी', 'झंकार', 'साकेत', 'यशोधरा', 'द्वापर', 'विष्णु प्रिया' आदि। 'प्लासी का युद्ध', 'मेघनाथ-वध' आदि इनके अनूदित काव्य हैं।

रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962)

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म जौनपुर जिले के कोइरीपुर गाँव में हुआ। कविता के प्रति इनकी रुचि प्रारंभ से ही थी। सरस्वती पत्रिका के प्रभावस्वरूप ये खड़ी बोली की ओर उन्मुख हुए। रामनरेश त्रिपाठी के चार काव्यग्रंथ प्रकाशित हुए हैं – 'मिलन', 'पथिक', 'मानसी' और 'स्वप्न'। इनके काव्य से व्यक्तिगत सुख और स्वार्थ को त्यागकर देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा मिलती है। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए–

सच्चा प्रेम वही है जिसकी,
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर।।

इस काल के अन्य कवियों में रायदेवी प्रसाद पूर्ण (मृत्युंजय, वसंतवियोग), रामचरित उपाध्याय (राष्ट्रभारती, देवदूत), गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' (कृषक क्रंदन, राष्ट्रीय वीणा) आदि उल्लेखनीय हैं।

पाठ-9 : छायावाद और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा
(द्वितीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0	छायावाद युग	43
1.1	छायावाद के प्रतिनिधि कवि	43
	1.1.1 जयशंकार 'प्रसाद'	43
	1.1.2 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	44
	1.1.3 सुमित्रानंदन पंत	45
	1.1.4 महादेवी वर्मा	47
1.2	राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा	48
1.3	राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि	50
	1.31 माखनलाल चतुर्वेदी	50
	1.3.2 रामधारी सिंह 'दिनकर'	51
	1.3.3 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	52
	1.3.4 सोहनलाल द्विवेदी	53

7A-2/CHD/ND/17

1.0 छायावाद युग

छायावाद युग का आरंभ द्विवेदी युग के बाद (संवत् 1975) से माना जाता है। यह युग एक प्रकार से द्विवेदी युग की बौद्धिकता और उपदेशात्मकता की प्रतिक्रिया के रूप में सामने आया। इस युग की काव्यधारा में कल्पना और संवेदना की प्रधानता है।

डॉ. नगेंद्र के अनुसार, "छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है।" आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार, "छायावादी काव्य प्राकृतिक सौंदर्य और सामयिक जीवन परिस्थितियों से ही मुख्यतः अनुप्राणित है।"

छायावादी कवियों की दूसरी विशेषता यह है कि इन्होंने स्थूल के बजाय सूक्ष्म चित्रण को, मूर्त के स्थान पर अमूर्त चित्रण को महत्व प्रदान किया। विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वह मानव-हृदय को स्पर्श करे। किसी बात का केवल वर्णन कर देना कवि का कर्तव्य नहीं है। उसे भावात्मक रूप से प्रस्तुत करने में ही उसकी सफलता है। यही कारण है कि कविता में लाक्षणिक और प्रतीकात्मक चित्रण की ओर ध्यान गया और अभिधात्मक चित्रण को हेय समझा जाने लगा। इस प्रकार शब्दों की व्यंजना और ध्वनि को विशेष महत्व मिला।

छायावाद की एक अन्य विशेषता प्रकृति-प्रेम है। छायावादी कवि प्रकृति में चेतनता का अनुभव करता है वह प्रकृति को यथार्थ रूप से (तटस्थ भाव से) और प्रतीकात्मक रूप से चित्रित करता है।

सामाजिक अनुभूतियों को गीतात्मक ढंग से व्यक्त करना भी छायावाद की विशेषता है। गीतों में वैयक्तिकता की सफल अभिव्यक्ति हो सकती है। परंतु छायावादी युग में सामाजिक भावनाएँ भी इसी शैली में अभिव्यक्त हुईं।

भाषा का परिष्कार छायावादी कवियों की महत्वपूर्ण देन है। छायावाद ने खड़ी बोली की कर्कशता को समाप्त किया। इन कवियों ने कोमल पदावली द्वारा साहित्य को जो गीत दिए वे इस कथन के उदाहरण हैं।

छायावादी युग के प्रतिनिधि कवियों में जयशंकर 'प्रसाद', सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा मुख्य हैं।

1.1 छायावाद के प्रतिनिधि कवि

1.1.1 जयशंकर 'प्रसाद' (1890-1937)

जयशंकर 'प्रसाद' का जन्म काशी में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। इन्होंने वेद, उपनिषद, पुराण, इतिहास आदि के साथ उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी का भी अध्ययन किया। प्रसाद सरल, उदार, मृदुभाषी, स्पष्ट वक्ता और हँसमुख व्यक्ति थे। इनके विचार धार्मिक थे और ये शिवभक्त थे।

इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं–'कानन कुसुम', 'करुणालय', 'प्रेम पथिक', 'झरना', 'आँसू', 'लहर' और 'कामायनी'

'प्रसाद' की काव्य रचना का आरंभ द्विवेदी युग में 'कानन कुसुम' और 'प्रेम पथिक' से हो गया था। जहाँ तक छायावाद का संबंध है इन्हें छायावाद का प्रवर्तक माना जाता है। इनके छायावादी जीवन का आरंभ 'झरना' से हुआ। इसमें इन्होंने स्वच्छंद काव्य शैली का प्रयोग किया। 'आँसू' में इनके छायावादी रूप का विकास हुआ और वह अपने उत्कर्ष पर पहुँची। इनकी अंतिम और सर्वोत्कृष्ट रचना

'कामायनी' है। 'कामायनी' महाकाव्य छायावाद-रहस्यवाद युग की अभूतपूर्व रचना है। इस महाकाल में प्रसाद ने इच्छा, ज्ञान और क्रिया के समन्वय पर तथा बुद्धि और हृदय के संतुलन पर बल दिया। ये छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक थे। इनके काव्य में अनुभूति की तीव्रता है।

'प्रसाद' मूल रूप से कल्पना और भावना के कवि थे। इनमें अत्यधिक भावकुता थी जिसकी झलक इनकी निम्नलिखित कविता में देखी जा सकती है–

"इस करुणा कलित हृदय में, क्यों विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में, वेदना असीम गरजती।"

'प्रसाद' प्रकृति प्रेमी कवि थे। इन्होंने प्रकृति के सुकुमार, मधुर और भयानक रूपों का चित्रण किया है। 'प्रसाद' की प्रकृति चित्रण की शैली एकदम अलग है। इन्होंने प्रकृति में अपने भावों की छाया देखी है। 'लहर' में सूर्योदय का मनोरम चित्र देखिए–

"अंतरिक्ष में अभी सो रही है उषा मधुबाला।
अरे, खुली भी नहीं अभी तक प्राची की मधुशाला।।"

नीचे लिखी पंक्ति में समाज के दलित शोषित वर्ग की दशा और उसके प्रति छायावादी युग के कवियों की सहानुभूति का भाव दिखाई देता है–

"अरे भिखारी, तू चल पड़ता लेकर फूटा प्याला।"

'प्रसाद' ने मनोवैज्ञानिक पद्धति से मन के विभिन्न भावों का संकलन किया है। 'कामायनी' के सभी सर्गों के नाम किसी न किसी मनोभाव पर हैं। इन्होंने अपने काव्य में नारी भावना को विशिष्ट स्थान दिया है। इसकी अभिव्यक्ति 'कामायनी' महाकाव्य में हुई है। 'कामायनी' में 'श्रद्धा' नारी का प्रतीक है। नारी अपना सब कुछ खोकर पुरुष के जीवन को सार्थक करती है। इसी भावना की अभिव्यक्ति करते हुए 'प्रसाद' ने कहा–

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।।"

'कामायनी' महाकाव्य में 'प्रसाद' ने भारतीय इतिहास के मनुकाल का पुनर्निर्माण किया और अपनी कल्पना और खोज द्वारा उस युग का चित्रण प्रस्तुत किया।

1.1.2 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1899-1961)

महाकवि 'निराला' का जन्म वसंत पंचमी के दिन बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। इनकी आरंभिक शिक्षा बंगला माध्यम से हुई। इन्होंने स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी और अपने प्रयास से संस्कृत, अंग्रेजी तथा बंगला साहित्य और दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया। आरंभ से द्विवेदी जी की प्रेरणा से इन्होंने कुछ पत्रिकाओं का संपादन भी किया। हिंदी साहित्य के महारथी 'निराला' बहुत अक्खड़ स्वभाव के व्यक्ति थे। परंतु वे बहुत भावुक प्रकृति के थे। एक बार ठंड से सिकुड़ते एक भिखारी को देख इनको उस पर दया आई और ये उस पर अपना कंबल डाल आए। जीवन के अंतिम दिनों में इनका स्वास्थ्य और मानसिक दशा बिगड़ गई थी।

'निराला' जी युग प्रवर्तक कलाकार थे। इन्होंने काव्य, कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र, जीवनी आदि विभिन्न क्षेत्रों में लेखन कार्य किया। इसके अतिरिक्त इनकी बहुत-सी बंगला से अनूदित रचनाएँ

भी हैं। 'निराला' मूलतः कवि थे। ये अपने काव्य के कारण ही जाने जाते हैं। इनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं–'अनामिका', 'परिमल', 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'कुकुरमुत्ता', 'आराधना' आदि। इनकी रचनाओं में परंपरा के प्रति विद्रोह की भावना सबसे तीव्र दिखाई देती है। इनकी भाव शैली और विषयों में नवीनता है। इनकी रचनाओं में नई-नई उपमाओं का प्रयोग हुआ है। निराला जी प्रगतिवाद के पुरोधा तो हैं ही, नारी एवं दलित विमर्श की बानगी भी इनकी रचनाओं में मिलती है।

'निराला' जी के काव्य पर प्रगतिवाद का भी प्रभाव दिखाई देता है जो आने वाले युग की सूचना देता है। 'कुकुरमुत्ता' में उन्होंने गुलाब और कुकुरमुत्ता को क्रमशः शोषक और शोषित वर्ग का प्रतीक बनाने का प्रयास किया है। कविता की पंक्तियाँ देखिए–

"अबे, सुन बे गुलाब,
भूल मत गर पाई खुशबू, रंगो-आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट।"

'निराला' के काव्य की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है जिसमें सामान्य रूप से संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग है। उन्होंने परंपरा से चले आ रहे छंदों के बंधनों को तोड़कर मुक्त छंद की घोषणा की। इस दृष्टि से उनकी भाषा के दो रूप हो गए। कहीं वह एकदम सरल है तो कहीं क्लिष्ट। 'भिक्षुक' कविता सरल भाषा और मुक्त छंद का अच्छा उदाहरण है–

"दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।"

संस्कृतनिष्ठ कठिन भाषा का भी एक उदाहरण देखिए–

"रावण प्रहार-दुर्वार विकल वानर दल-बल।
मूर्छित सुग्रीवांगद भीषण गवाक्ष गय-नल।।"

'निराला' जी ने पाश्चात्य शैली का अधिक सहारा लिया और रविबाबू की तरह वैष्णव कविता की सहायता ली है।

छायावादी कवियों में 'निराला' का महत्वपूर्ण स्थान है। वे एक दार्शनिक, मानवतावादी, प्रगतिशील कवि हैं। हिंदी में 'निराला' से बढ़कर कोई स्वच्छंदतावादी कवि नहीं हैं। इन्होंने अपनी प्रतिभा से भाषा, भाव, छंद, शैली आदि सबमें परिवर्तन कर हिंदी साहित्य को समुन्नत किया। इन्होंने हिंदी साहित्य को प्राचीन रूढ़ियों से मुक्ति दिलाकर उसे नई दिशा प्रदान की।

1.1.3 **सुमित्रानंदन पंत** (1900-1977)

सुमित्रानंदन पंत का जन्म अलमोड़ा के कौसानी गाँव में हुआ था। जन्म के कुछ ही घंटे बाद इनकी माता की मृत्यु हो गई। इनके पिता कौसानी राजा के कोषाध्यक्ष और जमींदार थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। ये नवीं पास करने के बाद काशी चले गए। कॉलेज में एक वर्ष पढ़ने के बाद इन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वयं अंग्रेजी और बंगला का अभ्यास किया।

इन्हें संगीत का शौक था। इन पर रविबाबू और पाश्चात्य साहित्य के शेली, वड्र्सवर्थ, कीट्स आदि कवियों का प्रभाव था। ये संस्कृत साहित्य में कालिदास से और दर्शन में अरविंद और गांधी के विचारों से प्रभावित थे। कुछ समय तक पंत जी आकाशवाणी के उच्च अधिकारी भी रहे।

'पंत' जी ने पद्य और गद्य दोनों में साहित्य सृजन किया। इन्होंने कविता के अतिरिक्त कहानी,

निबंध आदि भी लिखे। ऐसा प्रतीत होता है कि पंत जी के हृदय में कविता का अंकुर किसी के वियोग के कारण प्रस्फुटित हुआ होगा।

"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।"

इनकी पहली रचना 'उच्छवास' है। इस नाम से ही हमारे कथन की पुष्टि होती है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–'वीणा', 'ग्रंथि', 'पल्लव', 'गुंजन', 'युगांत', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'उत्तरा', 'लोकायतन' और 'चिदंबरा' आदि।

स्वच्छंदतावादी कवियों में प्रकृति के प्रति सबसे अधिक प्रेम 'पंत' जी की कविताओं में दिखाई देता है। संभवतः इसका कारण यह था कि 'पंत' जी का बचपन अलमोड़ा के प्राकृतिक वातावरण में बीता था। इनकी 'वीणा' से 'पल्लव' तक की कविताओं में प्राकृतिक सुषमा का अच्छा चित्रण हुआ है। इनकी कविता में सुकुमार भाव, मधुर भाषा और कोमल कल्पना है। इनका हृदय प्रकृति में पूर्ण रूप से रमा हुआ था। 'पंत' जी जहाँ एक ओर अरविंद की विचारधारा से प्रभावित हुए वहीं दूसरी ओर विवेकानंद और स्वामी रामतीर्थ के विचारों ने भी इन्हें प्रभावित किया। प्रकृति प्रेम के कारण इनके मन में प्रकृति में प्रतिबिंबित होती हुई अज्ञात शक्ति के बारे में इच्छा पैदा हुई। इसीलिए इनके काव्य में रहस्यात्मक संकेत मिलते हैं।

'युगांत' से इनका रुझान छायावाद से मानववाद की ओर हुआ। इसे 'पंत' ने कुछ नीचे दी हुई पंक्तियों में प्रकट किया–

"सुंदर है विहग, सुमन सुंदर।
मानव तुम सबसे सुंदरतम।।"

इसके बाद कवि 'पंत' ने मार्क्सवाद के प्रभाव से भाव और कल्पना के चित्रों के स्थान पर जीवन का सजीव मूर्तचित्र प्रस्तुत करना शुरू किया। इसी संदर्भ में ताजमहल के बारे में क्षोभ भरे स्वर में वे कहते हैं–

"शव को हम दें रूप, रंग, आदर मानव का।
मानव को हम चित्र बना दें कुत्सित शव का।।"

अपने काव्य में इन्होंने गांधीवाद और मार्क्स के साम्यवाद को मान्यता दी। इसे निम्नलिखित पंक्तियों में देखिए–

"मनुष्यत्व का तत्व सिखाता निश्चय हमको गांधीवाद।
सामूहिक जीवन विकास की साम्य योजना है अविवाद।।"

'पंत' जी के काव्य में प्रकृति की सुषमा का चित्रण बेजोड़ है। इन्होंने विभिन्न प्रकार से प्रकृति का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया। इसी कारण इन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। चित्रात्मक शैली में प्रकृति का वर्णन देखिए–

"बाँसों का झुरमुट, संध्या का झुटपुट।
चिड़िया चहक रही, टी-वी-टी टुट-टुट।।"

'पंत' जी की कविताओं में रहस्यवाद की भी झलक मिलती है। 'मौन निमंत्रण' कविता में 'पंत' जी ने रहस्यवादी कवि के रूप में परमात्मा से आत्मीय संबंध स्थापित करने का प्रयास किया है।

'पंत' जी के काव्य का अध्ययन करने के बाद हम कह सकते हैं कि ये छायावादी युग के सर्वश्रेष्ठ मानवतावादी और प्रकृति प्रेमी कवि हैं। डॉ. नगेंद्र के अनुसार–"पंत जी प्रधान रूप से कलाकार हैं। इनके काव्य में सबसे प्रथम कला का उसके उपरांत विचारों का और अंत में भावों का स्थान है।" पंत जी को चिदंबरा पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

1.1.4 **महादेवी वर्मा** (1907-1987)

महादेवी जी का जन्म सन् 1907 में फर्रुखाबाद के एक सुशिक्षित परिवार में हुआ था। माता जी के आदर्श चरित्र और आस्तिक विचारों तथा नाना के कविता प्रेम ने इन्हें साहित्य की ओर प्रवृत्त किया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई। इन्होंने संस्कृत में एम.ए. किया। बचपन से ही इनकी रुचि कविता के साथ संगीत और चित्रकला की ओर थी।

महादेवी जी की रुचि पत्रिकाओं के संपादन में भी रही है। इन्होंने लंबे समय तक 'चाँद' का संपादन किया और बाद में 'साहित्यकार' का भी संपादन किया। ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्य थीं। अपने साहित्य प्रेम के कारण इन्होंने 'साहित्य संसद' नामक संस्था भी स्थापित की।

महादेवी जी की साहित्यिक कृतियाँ हिंदी साहित्य में आदर के साथ देखी जाती हैं। इनकी मुख्य रचनाएँ हैं–'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा', 'यामा' आदि।

छायावादी कवियों में महादेवी जी का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने अपनी कविताओं का लेखन ब्रजभाषा से शुरू किया। परंतु बाद में इन्होंने काव्य लेखन के लिए खड़ी बोली का प्रयोग किया। इनकी आरंभिक रचनाएँ 'चाँद' में प्रकाशित हुईं।

छायावाद में प्रकृति पर चेतन सत्ता का आरोप किया जाता है और चित्रात्मक भाषा में उसका मानवीकरण किया जाता है। महादेवी जी की कविताओं में इसे स्पष्ट देखा जा सकता है। यहाँ महादेवी जी और अन्य कवियों में कुछ अंतर दिखाई देता है। अंतर यह है कि जहाँ अन्य कवियों ने प्रकृति में आनंद और उल्लास का अनुभव किया वहाँ महादेवी जी ने उसमें वेदना का अनुभव किया।

महादेवी जी ने प्रकृति को नाना रूपों में देखा और उन्हें चित्रित किया। कहीं इन्होंने प्रकृति को अलंकार के रूप में, कहीं छायावादी मूर्तविधान के रूप में, कहीं रहस्यात्मक रूप में तो कहीं उपदेशात्मक रूप में चित्रित किया। नीचे उनके द्वारा प्रकृति का आलंबन के रूप में वर्णन देखिए–

रजनी ओढ़े जाती थी, झिलमिल तारों की जाली।
उसके बिखरे वैभव पर, जब रोती थी उजियाली।

महादेवी जी के काव्य की मूलभावना 'वेदना' है। यह वेदना कहीं व्यक्तिगत है तो कहीं सामाजिक। सामाजिक वेदना का एक उदाहरण देखिए जहाँ वे भारत माता से प्रश्न करती हैं–

कह दे माँ क्या अब देखूँ।
देखूँ खिलती कलियाँ या प्यासे-भूखे अधरों को।
तेरी चिर यौवन सुषमा या जर्जर जीवन देखूँ।।

काव्य में इनकी वेदना ने लौकिक होते हुए भी आध्यात्मिक रूप धारण कर लिया। यहाँ उनकी वेदना छायावाद और रहस्यवाद दोनों रूपों में व्यक्त हुई।

महादेवी जी रहस्यवादी कवयित्री हैं। इन्होंने रहस्यवाद के चित्रण में प्रकृति से प्राप्त अनुभूतियों

के साथ अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों को स्थान दिया है। महादेवी जी बौद्ध दर्शन से प्रभावित हैं। इनकी कविताओं की करुणा निजी है–

"मैं नीर भरी दुख की बदली - उमड़ी कल थी मिट आज चली।"

महादेवी जी के काव्य में रहस्यवाद की विभिन्न अवस्थाओं का सुंदर और स्वाभाविक चित्रण हुआ है। इनका रहस्यवाद मीरा, कबीर आदि के समान साधनात्मक रहस्यवाद न होकर भावनात्मक रहस्यवाद है। "मिलन का मत नाम लो मैं विरह में चिर हूँ।" महादेवी जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।

इनका काव्य गीतिकाव्य है। इसमें अनुभूति की प्रधानता है। इसलिए इनके काव्य में माधुर्य और कोमलता है। इन्होंने अपने काव्य में वियोग, श्रृंगार, शांत तथा करुण रसों का प्रयोग किया है तथा उसमें अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक आदि अलंकारों का अच्छा प्रयोग मिलता है।

1.2 राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा

भारतीय जनजीवन में गांधीवाद का आगमन हिंदी काव्य में छायावाद के आगमन के साथ हुआ। गांधीवाद के बहुत से अंतर्मुखी तत्व छायावादी काव्य में दिखाई देते हैं। मैथिलीशरण गुप्त में जहाँ गांधीवाद की नैतिकता और आदर्श दिखाई देता है, वहीं माखनलाल चतुर्वेदी में गांधीवाद, राष्ट्रीय चेतना के जीवंत तत्व के रूप में अभिव्यक्त हुआ, जिससे इन कवियों का काव्य अधिक प्राणवान और सशक्त हो गया है। इसे ही राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा कहा गया है।

गांधीवादी दर्शन का आधार सत्य, अहिंसा, धर्म और समानता है। ये गांधीवाद के प्राणतत्व हैं। भारतीय संस्कृति के चिरंतन मूल्यों को अभिव्यक्त करना और मानवता को जगाना ही गांधीवाद है। यह प्राचीन भारतीय परंपरा का अंग है। गांधी ने स्वयं कहा है कि उन्होंने कोई नई विचारधारा या नया जीवन दर्शन नहीं दिया है अपितु प्राचीन सिद्धांत की ही फिर से स्थापना की है। उनके अनुसार सत्याग्रह का सिद्धांत मूल रूप से बहुत प्राचीन है। इसे गांधी ने व्यापक और सार्वभौमिक रूप प्रदान किया। गांधी जहाँ एक ओर अहिंसावादी थे, वहीं दूसरी ओर वे समन्वयवादी भी थे।

हिंदी के प्रायः सभी राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं अन्य कवियों ने गांधीवादी विचारधारा को किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति दी, जब कि इनमें से कुछ कवियों का काव्य गांधीवाद और राष्ट्रीय काव्यधारा के अंतर्गत रखा जा सकता है। स्वाधीनता से पूर्व और बाद के कुछ ऐसे कवि हैं जिनके काव्य पर गांधीदर्शन का अत्यधिक प्रभाव दृष्टिगत होता है। ये कवि हैं–मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुमित्रानंदन पंत, सोहनलाल द्विवेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', शिवमंगल सिंह 'सुमन', भवानी प्रसाद मिश्र, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि। गुप्त जी की आरंभिक रचनाओं में राष्ट्रीयता और गांधीवाद के स्वर मुखर हुए। उनके 'स्वदेशी संगीत' संग्रह में सत्याग्रह, स्वराज्य और गांधी से संबंधित रचनाएँ हैं। वे हरिजनों के उत्थान और सांप्रदायिक समस्याओं के समाधान में गांधी जी के प्रयत्नों के समर्थक थे। 'स्वदेशी संगीत' संग्रह की एक कविता का अंश देखिए–

अस्थिर किया टाप वालों को गांधी टोपी वालों ने।
शस्त्र बिना संग्राम किया है इन माई के लालों ने।।

गुप्त की अधिकांश रचनाएँ गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाएँ ओज गुण से पूर्ण थीं। वे स्वयं एक सक्रिय क्रांतिकारी थे और

राजनीति से सीधे जुड़े हुए थे। बाद में गांधी के प्रभाव से उनके चिंतन में परिवर्तन हुआ। आजादी से पूर्व और पश्चात् की इनकी सभी रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना से पूर्ण हैं। 'कैदी और कोकिला' इनकी अमर कृति है।

सुमित्रानंदन पंत की स्वाधीनता से पूर्व की समस्त रचनाओं पर गांधी और उनके विचारों का प्रभाव है। इनकी 1937 की 'बापू' शीर्षक कविता में गांधी के जीवन दर्शन और व्यक्तित्व की झलक देखिए–

नव संस्कृत के दूत देवताओं का करने कार्य
मानव आत्मा को उबारने आए तुम अनिवार्य।

कविता में पंत सत्य और अहिंसा का जयगान करते हुए कहते हैं–

सत्य अहिंसा बन अंतरराष्ट्रीय जागरण।
मानवीय स्पर्शों से भरते धरती के व्रण।।

दिनकर की कुछ रचनाओं तथा ओजपूर्ण अभिव्यक्ति के कारण कुछ आलोचक इन्हें प्रगतिवाद के साथ भी जोड़ते हैं। परंतु यहाँ एक भ्रम है। वे यह भूल जाते हैं कि दिनकर ने शोषितों को वाणी दी, किंतु यह सर्वहारा की भाषा नहीं थी। वे मार्क्स के समर्थक नहीं थे। दिनकर ने अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई थी जिसकी प्रेरणा उन्हें भारतीय संस्कृति से मिली थी। इसके प्रमाण हैं इनकी 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'हुंकार' और 'उर्वशी' आदि रचनाएँ। ये अन्याय के विरुद्ध तो थे लेकिन मार्क्सवाद की रक्तक्रांति के समर्थक नहीं थे।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का व्यक्तित्व भी गांधीवाद और राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण था। 'नवीन' कांग्रेस के भी सदस्य थे और स्वाधीनता संग्राम में गांधी के अनुयायी भी थे। ये यद्यपि उग्रवाद के समर्थक थे परंतु कभी गांधी के विरोधी नहीं रहे। नवीन की कविता का उदाहरण देखिए–

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए।।

सोहनलाल द्विवेदी भी राष्ट्रीयता का जयघोष करने वाले कवि थे। हिंदी काव्य जगत में उनके जैसा सरल और सादगी भरा व्यक्तित्व मिलना मुश्किल है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय आंदोलनों को प्रोत्साहित करने और गांधीवाद को प्रतिष्ठित करने वाले भावों की प्रचुरता थी। अपने जीवन में गांधीवादी विचारधारा को साकार करने वाले वे निराले कवि थे। वे विशेषतः युवकों के प्रिय कवि थे।

इस युग में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य में दो बातों पर विशेष, बल दिया गया। एक ओर तो कवियों ने देश में व्याप्त विसंगतियों और विषमताओं को हटाने के लिए जनमानस को उद्बोधित किया, दूसरी ओर विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए जनता को स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा भी दी। इस काल के कवियों ने काव्य के द्वारा ही जन जागरण का बिगुल नहीं बजाया अपितु स्वयं उसमें सक्रिय रूप से भाग भी लिया। माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कैदी और कोकिला' में इसी भावना को स्वर दिया है। देखिए–

क्या देख न सकती जंजीरों का गहना,
हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश राज का गहना।
कोल्हू के चर्रक चूँ जीवन की तान,
मिट्टी पर लिखे अंगुलियों ने गाए गान।।

जनता में आत्मविश्वास पैदा करने का उपाय अतीत की गरिमा का चित्रण था। इस कविता में भारतीय परंपरा में उन जीवन मूल्यों की खोज का प्रयास था जो किसी भी काल के जीवन के लिए सार्थक और उपयोगी हों। इसके लिए राष्ट्रीय कवियों ने राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम, हरिश्चंद्र आदि युग पुरुषों से प्रेरणा लेने के लिए उद्बोधित किया। इस प्रकार इन कवियों ने वर्तमान को अतीत से जोड़कर वर्तमान में नवीन उत्साह का संचार करने का प्रयास किया। बीच-बीच में वहीं क्रांति और ध्वंस के स्वर भी सुनाई दे जाते हैं।

इस काव्य धारा के कवि राष्ट्रीय चेतना के गायक हैं। इनके काव्य में चाहे छायावादी कवियों की तरह सूक्ष्म अनुभूतियों की अभिव्यक्ति न हुई हो परंतु भावुकता का उच्छल प्रवाह वहाँ भी हिलोरें ले रहा था। इस धारा के कवि माखनलाल चतुर्वेदी का मानना था कि कवि अपनी सहृदयता और संवेदना के द्वारा लोक जीवन के अभावों को दूर करने के लिए तत्पर रहता है। इसके लिए उसे अपने भीतरी चक्षुओं से विश्व का साक्षात्कार करना होता है। जिसे उन्होंने निम्नलिखित पंक्तियों में प्रस्तुत किया है–

तम में खलबली मचाता रे गायक ! क्या तू कवि है।
दावों में तू योद्धा है, भावों में वीर सुकवि है।।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कुछ अन्य कवियों में प्रमुख हैं–रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सियारामशरण गुप्त, उदय शंकर भट्ट, जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद। इसके अतिरिक्त निराला, पंत, मैथिलीशरण गुप्त, गयाप्रसाद शुक्ल 'स्नेही', केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', महेशचंद्र प्रसाद आदि ने भी अपनी रचनाओं से राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा को पुष्ट किया है।

1.3 राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि

1.31 माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968)

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई गाँव में हुआ था। इनके पिता गाँव के विद्यालय में अध्यापक थे। इनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। बाद (1904) में ये गाँव की पाठशाला में अध्यापक नियुक्त हुए। इसके बाद इन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती और बंगला का अध्ययन किया। ये एक सजग, संवेदनशील और उत्साही व्यक्ति थे। इनकी बचपन से ही साहित्य में रुचि थी। इनकी पहली कविता रसिक मित्र में प्रकाशित हुई। धीरे-धीरे ये साहित्य सृजन की ओर प्रवृत्त हुए। इन्होंने 'प्रभा', 'प्रताप' और 'कर्मवीर' नामक पत्रिकाओं का संपादन किया। आरंभ में ये क्रांति दर्शन से प्रभावित हुए, किंतु बाद में इनकी आस्था गांधीवाद की ओर हो गई। इन्हें राजनीति में भाग लेने के कारण कई बार जेल जाना पड़ा। जेल में रहते हुए इन्होंने अनेक कविताएँ लिखीं। ये कुशल लेखक होने के साथ ही अच्छे वक्ता भी थे।

चतुर्वेदी जी ने कहानी, नाटक, निबंध और कविताओं की रचना कर हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि की। इनका नाटक 'कृष्णार्जुन युद्ध' है और 'साहित्य देवता' निबंध संग्रह है। इनकी कहानियों के संग्रह का नाम 'कला संग्रह' है। इनके प्रमुख कविता संग्रह हैं–'हिम किरीटिनी', 'हिम तरंगिनी', 'माता', 'समर्पण', 'युगचरण', 'वेणु लो गूँजे धारा' आदि। 'हिम किरीटिनी' देश प्रेम संबंधी कविताओं का सुंदर संग्रह है। माखनलाल चतुर्वेदी ऐसे कवि थे जिन्होंने स्वयं सक्रिय राजनीति का चयन किया।

चतुर्वेदी की रचनाओं में राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी है। उनमें निःस्वार्थ चेतना और आत्मत्याग का भाव दिखाई देता है। उन्होंने राष्ट्र को ही अपना देवता माना।

स्वतंत्रता देवी को अपनी आराध्य देवी स्वीकार किया। 'पुष्प की अभिलाषा' कविता कवि की स्वाधीनता में अलख जगाने वाली कविताओं में प्रमुख है–

"चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।।"

"मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक।।"

माखनलाल चतुर्वेदी स्वयं आजादी की लड़ाई के सिपाही थे। इसलिए उनकी देश प्रेम की कविताओं में अनुभूति की सच्चाई और आवेश दिखाई देता है। ये अपनी देश प्रेम प्रधान रचनाओं के लिए हिंदी जगत में प्रसिद्ध हैं। चतुर्वेदी जी ने अपनी रचनाएँ साहित्यिक खड़ी बोली में लिखी हैं। उनकी आरंभिक कविताओं में ब्रजभाषा का प्रयोग भी मिलता है। परंतु बाद की रचनाएँ खड़ी बोली में ही हैं। राष्ट्रीय धारा के कवियों में इनका विशिष्ट स्थान है।

1.3.2 रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908-1974)

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 30 सितंबर सन् 1908 में मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। इन्होंने सन् 1932 में पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में बी.ए. (ऑनर्स) पास किया। शिक्षा समाप्त करने के बाद 'दिनकर' हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक हो गए। फिर सन् 1934 से 1947 तक ये बिहार सरकार में सब-रजिस्ट्रार और फिर बिहार में ही दृश्य प्रचार विभाग में उपनिदेशक रहे। अंत में दिनकर मुजफ्फरपुर के एक कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष हो गए। सन् 1952 में इन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी और इन्हें संसद सदस्य बनाया गया। इसके बाद ये कुछ समय भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति और भारत सरकार के हिंदी सलाहकार जैसे उच्च पदों पर रहे। सन् 1959 में इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया। इन्हें 'उर्वशी' महाकाव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

कवि दिनकर की 'हुंकार' पहली रचना है। यह कवि की राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत रचना है। इसमें विप्लव और विद्रोह की आग है। इसे पढ़कर रामवृक्ष बेनीपुरी ने इन्हें क्रांतिकारी कवि घोषित कर दिया था। कवि का यह ओजस्वी स्वर 'रसवंती', 'द्वंद्वगीत', 'रेणुका', 'सामधेनी', 'इतिहास के आँसू', 'धूप और धुआँ' आदि काव्य संग्रहों में भी सुनाई देता है। इनके वर्णानात्मक काव्यों में 'बारदोली विजय', 'धूप-छाँह', 'बापू', 'इतिहास के आँसू' प्रसिद्ध हैं। मुक्तक काव्यों में 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'सामधेनी', 'नीम के पत्ते', 'नील कुसुम', 'सीपी' और 'शंख' प्रमुख हैं।

'हिमालय' शीर्षक कविता से उनकी उस क्रांति भावना का आभास मिलता है जो शोषक-शोषित समाज का उन्मूलन कर वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहती है। उनकी इसी भावना का विकसित रूप 'हुंकार' और 'कुरुक्षेत्र' में दिखाई देता है।

दिनकर ने अपनी राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति 'अतीत' और 'वर्तमान' के संदर्भ में की है। 'हिमालय' की इन पंक्तियों में उन्होंने अतीत के प्रति अपना प्रेम और वर्तमान के प्रति अपना क्षोभ व्यक्त किया है–

"तू पूछ अवध में राम कहाँ ?
वृंदा बोलो घनश्याम कहाँ ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक,
वह चंद्रगुप्त बलधाम कहाँ ?"

कहीं-कहीं दिनकर ने प्रगतिवादी कवियों की तरह दीन-हीन मजदूर तथा विवश मानव की दीनता के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है।

दिनकर की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है।

दिनकर की काव्य शैली के मुख्यतः दो रूप हैं–प्रबंध शैली और मुक्तक शैली। पहली के अंतर्गत महाकाव्य, खंडकाव्य और वर्णनात्मक काव्य हैं। 'कुरुक्षेत्र' इनका उत्तम काव्य है, जिसमें तुकांत एवं अतुकांत सभी प्रकार के नूतन और प्राचीन छंदों का प्रयोग हुआ है।

दिनकर ने अपनी रचनाओं में वीर, रौद्र और करुण रसों का सफलतापूर्वक चित्रण किया है। 'उर्वशी' में श्रृंगार रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास का सुंदर प्रयोग मिलता है।

राष्ट्रीय चेतना वाले प्रगतिवादी मननशील कवियों में दिनकर का अग्रणी स्थान है।

1.3.3 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (1897-1960)

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का जन्म ग्वालियर के भवाना गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा ग्यारह वर्ष की आयु में आरंभ हुई। सन् 1917 में हाईस्कूल पास करने के बाद ये कानपुर आ गए, जहाँ गणेश शंकर विद्यार्थी ने इन्हें कॉलेज में प्रविष्ट करवा दिया। सन् 1920 में ये गांधी जी के आह्वान पर कॉलेज छोड़कर सक्रिय राजनीति में आ गए। अपने लंबे राजनीतिक जीवन में इन्हें अनेक बार जेल जाना पड़ा। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् ये पहले लोकसभा के और फिर राज्यसभा के सदस्य रहे। कुछ समय बाद इन्होंने 'प्रभा' और 'प्रताप' पत्रिकाओं का संपादन किया। सन् 1918 से ही इनकी रचनाएँ विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं। साहित्यिक गतिविधियों में भी इन्हें गणेश शंकर 'विद्यार्थी' का सहयोग मिला।

'कुंकुम' इनका पहला कविता संग्रह था जिसमें इनकी राष्ट्रीय भावनाओं की तथा प्रेमपरक कविताएँ संग्रहित हैं। 1934 में इन्होंने 'उर्मिला' काव्य लिखा, जिसका प्रकाशन 1957 में हुआ। इस काव्य में उर्मिला के चरित्र के माध्यम से इन्होंने भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल रूप को चित्रित किया। इनकी कहानी को उसी समय के वातावरण अर्थात् भारतीय संस्कृति और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के संघर्ष से जोड़ने के लिए 'नवीन' जी ने कुछ प्रसंगों को अत्यधिक कौशल से संयोजित किया। इनकी अन्य रचनाएँ हैं–'अपलक', 'रश्मिरेखा', 'क्वासि', 'हम विषपायी जनम के' और 'विनोबा स्तवन'।

भावों की तीखी अभिव्यक्ति जो पाठक को तिलमिलाकर रख दे, यथार्थवादी कवियों की विशेषता है। 'जूठे पत्ते' नवीन जी की यथार्थ के स्तर पर एक जोरदार रचना है जो भावों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से प्रगतिवाद के निकट जा पहुँचती है–

लपक चाटते जूठे पत्ते, जिस दिन मैंने देखा नर को,
उस दिन सोचा, क्यों न लगा दूँ आज आग इस दुनियाभर को।।

भाषा और भावों पर इनका अच्छा अधिकार था। ये क्रांति के अग्रदूत की तरह रौद्र तथा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के भावों को अभिव्यक्ति देते हैं। देखिए–

प्राणों को तड़पाने वाली हुंकारों से जल-थल भर दे।
अनाचार के अंबारों से अपना ज्वलित पलीता धर दे।।

स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय होने के कारण उनके काव्य पर राष्ट्रीयता का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। विशेषतः स्वतंत्रता संग्राम से पूर्व की सभी रचनाएँ राष्ट्रीय पृष्ठभूमि में लिखी गई हैं। नवीन जी के काव्य में राजनीतिक आंदोलनों के अतिरिक्त अन्य सामाजिक और आर्थिक आंदोलनों को भी स्थान मिला। रामंचद्र शुक्ल ने नवीन की गणना उन कवियों में की है जिनकी कविताओं में भिन्न-भिन्न प्रकार के आंदोलन प्रतिध्वनित हुए।

काव्य प्रयोजन पर विचार करते हुए नवीन ने मानव जीवन के आदर्शों की अभिव्यक्ति की चर्चा की। इन्होंने कविता को व्यवस्था-परिवर्तन का साधन मानते हुए राष्ट्रीय आंदोलनों के तूफानी दिनों में विप्लव गान किया था–

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर से आए।
प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए।
बरसे आग, जलधि जल जाए, भस्मसात भूधर हो जाए।।

नवीन जी की भाषा शुद्ध प्रांजल साहित्यिक खड़ी बोली है। इसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों के साथ देशज और अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग मिलता है। यथास्थान मुहावरों का सटीक प्रयोग है।

इनका अधिकांश काव्य मुक्तक काव्य है और इसमें ओज गुण की प्रधानता है। इनकी कविता वीर रस प्रधान है। अलंकारों में अनुप्रास, उपमा और रूपक का प्रयोग अधिक हुआ है।

1.3.4 **सोहनलाल द्विवेदी** (1906-1988)

सोहनलाल द्विवेदी राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के सर्वप्रमुख गांधीवादी कवि हैं। इन्होंने गांधीवादी विचारधारा के संबंध में जितना साहित्य सृजन किया उतना किसी अन्य कवि ने नहीं किया। इनके काव्य में गांधीवादी स्वर तीव्र है।

सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् 1905 में बिंदकी जिला फतेहपुर में हुआ था। इनकी शिक्षा मालवीय जी की छत्रछाया में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हुई। इन्होंने एम.ए., एल.एल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की। साथ ही इन्हें संस्कृत भाषा का भी अच्छा ज्ञान था। इन्होंने अपना लेखन कार्य सन् 1921 में आरंभ कर दिया था। इन्होंने सन् 1928 से 1942 तक दैनिक राष्ट्रीय पत्र 'अधिकार' का संपादन किया। 1941 में आपकी प्रथम रचना 'भैरवी' प्रकाशित हुई।

इन्होंने बड़ी संख्या में बाल साहित्य का भी सृजन किया जिनमें 'बालभारती', 'शिशुभारती', 'हँसो-हँसाओ', 'नेहरू चाचा', 'दूर्वा' एवं 'मोहक' प्रमुख हैं।

'चेतना' के प्रकाशन से पूर्व 1944 में इनका काव्य संग्रह 'युगाधार' प्रकाशित हुआ जिसमें गांधी जी से संबंधित अनेक रचनाएँ हैं। गांधीवादी विचारधारा के संदर्भ में 'चेतना' और 'युगाधार' संकलनों का

बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इनके अनेक कविता संग्रह और खंडकाव्य गांधी जी की विचारधारा के संबंध में प्रकाशित हुए हैं–'कुणाल', 'चित्रा', 'युगाधार', 'वासवदत्ता', 'किसान' आदि।

'बापू', 'गांधी', 'सेवाग्राम की आत्मकथा', 'सेवाग्राम', 'गीत', भ्रमण, 'उगता राष्ट्र', 'मजदूर', 'सत्याग्रही', 'जागरण', 'कणिका', 'बेतवा का सत्याग्रह' 'अनुरोध', 'राजबंदी', 'राष्ट्रकवि' आदि सभी रचनाओं में गांधीवाद छाया हुआ है। इनमें किसी न किसी रूप से गांधी और उसके सिद्धांतों की स्थापना की गई है।

इनकी रचनाओं की भाषा सरल, सरस, मधुर प्रवाहमयी सुसंस्कृत खड़ी बोली है। इनके अधिकांश काव्य संग्रह मुक्तकों और गीतों के रूप में हैं। इनके अतिरिक्त 'कुणाल' जैसे प्रबंध काव्य भी हैं। इन्होंने अनुप्रास, उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति अलंकारों का अच्छा प्रयोग किया है। वस्तुतः इनका ध्यान छंदों, अलंकारों के बजाय गांधी और गांधीवाद के चित्रण की ओर अधिक रहा। इनके काव्य में मुख्य रूप से वीर रस और ओज गुण की प्रधानता है।

पाठ-10 : छायावादोत्तर युग
(द्वितीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0	छायावादोत्तर युग	56
1.1	प्रगतिवाद	56
1.2	प्रयोगवाद	57
1.3	नई कविता	58
1.4	प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ	58
	1.4.1 अज्ञेय	58
	1.4.2 नागार्जुन	60
	1.4.3 गजानन माधव मुक्तिबोध	61
	1.4.4 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	62
	1.4.5 रघुवीर सहाय	64
	1.4.6 केदारनाथ सिंह	64
	1.4.7 त्रिलोचन	65
	1.4.8 भवानी प्रसाद मिश्र	66
	1.4.9 केदारनाथ अग्रवाल	67

1.0 छायावादोत्तर युग

द्विवेदी युग की बौद्धिकता और उपदेशात्मकता की प्रतिक्रिया के रूप में छायावाद का उदय हुआ जिसका साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा। फलतः कवियों का ध्यान स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाने लगा। छायावादी कवियों ने काव्य में सांस्कृतिक सौंदर्य, विश्व मानवता, युग चेतना, वैयक्तिकता, प्रकृति चित्रण, स्वाभाविकता और साहित्यिकता का समर्थन किया। अनेक छायावादी कवियों का झुकाव प्रगतिवाद की ओर हुआ। 'पंत' छायावादी होने के बावजूद प्रगतिवाद की ओर झुके और उन्होंने 'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' की रचना की। 'पंत' का प्रगतिवादी आंदोलन में सक्रिय रूप से प्रवेश करना महत्वपूर्ण घटना थी।

छायावादी, रहस्यवादी विचारधारा के प्रभाव से साहित्य जीवन से दूर होता गया। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में जिस साहित्य धारा का उद्भव हुआ, उसे 'प्रगतिवाद' कहा गया जो छायावाद की समाप्ति पर सन् 1936 के आसपास सामाजिक चेतना को लेकर निर्मित होना आरंभ हुआ। द्विवेदी युग के स्थूल की प्रतिक्रिया यदि छायावाद था तो छायावाद के सूक्ष्म की प्रतिक्रिया ने प्रगतिवाद को जन्म दिया। वास्तव में प्रगतिवादी काव्य शोषण का विरोध करता है और शोषित को ताकत देता है। वह मेहनतकशों में सौंदर्य देखता है।

1.1 प्रगतिवाद (1936-1943)

प्रगतिवाद का आधार सामाजिक और राजनीतिक जागृति था। हिंदी कविता में सामाजिक चेतना के दो रूप दिखाई देते हैं। एक में मध्यमवर्गीय दुखों से भरे मानव और प्रकृति का चित्रण है तो दूसरे में केवल उत्साह और उद्बोधन है।

प्रगतिवादी साहित्य समाज के मौलिक रूप के लिए विकासशील, विषमता विरोधी, भावनाओं को व्यक्त करता है। यह मानव मात्र को समान रूप से देखता है। प्रगतिवादी साहित्य का प्रमुख उद्देश्य साहित्य को जीवन के निकट लाना है। प्रगतिवाद का जीवन दर्शन मार्क्स की आर्थिक व्यवस्था पर आधारित है इसलिए यह राजनीति से अलग नहीं है। प्रगतिवादी कविता के विषय शोषित, मजदूर और किसान आदि हैं। प्रगतिवादी काव्य शोषण का विरोध करता है। वास्तव में प्रगतिवादी कवि शोषित में संगठन शक्ति देखता है–

मैंने उसको जब-जब देखा - लोहा देखा
लोगा जैसा तपते देखा, गलते देखा, ढलते देखा
मैंने उसको गोली जैसे चलते देखा। - केदारनाथ अग्रवाल

प्रगतिवाद का मूल उद्देश्य जनकल्याण की कामना है। भाषा और शैली की दृष्टि से प्रगतिवाद ने नवीन आदर्श स्थापित किया। वह कला को जनहित की दृष्टि से देखता है। निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में यह बात देखी जा सकती है–

"वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर।"

प्रगतिवादी कवियों में शिवमंगल सिंह 'सुमन', नरेंद्र शर्मा, भवानी प्रसाद मिश्र, रांगेय राघव आदि ने सामयिक घटनाओं को स्थान देकर अपनी जागरूकता का परिचय दिया है। प्रगतिवाद वास्तव में मार्क्सवाद या साम्यवाद का साहित्यिक संस्करण है। इस धारा के प्रमुख कवि हैं–निराला, पंत,

रामविलास शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, शिवमंगल सिंह 'सुमन', गजानन माधव मुक्तिबोध आदि।

1.2 प्रयोगवाद (1943-1953)

छायावाद और प्रगतिवाद–दोनों के विरोध में प्रयोगवाद अस्तित्व में आया या खड़ा हुआ। प्रयोग का विरोध छायावादी रूमानियत से था और प्रगतिवाद की कला संबंधी उपेक्षा से था। प्रयोगवाद ने कविता में बौद्धिकता और रूप संबंधी नये प्रयोगों पर बल दिया।

प्रयोग तो सभी युगों में होते रहे हैं, परंतु 'प्रयोगवाद' नाम उन कवियों के लिए रूढ़ हो गया जो नए बोधों, संवेदनाओं और उन्हें संप्रेषित करने वाले शिल्प में पाए जाने वाले चमत्कारों को लेकर शुरू में 'तार सप्तक' के माध्यम से सन् 1943 में साहित्य में दिखाई दिए। 'अज्ञेय जी' ने दूसरा सप्तक की भूमिका में कवि-कर्म की व्याख्या करते हुए 'प्रयोग' शब्द को स्पष्ट किया। उनकी दृष्टि में 'प्रयोग' साध्य नहीं, साधन है और दोहरा साधन है। एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन है जिसे कवि प्रेषित करता है, दूसरे वह उसे प्रेषण करने की क्रिया को और उसके साधनों को जानने का साधन है। 'अज्ञेय' जी प्रयोगवाद के प्रवर्तक हैं। इसी 'सप्तक' के संपादकीय वक्तव्य में प्रथम बार 'प्रयोग' और 'प्रयोगशीलता' शब्दों का व्यवहार हुआ। इन्हीं शब्दों के कारण कवियों ने इन कविताओं को 'प्रयोगवादी' कविता कहा। तार सप्तक में सात कवि थे–गजानन माधव 'मुक्तिबोध', नेमिचंद जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर 'माचवे', गिरिजा कुमार माथुर, रामविलास शर्मा और सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'।

दूसरा 'सप्तक' का प्रकाशन सन् 1951 में हुआ जिसमें प्रयोग शब्द को पर्याप्त महत्व दिया गया। तभी 'प्रयोगवाद' को साहित्य की एक धारा के रूप में स्वीकार किया गया। दूसरा सप्तक में भी सात कवि थे–भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंत माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय और धर्मवीर 'भारती'। इस प्रयोग को नई कविता भी कहा गया।

प्रयोगवादी कवियों ने अपने मन की कुंठा और अपनी हीन भावना का कथन विविध प्रतीकों का सहारा लेकर किया है।

प्रयोगवादी कवि की दृष्टि वस्तुपरक है। वह यथार्थ के प्रति सजग है। इसलिए वह किसी निकृष्ट और निम्नकोटि की वस्तु को भी अपनी कविता में जगह देता है। वह नवीन उपमानों की खोज में रहता है।

प्रयोगवादी कविता का प्रभाव बहुत व्यापक स्तर पर पड़ा है। कवि अपने भावों को व्यक्त करने के लिए अपने ढंग से विराम चिह्नों का प्रयोग करते हैं। इन्होंने बहुत से अतुकांत छंदों की रचना की। इनमें भावों को स्पष्ट करने के लिए शब्दों को तोड़कर प्रयोग करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

हिंदी काव्य के विकास में प्रयोगवाद का भी अपना एक स्थान है। प्रयोगवादी कवियों की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ हैं। 'अज्ञेय' में नए प्रतीक, गिरिजा कुमार माथुर में ध्वनिसाम्य, गजानन माधव मुक्तिबोध में वैयक्तिक भावभूमि, प्रभाकर 'माचवे' का केंद्रीय विलास और नेमिचंद जैन तथा शमशेर बहादुर सिंह का साम्यवादी रूप निजी विशेषताएँ हैं। इन कवियों को तार सप्तक के संपादक 'अज्ञेय' ने 'राहों के अन्वेषी' कहा है।

1.3 नई कविता

प्रयोगवाद की कोख से छठे दशक में नई कविता का जन्म हुआ। नई कविता ने जीवन के प्रत्येक क्षण को सत्य माना और प्रत्येक क्षण को जीने की अभिलाषा के कारण नई कविता जीवन-सत्यों को गहराई से पकड़ती है। इस क्षणवाद में सामान्य लगने वाले प्रसंग भी नई कविता में विशेष अर्थों के साथ उद्घाटित होते हैं। पश्चिम के जीवन दर्शन का, विशेष रूप से अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव भी इस कविता को अपनी पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से अलग करता है। परंपरागत मूल्यों को चुनौती देती नई कविता नये मूल्यों की खोज करती है।

'नई कविता' नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गई उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया है, जो अपनी वस्तु-छवि और रूप-छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी अपने में विशिष्ट है। कथ्य की व्यापकता, जीवन के प्रति आस्था और सृजन की उन्मुक्तता नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता है।

नई कविता के रचयिताओं में से अधिकांश कवि प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के खेमे में रह चुके हैं। वे अपनी सीमाओं से उन्मुक्त होना चाहते थे। नई कविता ने उन्हें वह उन्मुक्तता प्रदान की।

नई कविता में क्षणों की अनुभूतियों को लेकर बहुत ही मर्मस्पर्शी और विचार-प्रेरक कविताएँ लिखी गई हैं। नई कविता में शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन दोनों को लेकर लिखने वाले कवि हैं। अज्ञेय का परिवेश व्यापक है, जिन्होंने दोनों परिवेशों पर समान रूप से लिखा है। नई कविता के प्रमुख कवि हैं–शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, धर्मवीर भारती, प्रभाकर माचवे, रघुवीर सहाय, भवानी प्रसाद मिश्र, केदारनाथ सिंह, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आदि।

1.4 प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

1.4.1 अज्ञेय (1911-1987)

इनका पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' है। 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च, 1911 में देवरिया जिले के कसया गाँव में हुआ था। इनकी शिक्षा बी-एस-सी. तक हुई। बाद में इन्होंने एम.ए. अंग्रेजी में दाखिला लिया और एक साल बाद पढ़ाई छोड़ दी। हिंदी साहित्य का अध्ययन घर पर ही किया। इसके अतिरिक्त संस्कृत का भी अध्ययन किया। क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़कर ये जेल भी गए। 1943 से 1946 तक इन्होंने सेना में भी नौकरी की। अज्ञेय जी लंबे समय तक 'दिनमान' के संपादक रहे। इन्होंने सैनिक, विशाल भारत, प्रतीक, नया प्रतीक, रूपांबरा और नवभारत टाइम्स का संपादन किया। इसके अतिरिक्त इनका उल्लेखनीय कार्य है सप्तकों का संपादन। ये कई बार सांस्कृतिक प्रयोजनों से अमरीका गए। ये कुछ दिन तक जोधपुर विश्वविद्यालय में भी कार्यरत रहे। अज्ञेय प्रसिद्ध लेखक, समीक्षक, चिंतक एवं विचारक थे।

प्रयोगवाद और नई कविता के संदर्भ में 'अज्ञेय' की सक्रिय भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। 'अज्ञेय' की कविताओं में अधिकांश स्थलों पर भावात्मक पक्ष की अपेक्षा विचारात्मक पक्ष अधिक प्रबल रहा है। इसलिए जहाँ भी उनकी कविताओं के बारे में चर्चा होती है वहाँ उनके बुद्धिवाद की चर्चा भी अवश्य होती है।

'सप्तकों' के कवियों में सर्वाधिक कविता-संग्रह 'अज्ञेय' के ही प्रकाशित हुए हैं। 'तार सप्तक' (1943) के बाद 'इत्यलम' (1946), 'हरी घास पर क्षण भर' (1949), दूसरा सप्तक (1952), तीसरा सप्तक (1959), 'बावरा अहेरी' (1959), 'इंद्रधनु रौंदे हुए ये' (1956), 'अरी ओ करुणा प्रभामय' (1959), 'आँगन के पार द्वार' (1961), 'कितनी नावों में कितनी बार' (1967), 'सागर मुद्रा', 'क्योंकि मैं उसे जानता हूँ', 'पूर्वा' तथा 'पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ' (1974) आदि काव्य संग्रह प्रकाशित हुए।

अज्ञेय जी का व्यंग्य बहुत ही तीखा और पैना है–

साँप
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना भी
तुम्हें नहीं आया।
एक बात पूछूँ (उत्तर दोगे ?)
तब कैसे सीखा डसना
विष कहाँ से पाया ?

अज्ञेय की कविता में अकेलेपन का वैभव है। अज्ञेय मूलतः प्रेम और प्रकृति के कवि हैं। उन्होंने शब्दों को सटीक अर्थ देने का प्रयास किया है। उनकी कविता 'नदी के द्वीप' की छटा देखिए–

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाए।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकत-कूल
सब गोलाइयाँ, उसकी गढ़ी हैं।
माँ है वह ! है, इसी से हम बने हैं।
किंतु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं हैं।

'हरी घास पर क्षण भर' अज्ञेय के काव्य में आई परिपक्वता का व्यंजक है। जीवन की यथार्थता की अभिव्यक्ति इसी संग्रह से हुई है। यद्यपि कुछ रचनाएँ हल्की-फुल्की भी हैं किंतु अधिकांश शिल्प की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं, जैसे–

"दुख सबको माँजता है
और–
चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने किंतु–
जिनको माँजता है
उन्हें वह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें।।"

अज्ञेय की मान्यता है कि काव्यभाषा बोलचाल की भाषा के निकट होनी चाहिए। अपनी कविताओं में अज्ञेय ने तत्सम, ब्रजभाषा, अंग्रेजी, उर्दू आदि के शब्दों का नए अर्थों में भी प्रयोग किया है–

"देह
बल्ली
एक पिंजरा है ! पर मन इसी में से उपजा
जिसकी उन्नत शक्ति आत्मा है।"

अज्ञेय का काव्य बिंब योजना की दृष्टि से काफी समृद्ध है। इसमें अनेक प्रकार के बिंबों का सफल प्रयोग दिखाई देता है, जैसे–

"हम निहारते रूप
काँच के पीछे हाँफ रही है मछली
रूप तृषा की
(और काँच के पीछे) है जिजीविषा।"

'कितनी नावों में कितनी बार' काव्य संग्रह पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

1.4.2 **नागार्जुन** (1910-1998)

नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। इनका जन्म दरभंगा जिले के तरौनी गाँव में हुआ था। इन्हें बचपन में नियमित शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। बाद में अपने प्रयास से हिंदी और संस्कृत का अध्ययन किया। ये मैथिली और हिंदी के यशस्वी कवि हैं और 1930 से बराबर साहित्य रचना में संलग्न रहे। पहले ये 'यात्री' नाम से मैथिली और हिंदी में कविताएँ लिखते थे। नागार्जुन सन् 1936 में श्रीलंका गए और उन्होंने वहाँ पर बौद्ध धर्म में दीक्षा ले ली। उसके बाद इन्होंने अपना नाम नागार्जुन रख लिया। इन्होंने श्रीलंका, तिब्बत, म्याँमार (तत्कालीन बर्मा) की दो बार यात्राएँ कीं। ये घुमंतू प्रकृति के व्यक्ति थे। इनका विवाह सन् 1941 में हुआ और ये सफल गृहस्थ होने के साथ-साथ साहित्य सृजन में भी लगे रहे। इनके जीवन को दो व्यक्तियों ने प्रभावित किया। राजनीतिक जीवन को महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने और साहित्यिक जीवन को कविवर 'निराला' ने।

नागार्जुन आधुनिक युग की नवीन चेतना के कवि हैं। इन्होंने एक ओर तो वर्ग संघर्ष से पीड़ित वर्ग के प्रति गहन संवेदना व्यक्त की तथा अभावग्रस्त निम्नवर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाई और दूसरी ओर उच्च वर्ग द्वारा किए जा रहे शोषण का जमकर विरोध किया और सर्वहारा वर्ग को अपना समर्थन दिया।

राहुल जी के प्रभाव के कारण राजनीतिक दृष्टि से ये पूर्णतया साम्यवादी थे और साहित्यिक दृष्टि से ये काव्य की उस जनवादी विचारधारा को मानते थे, जिसमें यथार्थ के धरातल पर मानव जीवन को चित्रित किया गया है। इनके काव्य में भी 'निराला' के समान आक्रोश, क्षोभ, अक्खड़पन, विद्रोह भावना और तीखा व्यंग्य दिखाई देता है। नागार्जुन ने दलित-पीड़ित जनता के कष्टों को अपनी कविता में स्वर प्रदान किया। नागार्जुन साहित्य और राजनीति में समान रूप से रुचि रखने वाले साहित्यकार थे।

इनकी कविताओं के संकलन–'युगधारा', 'प्यासी पथराई आँखें', 'सतरंगी पंखों वाली', 'तुमने कहा था', 'तालाब की मछलियाँ', 'हजार-हजार बाहों वाली', 'पुरानी जूतियों का कोरस', 'आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने', 'रत्नगर्भा', 'ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या', 'भस्मांकुर' (महाकाव्य) आदि हैं।

नागार्जुन जटिल से जटिल भाव को भी सहज रूप से अपनी कविता द्वारा प्रस्तुत करते हैं। किसान जीवन की पीड़ा को नागार्जुन ने अपनी कविताओं का कथ्य बनाया। मूलतः वह धरती, जनता और श्रम के रचनाकार हैं। सामाजिक बोध उनकी कविता का प्रधान स्वर है–

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

नागार्जुन ने जनजीवन के सभी पक्षों पर दृष्टि डालकर उनका उपयुक्त ढंग से चित्रण किया है। अपनी कविताओं में इन्होंने देश में फैले अन्याय, भ्रष्टाचार, शोषण आदि का पर्दाफाश करके भ्रष्ट सरकारी कर्मचारियों की अच्छी खबर ली और शोषित एवं दलित वर्ग को क्रांति के लिए तैयार किया। इस दृष्टि से कवि की अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों ही उच्च कोटि की हैं।

1.4.3 गजानन माधव मुक्तिबोध (1917-1964)

मुक्तिबोध का जन्म ग्वालियर संभाग के श्योपुर कस्बे में हुआ था, जहाँ एक शताब्दी पूर्व उनके पूर्वज आ बसे थे। इनके पिता पुलिस में सब-इंस्पेक्टर थे। उनके बार-बार स्थानांतरण के कारण इनकी शिक्षा ढंग से नहीं हो सकी। 1938 में बी.ए.पास करने के बाद ये माधव कॉलेज, उज्जैन में शिक्षक हो गए। बाद में इन्होंने बनारस में 'हंस', जबलपुर में 'दैनिक जयहिंद' और द्वैमासिक पत्रिका 'समता' का संपादन किया। कुछ समय ये नागपुर में आकाशवाणी के समाचार विभाग में संपादक भी रहे। नागपुर में इन्होंने 'नया खून' साप्ताहिक का संपादन भी किया। 1954 में एम.ए. करने के बाद ये राजनांद गाँव के दिग्विजय महाविद्यालय में प्राध्यापक हो गए। 1964 में लंबी बीमारी के बाद इनका निधन हो गया।

यद्यपि मुक्तिबोध ने 'कामायनी : एक पुनर्विचार', 'एक साहित्यिक की डायरी', 'नए साहित्य का सौंदर्य शास्त्र' आदि से गद्य साहित्य के भंडार को समृद्ध किया तथापि उनका कविरूप उनके गद्यकार की अपेक्षा कहीं अधिक जीवंत और सशक्त रूप से प्रस्फुटित हुआ। इस बीच राजनांद गाँव में उन्होंने 'ब्रह्मराक्षस', 'ओरांग-ऊटांग' तथा 'अंधेरे में' जैसी सशक्त रचनाएँ लिखीं।

यह सच है कि प्रगतिवाद ने मुक्तिबोध को यथार्थवादी दृष्टि दी लेकिन इसके साथ ही समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, पूंजीवादी व्यापार विनिमय में फैला आर्थिक अपराधों का सिलसिला, जो सभी वर्गों के मनुष्यों में व्यापक है, मुक्तिबोध की दृष्टि से बच नहीं सका। जीवन के इस यथार्थ का अनुभव कर वे कटु सत्य को प्रकट करने को बाध्य हो जाते हैं। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' कविता में उन्होंने लिखा–

"कोलतारी सड़क के बीचोंबीच खड़ी हुई
गांधी की मूर्ति पर
बैठे हुए घुग्घू ने
गाना शुरू किया,
हिचकी ताल पर
साँसों ने तब
मर जाना
शुरू किया,
टेलीफून-खंबों पर थमे हुए तारों ने

सट्टे के ट्रंककॉल सुरों में
थर्राना और झनझनाना शुरू किया।"

(यहाँ सट्टा शब्द पूंजीवाद की ही देन है।)

वास्तव में मुक्तिबोध को कविरूप में ख्याति 'तार सप्तक' से मिली।

'तार सप्तक' में मुक्तिबोध की सत्रह कविताएँ संकलित हैं जिनके विषय में कवि कहता है–"मैं कलाकार की स्थानांतरण प्रवृत्ति (माइग्रेशन इंस्टिंक्ट) पर बहुत जोर देता हूँ। आज यदि वैविध्यमय, उलझन भरे, रंग-बिरंगे जीवन को देखना है तो अपने वैयक्तिक क्षेत्र से एक बार बाहर आना ही होगा।"

मुक्तिबोध की तार सप्तक में संकलित कविताओं में 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' अपेक्षाकृत लंबी कविता है। दुर्भाग्यवश इस संकलन का प्रकाशन उनकी मृत्यु के बाद श्रीकांत वर्मा ने किया। इसमें अट्ठाइस कविताएँ हैं। इनमें कवि ने लंबे रूपकों के सहारे अपनी बात कहने का प्रयास किया है। अतः, इसे 'रूपक प्रधान कथात्मक काव्य' कह सकते हैं।

मुक्तिबोध की कविताओं पर दुरूहता का आरोप लगाया जाता है। जो कुछ हद तक सही भी है। यों फैंटेसी भी उनके काव्य को जटिल बनाती है। फैंटेसी को उन्होंने 'अनुभव की कन्या' कहा है।

मुक्तिबोध के काव्य की विशेषता अंतर्द्वंद्व है। इसी द्वंद्व में बेचैन वे अपनी अस्मिता की तलाश भी करते रहे हैं। इसका उदाहरण निम्नलिखित पंक्तियों में देखिए–

"जितना ही तीव्र द्वंद्व क्रियाओं, घटनाओं का
बाहरी दुनिया में,
उतनी ही तेजी से भीतरी दुनिया में,
चलता है द्वंद्व कि
फिक्र से फिक्र लगी हुई है।
आज उस पागल ने मेरी चैन भुला दी,
मेरी नींद गँवा दी।"

यह सच है कि मुक्तिबोध ने अपनी फैंटेसी में चाहे वह 'ब्रह्म राक्षस' हो, 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' हो या 'अंधेरे में' हो, अनेक भद्दे और बदरंग प्रतीक दिए हैं। एक बिंब में ब्रह्म राक्षस कुएँ में पड़ा है, तो कहीं रीढ़ की हड्डी मरे हुए साँप तक की-सी लुचलुची है। उनकी कविता की अंतर्वस्तु है–यंत्रणा, संत्रास, आक्रोश, विद्रोह, भूख, पीड़ा, मृत्यु, दरिद्रता आदि।

अन्य प्रयोगवादी कवियों के समान मुक्तिबोध ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए शब्दों के चयन में अनूठी क्षमता प्रदर्शित करते हुए तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, मराठी आदि सभी प्रकार के शब्दों का खुलकर प्रयोग किया। इनकी भाषा कहीं संस्कृतनिष्ठ है, तो कहीं अरबी-फारसी-उर्दू से भरपूर है।

1.4.4 **सर्वेश्वर दयाल सक्सेना** (1927-1983)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में हुआ था। इनका बचपन कसबे जैसे छोटे से शहर के आस-पास के खेतों, खलिहानों और गाँवों के बीच बीता। इनकी प्रारंभिक शिक्षा बस्ती के स्कूल में और उच्च शिक्षा बनारस (वाराणसी) और इलाहाबाद में हुई। इन्होंने 1949 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। इसके पश्चात् ये कुछ समय स्कूल में अध्यापक रहे, फिर पाँच साल क्लर्की की। ये

दिल्ली के आकाशवाणी केंद्र के समाचार विभाग में रहे और फिर आकाशवाणी के कुछ केंद्रों में सहायक प्रोड्यूसर के रूप में भी काम किया। बाद में ये साप्ताहिक 'दिनमान' और 'पराग' के भी संपादक हो गए।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के व्यक्तित्व में व्यंग्य विनोद की प्रधानता रही है। उदाहरणार्थ–वे कहते हैं कि "मेरा साहित्य की ओर झुकाव शायद कुसंग के कारण अधिक है।"

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने कविताओं के साथ कहानियाँ और उपन्यास भी लिखे। इनके प्रमुख कविता संग्रह हैं–'काठ की घंटियाँ', 'बाँस का पुल', 'एक सूनी नाव' और 'गर्म हवाएँ'। इन्हें 'खूँटियों पर टंगे हुए लोग' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला। 'कुआनो नदी', 'जंगल का दर्द' आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। इसके अतिरिक्त तृतीय सप्तक में 'सूखे पीले पत्तों ने कहा', 'चुपाई मारो दुलहिन' आदि अनेक कविताएँ प्रकाशित हुईं।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने जीवन भर विकराल रूप धारण कर परेशान करते रहे दुखों और विडंबनाओं का सामना साहसपूर्वक किया। इनकी रचनाओं में अन्याय-अत्याचार और सामाजिक विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया गया है। जैसे–

"जब सब बोलते थे
वह चुप रहता था
जब सब चलते थे
वह पीछे हो जाता था
जब सब खाने पर टूटते थे
वह अलग बैठा हूँगता रहता था
जब सब निढाल हो सोते थे
वह शून्य में टकटकी लगाए रहता था
लेकिन जब गोली चली
तब सबसे पहले
वही मारा गया।" –(पिछड़ा आदमी)

सर्वेश्वर तृतीय सप्तक के कवि हैं। उनके काव्य लेखन का काल प्रयोगवादी न होकर 'नई कविता' की वकालत का काल था। वस्तुतः प्रयोगवाद और नई कविता दो भिन्न काव्य-आंदोलन न होकर छायावादोत्तर काव्य के प्रारंभिक और परवर्ती रूप हैं। इसलिए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को दोनों काव्य धाराओं का कवि कहा जा सकता है। अपने समकालीन कवियों के समान सर्वेश्वर की रुचि भी नए प्रयोगों की ओर रही। इन्होंने शब्द, प्रतीक, बिंब और उपमान योजना के सभी क्षेत्रों में नए प्रयोग किए।

सर्वेश्वर ने काव्य भाषा को जनभाषा के निकट लाने का कार्य किया। जिसकी वकालत 'अज्ञेय', 'माथुर' आदि कवि भी करते रहे। कवि ने छंदों के बंधन को यहाँ तक अस्वीकार किया कि कहीं-कहीं इनकी कविता गद्य-सी लगती है। सर्वेश्वर ने प्रकृति चित्रण में बिंबों, प्रतीकों और उपमानों का प्रयोग किया, जैसे–

"आकाश का साफा बाँधकर
सूरज की चिलम खींचता
बैठा है पहाड़
घुटनों पर पड़ी है नदी चादर-सी।"

छायावाद के बाद नई कविता की पहचान कराने वाले कवियों में उनका विशेष योगदान है। अपने चुभते हुए सटीक व्यंग्यों के लिए सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को सदैव याद किया जाएगा।

1.4.5 **रघुवीर सहाय** (1929-1990)

रघुवीर सहाय का जन्म लखनऊ में हुआ। लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. करके उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया। कुछ दिनों तक वे 'प्रतीक' मासिक के सहायक संपादक रहे। उसके बाद उन्होंने आकाशवाणी के हिंदी समाचार विभाग में कार्य किया। लगभग एक वर्ष तक हैदराबाद से प्रकाशित 'कल्पना' के संपादक भी रहे। तदनंतर दिनमान का संपादन करते रहे। इसके बाद वे स्वतंत्र लेखन करते रहे।

रघुवीर सहाय 'अज्ञेय' द्वारा संपादित दूसरा सप्तक के प्रमुख कवि हैं। अपनी कविताओं में वे रोजमर्रा के प्रसंगों को उठाकर अपनी विशिष्ट काव्य शैली में उन्हें प्रभावशाली एवं प्रासंगिक बनाते हैं।

रघुवीर सहाय की पहली समर्थ कृति 'सीढ़ियों पर धूप में' हैं। अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ हैं–'आत्महत्या के विरुद्ध', 'हँसो हँसो जल्दी हँसो', और 'लोग भूल गए हैं'।

लोग भूल गए हैं कृति पर उन्हें 1984 ई. का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

रघुवीर सहाय रोजमर्रा के प्रसंगों को उठाकर अपनी विशिष्ट काव्य शैली में उन्हें प्रभावशाली एवं प्रासंगिक बनाते हैं। अपनी सरल, सीधी और सपाट भाषा के लिए रघुवीर सहाय जाने जाते हैं।

चौड़ी सड़क गली पतली थी
दिन का समय घनी बदली थी
रामदास उस दिन उदास था
अंत समय आ गया पास था
उसे बता, यह दिया गया था, उसकी हत्या होगी।

* * *

निकल गली से तब हत्यारा
आया उसने नाम पुकारा
हाथ तौलकर चाकू मारा
छूटा लोहू का फव्वारा
कहा नहीं था उसने आखिर उसकी हत्या होगी ?

1.4.6 **केदारनाथ सिंह** (जन्म 1934)

केदारनाथ सिंह का जन्म बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. करने के बाद उन्होंने वहीं से आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। बाद में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा केंद्र में हिंदी के प्रोफेसर रहे।

केदारनाथ सिंह मूलतः मानवीय संवेदनाओं के कवि हैं। अपनी कविताओं में उन्होंने बिंब-विधान पर अधिक बल दिया है। तीसरा सप्तक में भी उनकी कविताएँ संकलित हैं। केदारनाथ सिंह की कविताओं में शोर-शराबा न होकर, विद्रोह का शांत और संयत स्वर सशक्त रूप में उभरता है। 'जमीन पक रही

है' संकलन में 'जमीन', 'रोटी', 'बैल' आदि उनकी इसी प्रकार की कविताएँ हैं। संवेदना और विचारबोध उनकी कविताओं में साथ-साथ चलते हैं। 'अकाल में सारस' कविता संग्रह पर उनको 1989 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अब तक प्रकाशित केदारनाथ सिंह के काव्य संग्रह इस प्रकार हैं–बिल्कुल अभी (1960), जमीन पक रही है (1980), यहाँ से देखो (1983), अकाल में सारस (1989), उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ (1995) और बाघ (1996) आदि।

केदारनाथ सिंह मूलतः लोक के कवि हैं। उनका मानना है कि जीवन के बिना प्रकृति और वस्तुएँ कुछ भी नहीं हैं। उन्होंने जीवन मूल्यों को नये मुहावरों में बाँधने की कोशिश की है–

मेरे बेटे
बिजली की तरह कभी मत गिरना
और कभी गिर भी पड़ो
तो दूब की तरह उठ पड़ने के लिए
हमेशा तैयार रहना
कभी अँधेरे में
अगर भूल जाना रास्ता।
तो ध्रुव तारे पर नहीं सिर्फ दूर से आने वाली
कुत्तों के भूकने की आवाज पर
भरोसा करना।

उनकी भाषा में सहजता, सरलता और लोकतत्व की प्रधानता है।

1.4.7 **त्रिलोचन** (1917-2007)

त्रिलोचन शास्त्री का वास्तविक नाम वासुदेव सिंह है। उनका जन्म सुल्तानपुर (उ.प्र.) जिले के चिरानी पट्टी गाँव में हुआ था। शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने अंग्रेजी विषय में एम.ए. पूर्वार्ध की परीक्षा पास की। त्रिलोचन ने स्वाध्याय द्वारा उर्दू, फारसी, अरबी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की जानकारी प्राप्त की। उनके कविता संग्रह 'ताप के ताए हुए दिन' पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिल चुका है।

त्रिलोचन रचनात्मक लेखन के साथ ही कोश-संपादन एवं पत्रकारिता से जुड़े रहे। 'हंस' और 'कहानी' पत्रिकाओं के साथ ही वे 'आज', 'जनवार्ता', 'समाज', 'प्रदीप' और 'चित्रलेखा' आदि पत्रिकाओं के सहसंपादक रहे। कुछ वर्षों तक दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा निर्माणाधीन उर्दू-हिंदी कोश का संपादन भी किया। आप सागर विश्वविद्यालय में मुक्तिबोध पीठ के अतिथि प्रोफेसर के रूप में काम करते रहे।

त्रिलोचन की कविताओं में माटी की महक है। उन्होंने जनजीवन एवं मानवीय संबंधों का बहुत ही मार्मिक चित्रण अपनी कविताओं में किया है। उनकी कविता ठोस जमीन और ठेठ भाषा से जुड़ी हुई है। वस्तुतः त्रिलोचन एक प्रगतिशील कवि हैं, किंतु उनकी प्रगतिशीलता सतही स्तर पर दिखाई नहीं देती। उनकी कविता में अनेक शिल्पगत विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं।

त्रिलोचन की मुख्य रचनाएँ हैं–धरती, दिगंत, शब्द, ताप के ताए हुए दिन, उस जनपद का कवि हूँ, अरधान, तुम्हें सौंपता हूँ आदि।

त्रिलोचन ने ग्रामीण जनजीवन को आधार बनाकर अनेक महत्वपूर्ण कविताएँ लिखी हैं। ऐसी ही एक कविता है 'चंपा काले अक्षर नहीं चीह्नती'–

चंपा बोली : तुम कितने झूठे हो, देखा
हाय राम, तुम पढ़-लिखकर कितने झूठे हो
मैं तो ब्याह कभी न करूँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को संग साथ रखूँगी
कलकत्ता में कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बजर गिरे।

1.4.8 भवानी प्रसाद मिश्र (1913-1989)

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म इगरिया (सिवनी मालवा) जिला होशंगाबाद में हुआ था। इनकी शिक्षा होशंगाबाद और जबलपुर में हुई। कुछ समय तक ये बैतूल, मध्यप्रदेश में एक हाई स्कूल में प्रधानाध्यापक रहे। वहीं से भारत छोड़ो आंदोलन के एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार किए गए और नागपुर सेंट्रल जेल में बंद कर दिए गए। जेल में उस समय के बड़े नेताओं के संपर्क में आए। जेल से रिहा होने के बाद ये गांधी जी के सेवाग्राम आश्रम में महिला शिक्षा के प्रभारी रहे। वहीं से ये हैदराबाद से निकलने वाली 'कल्पना' के संपादक बनकर चले गए। इसी बीच इन्होंने चेन्नई और मुंबई में फिल्मों के लिए संवाद-लेखन का कार्य किया। इन पर ये आरोप भी लगा कि ये गीत बेच रहे हैं। इस पर इन्होंने ये व्यंग्यात्मक कविता लिखी–

जी हाँ हुजूर मैं गीत बेचता हूँ।
जी माल देखिए, दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं हैं, काम बताऊँगा,
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने
यह गीत, सख्त सिर-दर्द भुलाएगा
यह गीत पिया को पास बुलाएगा।

भवानी प्रसाद मिश्र हैदराबाद के बाद कुछ समय तक मुंबई में रहे और उसके बाद आजीवन दिल्ली में रहकर विभिन्न पदों को संभाला और 'गांधी मार्ग' का संपादन करते रहे। भवानी प्रसाद मिश्र की सर्वाधिक प्रसिद्ध कविता 'सतपुड़ा के घने जंगल' मानी जाती है। इसमें जंगल का संपूर्ण दृश्य रूपायित हुआ है–

झाड़ ऊँचे और नीचे
चुप खड़े हैं, आँख मींचे
घास चुप है, काँस चुप है
मूक शाल पलाश चुप है
बन सके तो धँसो इनमें
धँस न पाती हवा जिनमें,
सतपुड़ा के घने जंगल

नींद में डूबे हुए-से
ऊँघते अनमने जंगल।

'बुनी हुई रस्सी' पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। इनकी भाषा में सादगी है। वह सहज अर्थबोधक और प्रसाद गुण युक्त भी है। कवि भवानी भाई अपनी कविता को जब प्रस्तुत करते हैं तब ऐसा लगता है जैसे बातचीत कर रहे हों। यह उनके लोकजीवन से जुड़े रहने का सबसे बड़ा प्रमाण है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं–अँधेरी कविताएँ, गांधी पंचशती, त्रिकाल संध्या, कालजयी (खंड काव्य) आदि।

1.4.9 केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000)

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म बांदा जिले की बबेरू तहसील के कमासिन गाँव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में हुई। उसके बाद रायबरेली, इलाहाबाद और कानपुर में। इलाहाबाद के दिनों में ये निराला, बच्चन, शमशेर आदि के संपर्क में आए। पेशे से ये वकील थे और बाद में इन्हें सरकारी वकील बना दिया गया था। बांदा में केन नदी के किनारे घूमना, एकांत में बैठकर उसे बहते देखना, इन्हें बहुत अच्छा लगता था। इसलिए इन्हें केन का कवि भी कहा जाता है। इनकी पत्नी ही इनकी प्रेरणास्रोत हैं। प्रगतिशील कवियों में इनका महत्वपूर्ण स्थान है।

भारतीय किसान की गरीबी को इन्होंने अपनी कविता के केंद्र में रखा–

जब बाप मरा तब पाया
भूखे किसान के बेटे ने
घर का मलबा, टूटी खटिया
कुछ हाथ भूमि–वह भी परती
बनिया के रुपयों का कर्जा
जो नहीं चुकाने पर चुकता
दीमक, गोबर, मच्छर, माटा
ऐसे हजार सब सहवासी
बस यही नहीं जो भूख मिली
सौगुनी बाप से अधिक मिली।

केदारनाथ अग्रवाल श्रम में शक्ति देखने के कायल थे–

जब-जब मैंने उसको देखा, लोहा देखा
लोहा जैसे ढलते देखा, गोली जैसे चलते देखा।

केदारनाथ अग्रवाल की प्रमुख रचनाएँ हैं–'फूल नहीं रंग बोलते हैं', 'नींद के बादल', 'युग की गंगा', 'पंख और पतवार', 'कहैं केदार खरी-खरी' आदि। अपनी पत्नी की याद में रचे गए इनके दो काव्य संग्रह, 'हे मेरी तुम', 'जमुन जल तुम' उल्लेखनीय हैं। 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' पर इन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अन्य महत्वपूर्ण रचनाकार

आधुनिक हिंदी काव्य धारा के अन्य महत्वपूर्ण कवियों में शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, लक्ष्मीकांत वर्मा, धर्मवीर भारती, जगदीश गुप्त, श्रीकांत वर्मा, धूमिल, दुष्यंत कुमार, अशोक वाजपेयी,

चंद्रकांत देवताले, कुँवर नारायण, लीलाधर जगूड़ी, मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, अरुण कमल, अष्टभुजा शुक्ल, एकांत श्रीवास्तव, अनामिका, कात्यायनी, सुनीता जैन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

विगत दो दशकों से हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श आदि के साहित्य पर हिंदी जगत में गंभीर चिंतन हो रहा है। कई दलित लेखकों ने अपने जीवन के भोगे हुए यथार्थ को अपनी आत्मकथाओं द्वारा अभिव्यक्त किया है। साथ ही इन्हीं दलित लेखकों ने कविताओं के माध्यम से भी अपने भोगे हुए यथार्थ को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। दलित साहित्य मानवीय संवेदना के धरातल पर एक नए रूप में उभरा है। ऐसे रचनाकारों में ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूरजपाल चौहान, श्योराज सिंह बेचैन, मोहनदास नैमिशराय, कालीचरण स्नेही, जयप्रकाश कर्दम, अनिता भारती, जयप्रकाश लीलवान, सुशीला टाकभोरे, दिलीप कठेरिया, सुदेश तनवर, रजतरानी मीनू आदि महत्वपूर्ण हैं।

पाठ-11 : काव्य सौंदर्य के तत्व
(द्वितीय प्रश्न पत्र)

विषय सूची

1.0	काव्य सौंदर्य के तत्व	70
1.1	अलंकार	70
	- अनुप्रास अलंकार	70
	- यमक अलंकार	71
	- उपमा अलंकार	71
	- रूपक अलंकार	72
	- उत्प्रेक्षा अलंकार	73
1.2	रस	73
	- रस के अवयव	74
	- श्रृंगार रस	75
	- वीर रस	76
	- हास्य रस	76
1.3	छंद	76
	- दोहा	76
	- सोरठा	77
	- चौपाई	77
1.4	शब्द शक्ति	78
	- अभिधा	79
	- लक्षणा	79
	- व्यंजना	79

1.0 काव्य सौंदर्य के तत्व

कविता को पढ़कर या सुनकर हमें सौंदर्य की अनुभूति होती है। इस अनुभूति से हमें आनंद मिलता है। पुराने आचार्यों ने सौंदर्य के इस अनुभव को आस्वाद कहा है। यह सौंदर्यानुभूति या आस्वाद ही काव्य साहित्य का सार है। इसमें भाव सौंदर्य, नाद सौंदर्य और विचार सौंदर्य सम्मिलित हैं। काव्य के सौंदर्य को बढ़ाने में रस, छंद, अलंकार, शब्द शक्तियाँ आदि तत्व अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत पाठ में हम काव्य-सौंदर्य के इन्हीं तत्वों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

1.1 अलंकार

जिस प्रकार किसी युवती को वस्त्रों और आभूषणों से सजा दिया जाए तो वह अधिक सुंदर लगने लगती है उसी प्रकार यदि भाषा को सुदंर शब्दों और अलंकारों से युक्त कर दिया जाए तो वह अधिक आकर्षक प्रतीत होती है। कहने का अभिप्राय यह है कि अलंकारों से काव्य की शोभा बढ़ जाती है। इस प्रकार काव्य को रुचिकर, सुंदर और प्रभावशाली बनाने के लिए शब्द या अर्थ के स्तर पर जो योजना की जाती है, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं :– (क) शब्दालंकार और (ख) अर्थालंकार।

जहाँ वर्ण और शब्द के कारण कथन में रमणीयता आए उसे शब्दालंकार और जहाँ अर्थ के कारण कविता में रमणीयता और पूर्णता आए उसे अर्थालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार के चार प्रमुख भेद हैं :–

1. अनुप्रास 2. यमक 3. श्लेष 4. वक्रोक्ति।

अर्थालंकारों की संख्या सौ से अधिक है, लेकिन प्रस्तुत पाठ में हम उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा इन तीन अलंकारों पर ही विचार करेंगे।

अनुप्रास अलंकार

इस अलंकार में समान व्यंजनों की आवृत्ति होती है। इससे कविता में सुंदरता और लय आ जाती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रकृति वर्णन की निम्नलिखित पंक्तियों को देखिए :–

'तरनि तनूजा तट तमाल, तरुवर बहु छाए।'

उपर्युक्त पंक्ति में 'त' वर्ण की पाँच बार आवृत्ति हुई हे, इसलिए यह अनुप्रास अलंकार का अच्छा उदाहरण है।

इसी प्रकार सुमित्रानंदन पंत की इन दो पंक्तियों को देखिए :–

मृदु मंद मंद मंथर, लघु तरणि हंसिनी-सी सुंदर,
तिर रही खोल पालों के पर।

इस कविता की पहली पंक्ति में मंद की आवृत्ति हुई है। वर्णों की आवृत्ति से कविता में माधुर्य, सुंदरता और लयात्मकता आ जाती है जो सुनने वालों को अच्छी लगती है।

अनुप्रास अलंकार के दो और उदाहरण देखिए–

(1) झाँक न झंका के झोंके में, झुककर खुले झरोखे से - (पंचवटी–मैथिलीशरण गुप्त)

(2) सास ससुर गुर सजन सुहाई, सुत सुंदर सीतल सुखदाई। - (रामचरितमानस–तुलसीदास)

यहाँ पहले उदाहरण में 'झ' और 'क' की और दूसरे उदाहरण में 'स' वर्ण की अनेक बार आवृत्ति हुई है, अतएव यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

यमक अलंकार

यमक में एक ही शब्द की दो या अधिक बार आवृत्ति होती है और इन दोहराए जाने वाले शब्दों के अर्थ भी भिन्न-भिन्न होते हैं। यमक के प्रयोग से कविता में लयात्मकता, चमत्कार और सुंदरता आ जाती है। इसका उदाहरण देखिए :–

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या पाए बौराए जग, वा खाए बौराए।।

इस दोहे में 'कनक' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है और दोनों 'कनक' के अर्थ अलग-अलग हैं। पहले 'कनक' का अर्थ धतूरा है और दूसरे 'कनक' का अर्थ 'सोना' (धातु) है। धतूरा खाने से नशा होता है और सोने को पा लेने मात्र से मनुष्य में घमंड (अंहकार) आ जाता है। यहाँ कवि ने सोने और धतूरे में तुलना के लिए एक ही शब्द का प्रयोग किया है, इसलिए यहाँ 'यमक' अलंकार है।

दूसरा उदाहरण देखिए :–

सारंग ले सारंग चली, सारंग पुग्यो आय
सारंग ले सारंग धर्‌यो सारंग सारंग माय।

इसमें सारंग शब्द के अर्थ हैं 1 घटा, 2 सुंदरी 3 वर्षा (मेघ) 4 वस्त्र 5 घड़ा, 6 सुंदरी, 7 सरोवर ।

एक अन्य उदाहरण देखिए :–

तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं।

यहाँ पहले 'बेर' का अर्थ बार (तीन बार) से है जब कि दूसरे का अर्थ बेर (फल) है।

ऐसे ही नीचे लिखे उदाहरण में :–

खग-कुल कुल कुल-सा बोल रहा। किसलय का अंचल डोल रहा।

पहले 'कुल' का अर्थ समूह है और दूसरे कुल कुल का अर्थ खगों (पक्षियों) के चहचहाने का स्वर है। अतएव यहाँ यमक अलंकार है।

उपमा अलंकार

जैसा कि पहले भी हम बता चुके हैं कि उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा ये अर्थालंकार हैं और ये सादृश्यमूलक हैं। सादृश्यमूलक अलंकारों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–

1. सादृश्यमूलक अलंकारों में दो वस्तुओं में समानता बताई जाती है।
2. सादृश्यमूलक अलंकारों में चार तत्व होते हैं। ये तत्व हैं :–

(क) उपमेय : वह वस्तु या व्यक्ति जिसकी किसी दूसरी वस्तु अथवा व्यक्ति से तुलना की जाए।

(ख) उपमान : जिस वस्तु या व्यक्ति से तुलना की जाए।

(ग) सामान्य धर्म : वह गुण जिसके कारण उपमेय और उपमान में समानता दिखाई जाए।

(घ) वाचक शब्द : वह पद या शब्द जिसके द्वारा उपमेय और उपमान की समता प्रकट की जाए।

जिस पंक्ति में दो भिन्न पदार्थों अथवा व्यक्तियों में समान गुण के कारण समानता दिखाई जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है, जैसे–

पीपर पात सरिस मन डोला

अर्थात पीपल के पत्ते के समान मन काँप रहा था। यहाँ 'मन' उपमेय, 'पीपर पात' उपमान 'डोला' सामान्य धर्म और 'सरिस' (के समान) वाचक शब्द है, अतएव यह उपमा अलंकार है।

निम्नलिखित पंक्तियों में उपमा का उदाहरण देखिए :–

राम लखन सीता सहित सोहत पर्ण निकेत
जिमि बस वासव अमरपुर, शचि जयंत समेत।

राम, सीता, लक्ष्मण–उपमेय सहित-साधारण धर्म, इंद्र शचि जयंत–उपमान जिमि–उपमा वाचक शब्द है।

एक अन्य उदाहरण देखिए :–

लघु तरणि हँसिनी-सी सुंदर, तिर रही खोल पालों के पर।

यहाँ लघु तरणि (छोटी नौका) उपमेय की हँसिनी उपमान से तुलना की गई है। 'सी' वाचक शब्द है और सुंदर समान धर्म है।

रूपक अलंकार

'रूपक' अलंकार वहाँ होता है जहाँ उपमेय पर उपमान का आरोप करते हुए दोनों में अभेद बताया जाए। 'उपमा' की तरह 'रूपक' में उपमेय तथा उपमान दोनों का अलग-अलग उल्लेख होता है, परंतु कवि दोनों को अलग-अलग कहकर भी उनमें अभेद या एकता बताता है, जैसे:–

चरण-कमल बंदौ हरि राई।

यहाँ श्रीकृष्ण के चरण उपमेय (प्रस्तुत) और कमल उपमान (अप्रस्तुत) है। प्रस्तुत में अप्रस्तुत अथवा चरण में कमल का अरोप है, अत: यहाँ रूपक अलंकार है।

प्रसाद की इन पंक्तियों में भी रूपक का अच्छा उदाहरण देखा जा सकता है–

बाड़व ज्वाला सोती थी, इस प्रणय सिंधु के तल में।
प्यासी मछली-सी आँखें भी विकल रूप के जल में।।

इसमें आँखों में मछली का आरोप रूप में जल के आरोप का कारण है।

इसी प्रकार निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए :–

बीती विभावरी जाग री।
अंबर पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा नागरी।

यहाँ अंबर, तारा और उषा उपमेय पर क्रमश: पनघट और नागरी उपमान का आरोपण हो रहा है।

उत्प्रेक्षा अलंकार

'उत्प्रेक्षा' का अर्थ कल्पना या संभावना होता है। उपमेय में उपमान की कल्पना या संभावना दिखाई जाए तो उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा अलंकार में कवि 'मानो', 'मानहुँ', 'जानहुँ', 'गोया', 'ऐसा लगता है', 'सचमुच ही' आदि शब्दों के द्वारा 'कल्पना' या संभावना को व्यक्त करते हैं। अत: इन शब्दों के द्वारा उत्प्रेक्षा अलंकार की पहचान की जा सकती है। इस संबंध में एक पुराने कवि ने इसके लक्षण इस प्रकार बताए हैं । 'उपमेय भिन्न, उपमान भिन्न, फिर भी समझो एकमुख मानो है चंद्रमा, यह उत्प्रेक्षा टेक।'

उदाहरण :–

चमचमात चंचल नयन, बिच घूँघट-पट झीन।
मानहुँ सुर सरिता विमल जल उछरत जुग मीन।।

बिहारी के इस दोहे में घूँघट के झीने (पतले) पट में चमचमाते चंचल नयनों (आँखों) के लिए कहा गया है कि मानो वे गंगा के स्वच्छ जल में उछलती हुई दो मछलियाँ हैं। इस संभावना या कल्पना के कारण यहा उत्प्रेक्षा अलंकार है। नायिका के नयन यहाँ उपमेय और मछली उपमान है।

दूसरा उदाहरण देखिए :–

रहिमन पुतरी स्याम, मनहु जलज मधुकर लसै।

यहाँ श्याम पुतली (उपमेय – आँख की काली पुतली) में जलज मधुकर (कमल पर बैठा भौंरा– उपमान) की संभावना की गई है 'मनहु' वाचक शब्द है, अतएव यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

रामचरितमानस की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए :–

अति कटु वचन कहति कैकेयी मानहु लोन जरे पै देई।

यहाँ 'कटु वचन' उपमेय में 'लोन' उपमान की संभावना किए जाने से उत्प्रेक्षा अलंकार है। इसी प्रकार बिहारी की निम्नलिखित पंक्तियाँ उत्प्रेक्षा अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं :–

सोहत ओढ़े पीत पट श्याम सलोने गात।
मनो नीलमणि सैल पर आतप परयो प्रभात।

यहाँ 'श्याम' उपमेय में 'शैल' उपमान की संभावना की जा रही है।

1.2 रस

यहाँ यह जान लेना उचित होगा कि साहित्य में रस क्या होता है ? सभी साहित्य पढ़ने वाले यह बात मानते हैं कि साहित्य पढ़ने से पाठक को आनंद का अनुभव होता है। परंतु यह आनंद वैसा नहीं होता जैसा संसार की दूसरी भौतिक वस्तुओं से मिलता है। साहित्य पढ़ने या सुनने, नाटक या सिनेमा देखने से जो आनंद मिलता है उसे साहित्य शास्त्र में 'रस' कहते हैं। यह आनंद व्यक्तिगत राग-द्वेष से रहित होता है। सांसारिक प्रेम में प्रेमी जब प्रेम करता है तो वह दुखी होता है या क्रोध करता है क्योंकि इस प्रेम, दुख या क्रोध में प्रेमी का किसी से कोई न कोई व्यक्तिगत संबंध होता है। परंतु काव्य को पढ़कर या सुनकर या नाटक में अभिनय को देखकर यदि हमें प्रेम, दुख और क्रोध की अनुभूति होती है तो उसमें हमारा या प्रेमी का अपना स्वार्थ, राग या द्वेष नहीं होता। इस प्रकार साहित्य के इस

अनुभव में हमारी संकीर्णता समाप्त हो जाती है और तब हम उस साहित्य का आनंद ले सकते हैं जो सबके लिए है। प्राचीन आचार्यों ने इसकी तुलना योगियों की समाधि के अनुभव या ब्रह्मानंद से की है।

रस के अवयव

रस के चार अवयव हैं। ये हैं :–

1. स्थायीभाव, 2 विभाव, 3. अनुभाव, 4. संचारीभाव।

(1) स्थायीभाव

स्थायीभाव उन संस्कारों या भावों को कहते हैं जो मनुष्य में जन्म से ही सहज रूप में रहते हैं, जैसे मनुष्य के चित्त में प्रेम, करुणा, दुख, क्रोध, आश्चर्य, उत्साह के भाव हमेशा रहते हैं। इसी तरह साहित्य में भी ये भाव हमें दिखाई देते हैं। इन्हें स्थायीभाव कहा जाता है।

स्थायीभाव दस हैं - रति (स्त्री-पुरुष का प्रेम), हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, घृणा, विस्मय (आश्चर्य), निर्वेद (वैराग्य या शांति) और स्नेह (बाल प्रेम) (अपने से छोटों से प्रेम)।

इन स्थायीभावों के आधार पर ही काव्य में दस रस माने जाते हैं - श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शांत और वात्सल्य।

(2) विभाव

स्थायीभाव को उत्पन्न करने में जो कारण होते हैं उन्हें विभाव कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं :–

(i) आलंबन विभाव (ii) उद्दीपन विभाव

(i) आलंबन विभाव : आलंबन विभाव वह व्यक्ति या पात्र होता है जिसके सहारे स्थायीभाव उत्पन्न होता है।

(ii) उद्दीपन विभाव : पाठक या दर्शक के मन में उठने वाले 'स्थायीभाव' को जो तत्व बढ़ाते या उकसाते हैं उन्हें उद्दीपन विभाव कहते हैं। ये दो प्रकार के हैं। जैसे–श्रृंगार रस के उदाहरण में एक तो जिससे नायक प्रेम करता है उसकी शारीरिक चेष्टाएँ या हावभाव नायक के मन में रतिभाव को बढ़ाते हैं और दूसरा आसपास का सुंदर वातावरण, चाँदनी रात आदि नायक के रतिभाव को तीव्र करने में सहायक होते हैं।

(3) अनुभाव : स्थायीभाव के उत्पन्न होने के बाद जो भाव उत्पन्न होते हैं उन्हें अनुभाव कहा जाता है। ये अनुभाव उस व्यक्ति (नायक, प्रेमी) में उत्पन्न होते हैं जो स्थायीभाव का आश्रय है। आश्रय की बाहरी चेष्टाओं को अनुभाव कह सकते हैं। जैसे–किसी को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाना, कँपकँपी छूटना, पसीना आना आदि।

(4) संचारीभाव : स्थायीभाव के साथ आते-जाते रहने वाले भावों को संचारीभाव कहते हैं। संचारीभाव तीस हैं, जैसे–चिंता, आलस्य, शंका, लज्जा, चपलता, हर्ष-विषाद, गर्व, उत्सुकता आदि।

रस, स्थायीभाव और संचारीभाव के संबंधों को इस प्रकार दिखाया जा सकता है :–

रस	*स्थायीभाव*	*संचारीभाव*
श्रृंगार	रति	स्मृति, चिंता, हर्ष, मोह आदि
हास्य	हास	हर्ष, चपलता आदि
करुण	शोक	ग्लानि, शंका, चिंता, दीनता आदि
वीभत्स	जुगुप्सा	दीनता, निर्वेद, ग्लानि आदि
भयानक	भय	त्रास, ग्लानि, शंका, चिंता आदि।
रौद्र	क्रोध	उग्रता, शंका, स्मृति आदि
वीर	उत्साह	आवेश, हर्ष, गर्व आदि
अद्भुत	विस्मय	हर्ष, स्मृति, शंका आदि
शांत	निर्वेद (वैराग्य)	धृति, स्मृति आदि
वत्सल	वात्सल्य	धृति, स्मृति आदि।

यहाँ हम तीन प्रमुख रसों के बारे में जानेंगे :–

श्रृंगार रस

नायक-नायिका (स्त्री-पुरूष) के पारस्परिक प्रेम (मिलन या विरह) के वर्णन से हृदय में उत्पन्न होने वाले आनंद को श्रृंगार रस कहते हैं। इसका स्थायीभाव रति है। श्रृंगार रस के संयोग और वियोग दो भेद होते हैं। उदाहरण देखें–

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करे, भौहनि हँसे, दैन कहै नट जाय।।

इस उदाहरण में संयोग श्रृंगार है। इसमें प्रेमी आश्रय है, प्रेमिका विषय (आलंबन)। प्रेमिका की सुंदरता उद्दीपन है। मोह आदि संचारीभाव हैं। इनसे यहाँ रति (प्रेम) स्थायीभाव प्रकट होता है जिससें संयोग श्रृंगार रस उत्पन्न होता है।

मधुवन तुम क्यों रहत हरे,
विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाढ़े क्यों न जरे ?

यहाँ श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर ब्रज के लोगों में उनके विरह के कारण वियोग श्रृंगार रस उत्पन्न हो रहा है। यहाँ आलंबन (श्रीकृष्ण), गोपियाँ (आश्रय) हैं। दुर्बल होना, आँसू बहाना, अनुभाव तथा दैन्य स्मृति विषाद, चिंता आदि संचारीभाव हैं।

श्रृंगार रस के कुछ अन्य उदाहरण देखिए–

हे खगमृग, हे मुधकर श्रेनी,
तुम देखी सीता मृगनयनी।

निसदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस ऋतु हम पै, जब तें स्याम सिधारे।

वीर रस

दीनों की दुर्दशा देखकर उनका उद्धार करने तथा शत्रु के उत्कर्ष को मिटाने आदि में जो उत्साह, कर्म-क्षेत्र में प्रवृत्त करता है, वह वीर रस कहलाता है। इसका स्थायीभाव उत्साह है।

मैं सत्य कहता हूँ सखे। सुकुमार मत जानो मुझे
यमराज से भी युद्ध में प्रस्तुत सदा मानो मुझे।

यह अभिमन्यु का सारथी के प्रति कथन है। यहाँ पर कौरव आलंबन, अभिमन्यु आश्रय, चक्रव्यूह उद्दीपन, अभिमन्यु के वाक्य अनुभाव और गर्व, हर्ष आदि संचारीभाव हैं।

वीर रस का उदाहरण देखिए–

जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं। कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं।।
काचे घट जिमि डारौं फोरी। सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी।।
तप प्रताप महिमा भगवाना। को बापुरो पिनाक पुराना।।

हास्य रस

किसी व्यक्ति या वस्तु की बिगड़ी हुई, भद्दी या कुरूप आकृति, विचित्र वेशभूषा, बातचीत का ढंग या चेष्टाएँ, आभूषण आदि को देखकर मन में जो विनोद का भाव पैदा होता है उस भाव को 'हास्य रस' कहते हैं।

उदाहरण–

दौड़-धूप में क्या रक्खा आराम करो आराम करो।
आराम जिंदगी की कुंजी इससे न तपेदिक होती है।
आराम सुधा की एक बूँद, तन का दुबलापन खोती है।
आराम शब्द में राम छिपा, जो सब बंधन को खोता है।
आराम शब्द का ज्ञाता तो बिरला ही योगी होता है।
इसलिए तुम्हें समझाता हूँ मेरे अनुभव से काम करो।
आराम करो आराम करो।।

–गोपाल प्रसाद 'व्यास'

यह कविता एक आलसी आदमी द्वारा कही गई है। इससे हास्य रस की सृष्टि होती है।

1.3 छंद

सामान्यत: पद्य की रचना यति, गति और लय के कारण छंद में होती है। छंद के कारण ही रचना का पाठ करते समय हम लय या प्रवाह का अनुभव करते हैं।

छंद दो प्रकार के होते हैं–मात्रिक और वर्णिक। जो छंद नियत मात्राओं से बनते हैं, वे मात्रिक और जो छंद वर्णों की नियत संख्या से बनते हैं, वे वर्णिक छंद होते हैं।

यति : यति का अर्थ रुकना है। कविता पढ़ते समय कुछ निर्धारित स्थलों पर रुकना आवश्यक होता है। यह छंद के प्रवाह या लय को बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है।

गति : गति यति का विलोम होती है। जहाँ यति नहीं होती वहाँ बिना रुके छंद का पाठ करना होता है।

लय : गति और यति के समन्वय से छंद में जो गुण आता है, उसे लय कहते हैं। लय के कारण ही कविता का पाठ या गायन आकर्षक हो जाता है।

चरण : प्रत्येक छंद में चार भाग होते हैं जिन्हें चरण या पाद कहते हैं।

मात्रा : किसी भी वर्ण के उच्चारण में लगने वाला समय मात्रा है। ह्रस्व वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है वह एक मात्रा और दीर्घ वर्ण के उच्चारण में लगने वाला समय दो मात्रा का होता है। जैसे 'क' में एक मात्रा है और 'का' में दो मात्राएँ।

छंद के बारे में वर्णों को ह्रस्व और दीर्घ न कहकर लघु और गुरु कहते हैं। लघु के लिए चिह्न खड़ी पाई (I) का तथा गुरु के लिए अवग्रह जो अंग्रेजी के 'S' के समान होता है, चिह्न का प्रयोग होता है।

दोहा

'दोहा' छंद में चार चरण होते हैं। इसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं। दोहे के दूसरे और चौथे चरण में तुक होती है, जब कि पहले और तीसरे में तुक नहीं होती। जैसे :–

पहला और तीसरा चरण - 13 मात्राएँ	दूसरा और चौथा चरण - 11 मात्राएँ
I I I I S I I I I I S	S I I S I I S I
रहिमन वे नर मर चुके,	जे कहुँ माँगन जाहिं = 13+11 मात्राएँ
I I S I I S S I S	I I I I I I I I S I
उनतें पहले वे मुए,	जिन मुख निकसत नाहिं। = 13+11 मात्राएँ

दोहा छंद के अन्य उदाहरण देखिए :–

माला फेरत जुग गया, गया न मनका फेर।
करका मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आई हैं, बनत न लगि है देर।।

मुखिया मुख सों चाहिए, खान पान को एक।
पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।।

सोरठा

यह भी मात्रिक छंद है। इसे दोहे का उलटा कहा जा सकता है। इसके दूसरे और चौथे चरण में 13-13 और पहले और तीसरे में 11-11 मात्राएँ होती हैं। दोहे के विपरीत सोरठे के पहले और तीसरे चरण में तुक होती है, दूसरे और चौथे चरण में तुक रहना आवश्यक नहीं। जैसे :–

SS I I I I S I I S S I I I SI I I

बंदौ गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि =11+13 मात्राएँ

I S S I I I S I S I I I I I I I I I I I

महा मोह तम पुंज, जासु बचन रविकर निकर। =11-13 मात्राएँ

अन्य उदाहरण देखिए :–

जोहि सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करिवर बदन।
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन।।

लिखकर लोहित लेख, डूब गया दिनमणि अहा।
व्योम सिंधु सखि देख, तारक बुदबुद दे रहा।।

चौपाई

चौपाई भी मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16-16 मात्राएँ होती हैं। चौपाई के दो चरणों को अर्धाली कहा जाता है। इसमें तुक का निर्वाह किया जाता है। जैसे :–

S I I I I I S I I S S

देखन नगरु भूप सुत आए। = 16 मात्राएँ

I S S I I I S I I S S

समाचार पुरबासिन्ह पाए। =16 मात्राएँ

S S S I S I I I S S

धाए धाम काम सब त्यागी। = 16 मात्राएँ

I I I S I I I S I I S S

मनहुँ रंक निधि लूटन लागी। = 16 मात्राएँ

अन्य उदाहरण देखिए :–

मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी।
बंदहुँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भवरुज परिवारू।।

1.4 शब्द शक्ति

किसी उक्ति में शब्द और अर्थ दोनों का महत्व होता है। साहित्य में अर्थ से रहित शब्द की कल्पना नहीं की जा सकती। शब्द और अर्थ दोनों एक-दूसरे से मिले रहते हैं। हम शब्द शक्ति को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं–"शब्द की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा शब्द के किसी अर्थ का ज्ञान होता है उसे शब्द शक्ति कहते हैं।"

आचार्यों ने अर्थ के तीन भेद माने हैं, ये हैं – वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य। इस आधार पर शब्द भी तीन प्रकार के होते हैं–वाचक, लक्षक और व्यंजक। ये तीन प्रकार के अर्थ जिसे व्यक्त करते हैं, ये हैं–वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ। इस प्रकार का अर्थ बोध कराने वाली निम्नलिखित तीन शब्द शक्तियाँ हैं।

(1) अभिधा

जिस शब्द की शक्ति के कारण किसी शब्द का सामान्य प्रचलित मुख्य अर्थ समझ में आता है, उसे अभिधा शक्ति कहते हैं। अर्थात कोश में दिए शब्द का अर्थ अभिधा कहलाता है। जैसें,

वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे
इलाहाबाद के पथ पर।

यह अभिधा का उदाहरण है। यहाँ कवि ने कविता में सीधा-सादा अर्थ व्यक्त किया है।

एक और उदाहरण देखिए–

चलो चलो इस अमलतास के फूल न तोड़ो।
ठीक नहीं यह, इस रसाल की ममता छोड़ो।।

– मृण्मयी (सियारामशरण गुप्त)

यहाँ सभी शब्दों के अर्थ कोशीय अर्थ के द्वारा स्पष्ट हो जाते हैं।

(2) लक्षणा

वाक्य में किसी शब्द का मुख्य अर्थ न लेकर उसके लक्षणों से संबंधित अर्थ को लक्षणा कहते हैं। इस अर्थ को अपनाने का कारण कोई रूढ़ि या प्रयोजन हो सकता है। जैसे वह व्यक्ति 'राजा हरिश्चंद्र' नहीं है। 'लक्षणा' से इसका अर्थ सत्यवादी होता है। यही वाक्य का सही अर्थ होगा।

(3) व्यंजना

कभी-कभी अभिधा या लक्षणा से वाक्य का अपेक्षित अर्थ स्पष्ट नहीं होता। ऐसे में जिस शक्ति से अपेक्षित अर्थ तक पहुँचा जाता है, उसे व्यंजना कहते हैं। अर्थात जिस शक्ति से व्यंग्यार्थ पता चलता है उसे व्यंजना कहते हैं।

जैसे–

चलती चाकी देख के दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।

यहाँ 'चलती चक्की' को देखकर कबीर नहीं रोते, बल्कि इससे यह अर्थ निकलता है कि संसार चक्की के समान है, जिसके जन्म और मृत्यु रूपी दो पाटों के बीच आदमी पिसता रहता है। यही देखकर कबीर दुखी होते हैं। एक अन्य उदाहरण देखिए–

नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन।
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन।।

– कामायनी (प्रसाद)

यहाँ 'प्रधानता' शब्द पर व्यंग्यार्थ आश्रित है, जो वहाँ पंचतत्वों, जल, पवन, अग्नि (उल्का), पृथ्वी और आकाश के विद्यमान होने पर भी सब ओर जल ही जल की व्यंजना दर्शाता है। वहाँ सर्वत्र जल-तत्व का ही प्रलयंकारी बाहुल्य प्रकट हो रहा है।

2/CHD/ND/17-2000 BKS- MGITBP CHD.

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम
नई दिल्ली - 110066
दूरभाष : 011-26105211/44

Department of Correspondence Course
Central Hindi Directorate
Department of Higher Education
Ministry of Human Resource Development
West Block-7, Ramakrishnapuram
New Delhi - 110066
Phone: 011-26105211/44
Website: www.hindinideshalaya.nic.in

Printed at:- Govt. of India Text Books Press, Chandigarh-160002

सत्यमेव जयते

पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग
Department of Correspondence Courses
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
CENTRAL HINDI DIRECTORATE

एडवांस हिंदी डिप्लोमा पाठ्यक्रम
ADVANCE DIPLOMA COURSE IN HINDI

KIT-2 (द्वितीय प्रश्न पत्र) **Response Sheet - 6-11**

हिंदी काव्य **उत्तर पत्र - 6-11**

R.S. received by the { Student on : ..... / Directorate on : ..... }

प्राप्तांक Marks	6	...../ 20	7	...../ 20	8	...../ 20	9	...../ 20	10	...../ 20	11	...../ 20

PLEASE ALWAYS QUOTE YOUR ROLL NO. IN ALL CORRESPONDENCE WITH US

FILL UP THE FOLLOWING IN BLOCK LETTERS

Roll No. [ ][ ]

Kum/Smt/Shri .....

Postal Address .....

.....

.....

.....

RETURN THE RESPONSE SHEET TO

The Deputy Director

Department of Correspondence Courses, Central Hindi Directorate

West Block-7, Ramakrishnapuram, New Delhi - 110066 INDIA

PLEASE READ YOUR LESSON UNITS CAREFULLY BEFORE ANSWERING YOUR RESPONSE SHEETS

प्रश्न-1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

(1) हिंदी साहित्य का आरंभ किस विक्रमी संवत् से माना जाता है ? इसे कितने कालों में विभाजित किया गया है ? उनके नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(2) हिंदी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन का मुख्य आधार क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(3) भक्तिकाल की विभिन्न काव्यधाराओं के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(4) रीतिकाल के अधिकांश कवियों की रचनाएँ मुक्तक हैं या प्रबंध काव्य ? इन कवियों के काव्य की मुख्य भाषा क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(5) भक्तिकाल में कवियों ने किस विषय पर रचनाएँ कीं ? इस काल के चारों प्रतिनिधि कवियों के नाम और उनकी रचनाएँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(6) आधुनिक काल को गद्यकाल क्यों कहा जाता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(7) छायावादी कविता की प्रमुख विशेषता क्या है ? इस युग के कवियों को कविता लिखने की मूल प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई ?

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-2 निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

(1) रासो ग्रंथों की रचना ..... भाषा में हुई।

(2) वीरगाथा काल के कवि अपने राजाओं के साथ खुद भी ..... में भाग लेते थे।

(3) भक्तिकाल का समय संवत् ..... से ..... तक माना जाता है।

(4) सगुण भक्तकवि मानते हैं कि भगवान पापियों का नाश करते हैं और भक्तों का ..... करते हैं।

(5) रीतिकाल में ..... रस की कविताएँ लिखी गईं।

(6) आधुनिक युग के पहले चरण का नाम हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार .... के नाम पर रखा गया।

(7) ..... खड़ी बोली के विकास का युग भी कहा जाता है।

(8) जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा और .... छायावाद के चार स्तंभ हैं।

(9) प्रयोग वादी कविता में नए-नए ..... किए गए।

(10) कवियों ने समाज के शोषक वर्ग के प्रति घृणा का भाव और ..... वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाई।

(11) तारसप्तक के कवियों को ..... कवि कहा गया।

प्रश्न-3 कवियों और उनकी कृतियों का मिलान कीजिए।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	शिवा बावनी
महादेवी वर्मा	परमाल रासो
सुमित्रानंदन पंत	राम की शक्ति पूजा
केशवदास	प्रियप्रवास
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	दीपशिखा
जगनिक	लोकायतन
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	रामचंद्रिका
भूषण	अग्नदूत

प्रश्न-4 निम्नलिखित कृतियों के लेखकों के नाम लिखिए :–

(1) कामायनी .....

(2) बिहारी सतसई .....

(3) अंधायुग .....

(4) कुरुक्षेत्र .....

(5) भारत दुर्दशा .....

(6) यशोधरा .....

(7) पृथ्वीराज रासो .....

प्रश्न-5 वीरगाथा काल के साहित्य को किन दो भागों में विभाजित किया गया है ? संक्षेप में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-6 वीरगाथा काल की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-7 संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

चंदबरदाई

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अमीर खुसरो

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

विद्यापति

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

1. Improvements needed.

2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

पाठ-7

भक्ति काल और रीति काल

Response Sheet
उत्तर पत्र } 7

प्रश्न-1 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :—

(1) भक्ति काल की दो प्रमुख धाराओं और उनकी शाखाओं के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(2) भक्तिकाल में रामानंद और वल्लभाचार्य का क्या योगदान था ?

.....

.....

.....

.....

(3) निर्गुण और सगुण भक्त कवियों में प्रमुख अंतर क्या है ? वे भगवान के किस रूप की उपासना करते हैं ?

.....

.....

.....

(4) ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी शाखाओं में क्या समानता है ?

.....

.....

.....

(5) कबीर की खिचड़ी भाषा से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

1A- 6/CHD/ND/17

(6) मलिक मोहम्मद जायसी का साहित्यिक परिचय दीजिए।

.....

.....

.....

.....

(7) गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस और विनय पत्रिका की रचना किस भाषा में की ? उनकी अन्य प्रमुख रचनाओं के नाम भी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(8) सूर की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(9) 'रीति' शब्द से क्या अभिप्राय है ? रीति काल में किस प्रकार की रचनाएँ की गईं ?

.....

.....

.....

.....

(10) रीति काल की काव्य धाराओं के क्या नाम थे ? प्रत्येक धारा के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(11) 'नहिं पराग नहिं मधुर-मधु' किस कवि की पंक्ति है ? दोहे को पूरा कीजिए और बताइए कि यह किस प्रसंग में लिखा गया ?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-2 मिलान कीजिए ।

केशवदास	जगत विनोद
घनानंद	साहित्य लहरी
देव	शिवा बावनी
पद्माकर	सुजान सागर
भूषण	अखरावट
चिंतामणि	गीतावली
कबीरदास	काव्य प्रकाश
तुलसीदास	भाव विलास
सूरदास	रामचंद्रिका
जायसी	बीजक

प्रश्न-3 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1) ..... ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं ।

(2) जायसी ..... के प्रतिनिधि कवि हैं।

(3) गुरु नानक देव की प्रसिद्ध रचना ..... है।

(4) राम और कृष्ण दोनों ही ..... के अवतार थे।

(5) तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना ..... भाषा में की।

(6) बिहारी की ..... हिंदी साहित्य का अनुपम ग्रंथ है।

(7) केशवदास ..... काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।

(8) सुजान सागर के रचनाकार का नाम ..... है।

(9) राजा जयसिंह बिहारी की ..... को पहचानकर अपने दरबार में ले गए।

(10) कहीं-कहीं रीतिकालीन काव्य सरस और ..... को छूने वाला है।

प्रश्न-4 नीचे दिए गए वाक्यों में सही (✓) या गलत (×) का निशान लगाइए :—

(1) भक्ति काल में वीर रस की कविताएँ अधिक लिखी गईं। ( )

(2) जायसी ज्ञानमार्गी शाखा के कवि थे। ( )

(3) कबीर को जन्म लेते ही लहरतारा तालाब में छोड़ दिया गया था। ( )

(4) तुलसीदास ने 'विनय पत्रिका' ब्रज भाषा में लिखी। ( )

(5) सगुण भक्त कवि भगवान को साकार मानते थे। ( )

(6) रीतिबद्ध कवियों ने काव्य शास्त्र के सिद्धांतों का अनुसरण किया। ( )

(7) घनानंद रीतिबद्ध कवि हैं। ( )

(8) रीतिमुक्त काव्यधारा की प्रमुख विशेषता स्वच्छंदता है। ( )

(9) 'कविप्रिया' के रचनाकार बिहारी लाल हैं। ( )

प्रश्न-5 संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

प्रेममार्गी शाखा

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

रीतिबद्ध धारा

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

रीतिमुक्त धारा

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-6 निम्नलिखित कवियों और उनकी रचनाओं के बारे में संक्षिप्त परिचय दीजिए :–

तुलसीदास

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

कबीरदास

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

1. Improvements needed.

2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

पाठ-8

भारतेंदु युग और द्विवेदी युग काव्यधारा

Response Sheet
उत्तर पत्र } **8**

प्रश्न-1 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :–

(1) भारतेंदु युग के कवियों ने मुख्यत: किन विषयों पर काव्य रचना की ?

.....

.....

.....

(2) भारतेंदु युग के कवियों ने किन-किन काव्य शैलियों को अपनाया ?

.....

.....

.....

(3) भारतेंदु युग के दो प्रमुख कवियों और उनकी दो-दो काव्य कृतियों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

(4) बद्रीनारायण चौधरी की दो प्रमुख काव्य कृतियों के नाम लिखिए।

.....

.....

(5) हिंदी साहित्य में द्विवेदी जी को महत्वपूर्ण स्थान क्यों प्राप्त है ?

.....

.....

.....

(6) द्विवेदी युग में खड़ी बोली का क्या स्वरूप रहा ?

.....

.....

.....

(7) श्रीधर पाठक ने किन-किन अंग्रेजी पुस्तकों का किन-किन हिंदी नामों से अनुवाद किया ?

.....

.....

.....

(8) हरिऔध जी को उनके 'प्रिय प्रवास' पर हिंदी का कौन-सा पुरस्कार प्राप्त हुआ ?

.....

(9) हरिऔध जी ने किन-किन छंदों में काव्य रचना की ?

.....

.....

.....

(10) मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्र कवि क्यों माना जाता है ?

.....

.....

.....

(11) रामनरेश त्रिपाठी के चार काव्य ग्रंथों के नाम लिखिए।

.....

.....

प्रश्न-2 सही मिलान कीजिए ।

कवि	कृतियाँ
महावीर प्रसाद द्विवेदी	प्रेम माधुरी
भारतेंदु हरिश्चंद्र	प्रेमघन सर्वस्व
मैथिलीशरण गुप्त	प्रताप लहरी
हरिऔध	कश्मीर सुषमा
बद्रीनारायण चौधरी	प्रिय प्रवास
श्रीधर पाठक	भारत-भारती
प्रतापनारायण मिश्र	मिलन
रामनरेश त्रिपाठी	कान्यकुब्ज-अबला-विलाप

प्रश्न-3 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

(1) भारतेंदु युग को ..... काल भी कहा जाता है।

(2) भारतेंदु युगीन कवियों की प्रमुख भाषा ..... थी।

(3) भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ..... और ..... पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया।

(4) ..... 'अब्र' उपनाम से उर्दू में कविता लिखते थे।

(5) 'ब्राह्मण' पत्रिका के संपादक ..... थे।

(6) द्विवेदी जी ने सरस्वती पत्रिका का संपादन कार्य सन् ..... में शुरू किया।

(7) श्रीधर पाठक को सर्वाधिक सफलता ..... चित्रण से मिली।

(8) ..... खड़ी बोली में लिखा गया प्रथम महाकाव्य है।

(9) श्री ..... राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हैं।

प्रश्न-4 नीचे दिए गए वाक्यों में सही (✓) या गलत (×) का निशान लगाइए :–

(1) भारतेंदु युगीन कवियों ने जनमानस में राष्ट्रीयता का संचार किया। ( )

(2) प्रतापनारायण मिश्र ने खड़ी बोली में काव्य रचना की। ( )

(3) द्विवेदी युग को 'हजारीप्रसाद द्विवेदी' के नाम पर 'द्विवेदी युग' कहा गया। ( )

(4) खड़ी बोली को महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रयासों से व्यापक प्रतिष्ठा मिली। ( )

(5) गोल्डस्मिथ के 'डेजर्टेड विलेज' का अनुवाद 'ऊजड़ ग्राम' नाम से किया गया। ( )

प्रश्न-5 निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :–

भारतेंदु हरिश्चंद्र

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

महावीरप्रसाद द्विवेदी

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

मैथिलीशरण गुप्त

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

1. Improvements needed.

2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

पाठ-9

छायावाद और राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा

Response Sheet उत्तर पत्र **9**

प्रश्न-1 निम्नलिखित कवियों और उनकी रचनाओं का मिलान कीजिए :–

(1)	जयशंकर प्रसाद	नीरजा
(2)	सुमित्रानंदन पंत	अनामिका
(3)	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	कामायनी
(4)	महादेवी वर्मा	वीणा, पल्लव
(5)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	हम हैं विषपायी जनम के
(6)	सोहनलाल द्विवेदी	हिम किरीटिनी
(7)	माखनलाल चतुर्वेदी	युगाधार
(8)	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	कुरुक्षेत्र

प्रश्न-2 नीचे दिए गए वाक्यों में सही (✓) या गलत का निशान लगाइए :–

(1) छायावादी काव्य ब्रजभाषा में लिखा गया था। ( )

(2) छायावादी कविताओं में प्रकृति का सुंदर चित्रण हुआ है। ( )

(3) महादेवी वर्मा नाटककार और उपन्यासकार थीं। ( )

(4) प्रसाद ने कामायनी में सर्गों के नाम किसी न किसी मनोभाव पर रखे हैं। ( )

(5) पंत ने अपने काव्य में कोमलकांत पदावली का प्रयोग किया है। ( )

(6) छायावादी युग उपदेशात्मकता और इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया के रूप में सामने आया। ( )

(7) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा छायावाद का ही एक रूप थी। ( )

(8) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य में देशभक्ति की रचनाएँ लिखी गईं। ( )

(9) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा द्विवेदी युग की प्रतिक्रिया के रूप में सामने आई। ( )

(10) छायावादी युग के कवियों की रचनाओं में ओज गुण की प्रधानता दिखाई देती है। ( )

प्रश्न-3 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1) जयशंकर प्रसाद का प्रसिद्ध महाकाव्य ..... है।

(2) प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा और पंत ..... युग के प्रमुख कवि हैं।

(3) 'वह तोड़ती पत्थर' कविता ..... ने लिखी है।

(4) छायावादी युग की सफल रहस्यवादी कवयित्री ..... हैं।

(5) भारतीय जनजीवन में गांधीवाद का आगमन हिंदी काव्य में ..... वाद के आगमन के साथ हुआ।

(6) बालकृष्ण शर्मा नवीन कांग्रेस के भी सक्रिय सदस्य थे और स्वतंत्रता संग्राम में .... के अनुयायी भी थे।

(7) रामधारी सिंह दिनकर भारत सरकार में ..... थे।

(8) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ..... पहले लोकसभा और फिर राज्यसभा के सदस्य रहे।

प्रश्न-4 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

(1) 'कामायनी' महाकाव्य के विषय में अपने विचार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(2) "भाषा का परिष्कार छायावादी कवियों की महत्वपूर्ण देन है" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(3) "पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है।" स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(4) छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(5) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कवियों ने मुख्य रूप से किन विषयों पर अपनी रचनाएँ लिखीं ?

.....

.....

.....

.....

.....

(6) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के किन दो कवियों को विद्रोही और क्रांतिकारी कवि कहा गया है और क्यों ?

.....

.....

.....

.....

.....

(7) 'चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ' इसकी रचना किस कवि ने की है और इसमें फूल के माध्यम से क्या संदेश प्रेषित किया गया है ?

.....

.....

.....

.....

.....

(8) कवि 'दिनकर' ने किस-किस प्रकार के काव्यों की रचना की है ? उनका संक्षिप्त विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए ।

महादेवी वर्मा

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

माखनलाल चतुर्वेदी

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

1. Improvements needed.

2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

पाठ-10
छायावादोत्तर युग

Response Sheet
उत्तर पत्र } 10

प्रश्न-1 (1) कवियों और उनकी रचनाओं का मिलान कीजिए।

अज्ञेय	बाँस का पुल
नागार्जुन	हरी घास पर क्षण भर
मुक्तिबोध	प्यासी पथराई आँखें
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	चाँद का मुँह टेढ़ा है

(2) रचनाओं के सामने उनके कवियों के नाम लिखिए।

हँसो हँसो जल्दी हँसो .....

ज़मीन पक रही है .....

धरती .....

बुनी हुई रस्सी .....

प्रश्न-2 नीचे दिए गए वाक्यों में सही (✓) या गलत (×) का निशान लगाइए :–

(1) छायावादी विचारधारा की प्रतिक्रिया के रूप में प्रगतिवाद का उद्भव हुआ। ( )

(2) प्रगतिवाद ने साहित्य और जीवन को एक-दूसरे से दूर ले जाने का प्रयास किया। ( )

(3) प्रगतिवादी जीवन दर्शन मार्क्स की आर्थिक व्यवस्था पर आधारित है, अत: वह राजनीति से अलग नहीं है। ( )

(4) प्रयोगवाद को मार्क्सवाद या साम्यवाद का साहित्य-संस्करण कहा जा सकता है। ( )

(5) प्रयोगवादी कवियों ने अपने मन की कुंठा और अपनी हीन भावना का कथन विभिन्न प्रतीकों के द्वारा किया। ( )

(6) प्रयोगवादी कवि भावुकता के स्थान पर ठोस बौद्धिकता को स्वीकार करते हैं। ( )

(7) नयी कविता के कवियों का प्रयोगवाद और प्रगतिवाद से कोई संबंध नहीं है। ( )

प्रश्न-3 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1) ..... का कथन है कि मेरा साहित्य की ओर झुकाव शायद कुसंग के कारण अधिक है।

(2) 'पीढ़ियों पर धूप में' ..... कवि का कविता संग्रह है।

(3) भावों की अभिव्यक्ति को तीव्र करने के लिए विराम चिह्नों और आड़ी-तिरछी लकीरों का प्रयोग ..... कवियों ने किया है।

(4) 'अकाल में सारस' कविता पर केदारनाथ सिंह को ..... मिला।

(5) ..... ने अपने काव्य में अनेक भद्दे और बदरंग प्रतीक दिए हैं।

(6) आधुनिक काव्यधारा में ..... विमर्श और ..... विमर्श का समावेश है।

प्रश्न-4 (1) निम्नलिखित पंक्तियाँ किस कवि की हैं ? इनमें कवि क्या कहना चाहता है ?

चौड़ी सड़क गली पतली थी
दिन का समय घनी बदली थी
राम दास उस दिन उदास था
अंत समय आ गया पास था
उसे बता, यह दिया गया था
उसकी हत्या होगी।

.....

.....

.....

.....

.....

(2) निम्नलिखित पंक्तियाँ किस कवि की हैं ? इसमें क्या भावना व्यक्त की गई है ?

जी हाँ हुज़ूर मैं गीत बेचता हूँ।
जी माल देखिए, दाम बताऊँगा
बेकाम नहीं है, काम बताऊँगा।
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने।

.....

.....

.....

.....

.....

(3) यह कविता किसने लिखी है और इसमें क्या बताया गया है ?

जब-जब मैंने उसको देखा
लोहा देखा
लोहा जैसे ढलते देखा
गोली जैसे चलते देखा।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 प्रगतिवादी कविता की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-6 प्रयोगवादी कविता के विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-7 आधुनिक काव्यधारा में दलित विमर्श की क्या स्थिति है ? कुछ कवियों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-8 साहित्यिक परिचय दीजिए ।

अज्ञेय

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

नागार्जुन

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

मुक्तिबोध

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भवानी प्रसाद मिश्र

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

1. Improvements needed.

2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

प्रश्न-1 (1) अलंकार किसे कहते हैं ? इसके प्रकारों के विषय में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(2) अनुप्रास और यमक अलंकार की परिभाषा देते हुए उनके उदाहरण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(3) उपमा अलंकार किसे कहते हैं ? इसके प्रमुख तत्वों को उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(4) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण लिखिए :–

(क) चारुचंद्र की चंचल किरणें खेल रही थीं जल थल में।

(ख) नित्य ही नहाता है चंद्रमा क्षीर सागर में।

(ग) मुख मानो है चंद्रमा।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-2 (1) रस की परिभाषा देते हुए रस के प्रमुख अवयवों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(2) रस के कितने भेद हैं ? प्रत्येक रस का स्थायीभाव भी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(3) वीर और श्रृंगार रस की परिभाषा देते हुए उनके उदाहरण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(4) निम्नलिखित उदाहरण में प्रयुक्त रस का उसके स्थायीभाव सहित उल्लेख कीजिए।

है और की तो बात ही क्या गर्व मैं करता नहीं।
मामा तथा निज तात से भी समर में डरता नहीं।

.....

.....

.....

प्रश्न-3 (1) दोहा और सोरठा छंदों में क्या भेद है ? इनका एक-एक उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(2) निम्नलिखित पंक्तियों की मात्राओं की गणना कीजिए और छंद का नाम लिखिए।

रघु कुल रीति सदा चलि आइ।
प्राण जाय पर वचन न जाई।

.....

.....

.....

प्रश्न-4 (1) शब्दशक्ति की परिभाषा देते हुए उसके प्रकार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(2) व्यंजना शब्दशक्ति किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न-5 निम्नलिखित पंक्तियों का 'काव्य सौंदर्य' (रस, छंद अलंकार) स्पष्ट कीजिए :–

(क) मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै
जैसे उड़ि जहाज को पंछी
फिर जहाज पर आवै।

(ख) मुनि पद कलम बंदि दोउ भ्राता
चले लोक लोचन सुखदाता।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

Comments & Instructions

1. Improvements needed.

2. General assessment of the performance.

(Signature of the Evaluator)

6/CHD/ND/17-2000 BKS- MGITBP CHD.